मॉड्यूल – 8

प्रायोगिक मार्गदर्शन

शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

मॉड्यूल के विषय में

यह मॉड्यूल मार्गदर्शन की अवधारणाओं, सिद्धांतों तथा प्रणाली विज्ञान के प्रयोग से संबंधित है जिसके विषय में मॉड्यूल-1 में पहले ही चर्चा की जा चुकी है। जैसा कि आप जानते हैं कि विद्यालय में स्वस्थ वातावरण के निर्माण में एक मार्गदर्शक / परामर्शदाता के द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को बहुत महत्व दिया गया है। इस मॉड्यूल की इकाई-1 उन कारकों की व्याख्या करती है जो विद्यालय में एक सकारात्मक एवं स्वस्थ वातावरण का निर्माण करने तथा विद्यालय में व्यवहारात्मक एवं अन्य अनुशासनात्मक समस्याओं की रोकथाम करने एवं सामना करने में शिक्षक/परामर्शदाता की भूमिका को सुसाध्य बना सकते हैं। जैसा कि विद्यार्थियों पर अनुशासन लागू करने में परामर्श की कोई भूमिका नहीं होती है। इकाई-1 सम्पूर्ण शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ ही विद्यार्थियों में आत्म- अनुशासन की नींव डालने के लिए योजनाओं को प्रस्तुत करता है।
एक विशेष प्रशिक्षित परामर्शदाता विद्यार्थियों के अधिकतम शैक्षिक, कॅरियर तथा वैयक्तिक, सामाजिक विकास के लिए उनकी विकासात्मक तथा परिस्थितिजन्य आवश्यकताओं के आधार पर मार्गदर्शन के एक व्यवस्थित ढंग से सुनियोजित कार्यक्रम की योजना बनाता है एवं आयोजित करता है। इकाई-2 इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में विद्यार्थियों के विकास को सुसाध्य बनाने के लिए इनकी योजनाओं, कार्यप्रणाली तथा गतिविधियों के प्रतिदर्श/ उदाहरण की व्याख्या करती है।

तथापि, एक समग्र मार्गदर्शन कार्यक्रम में विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी जिनमें सामान्य, वंचित तथा शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक अशक्तता वाले विद्यार्थी शामिल हैं, उन सभी की विशिष्ट आवश्यकताओं का ध्यान रखना है। इकाई-3 के तीन भागों में इन तीनों समूहों में से प्रत्येक को मार्गदर्शन एवं परामर्श देने के लिए मार्गदर्शन की आवश्यकताओं एवं रणनीतियों के बारे में चर्चा की गई है।

इकाई- 4 विद्यालयी शिक्षा के एक आवश्यक भाग के रूप में मूल्यांकन की पहचान को स्थापित करने के लिए मार्गदर्शन गतिविधियों के मूल्यांकन का महत्व प्रस्तुत करती है। मार्गदर्शन के उपभोक्ताओं जैसे – विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रशासकों तथा अभिभावकों द्वारा उपलब्ध कराए गए फीडबैक कार्यक्रम के सतत् सुधार तथा विद्यालयी व्यवस्था में इसकी प्रभाविकता के प्रतिष्ठापन में सहायता कर सकते हैं।

इस मॉड्यूल में भी पहले मॉड्यूलों की ही तरह प्रत्येक इकाई में आत्म- निरीक्षण अभ्यास एवं गतिविधियाँ दी गई हैं। इकाई के विषय में एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत करने के लिए इसके अंत में सारांश दिया गया है। संदर्भ पुस्तकें तथा अतिरिक्त पाठ्य- सामग्री पाठकों को सूचना के अतिरिक्त स्रोतों को उपलब्ध कराती हैं।

हिंदी अनुवाद

राघवेन्द्र पति त्रिपाठी

अध्यापक परामर्शदाता

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

सदस्य (समीक्षा / संपादन कार्यशाला)

हेमलता तिवारी, *प्रवक्ता*, एस.सी.ई.आर.टी., देहरादून

राघवेन्द्र पति त्रिपाठी, *अध्यापक परामर्शदाता*, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

शैलजा गौड़, *प्राथमिक शिक्षक*, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, धनपऊ, देहरादून

कुमार सच्चिदानन्द, *सहायक शिक्षक*, राजकीयकृत मध्य विद्यालय जवाहर विद्यापीठ, जयनगर, मधुबनी, बिहार

सदस्य-समन्वयक

प्रभात कुमार मिश्र, *सहायक प्रोफेसर*, शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

विषय-सूची

मॉड्यूल के विषय में

यूनिट – 1 आत्म-अनुशासन को प्रोत्साहन देने हेतु मार्गदर्शन

यूनिट – 2 एक मार्गदर्शन कार्यक्रम की योजना बनाना एवं आयोजित करना

यूनिट – 3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

भाग-1 मानसिक रूप से विकृत/बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

भाग-2 अधिगम अशक्तता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

भाग-3 शारीरिक अशक्तता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

यूनिट – 4 मार्गदर्शन एवं परामर्श में मूल्यांकन

1

आत्म – अनुशासन को प्रोत्साहन देने हेतु मार्गदर्शन

1.0 परिचय

1.1 उद्देश्य

1.2 अनुशासन क्या है ?

1.3 अनुशासन आवश्यक क्यों ?

1.3.1 आन्तरिक और बाह्य अनुशासन
1.3.2 आत्म-अनुशासन का महत्व

1.4 अनुशासनहीनता के कारण

1.5 अनुशासन कायम रखने की तकनीकें

1.5.1 प्रबलन
1.5.1.1 पुरस्कारों के प्रकार
1.5.2 क्रोध पर नियंत्रण
1.5.3 योग और ध्यान
1.5.4 समकक्ष साथियों से मदद

1.6 आत्म – प्रबन्ध कौशल

1.6.1 आत्म – अनुदेशन
1.6.2 आत्म – प्रकटीकरण
1.6.3 आत्म – आंकड़े अथवा डायरी प्रविष्टि

1.7 अनुशासन को सुधारने हेतु परामर्श उपागम

1.8 सारांश

आत्म – मूल्यांकन अभ्यास
आत्म – मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु
आत्म – निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिंदु
संदर्भ पुस्तकें
पठनीय पुस्तकें
वेबसाइट्स

परिचय

मॉड्यूल – 1 में आपने कक्षा में सामूहिक रूप में प्रयोग किए गए मार्गदर्शन तकनीकों के विषय में सीखा/पढ़ा है। मार्गदर्शन और शैक्षिक क्रियाकलापों को बच्चों के साथ प्रभावशाली ढंग से करने के लिए आपको उनके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है। विद्यार्थियों के साथ अन्योन्यक्रिया में आपने कक्षा में और बाहर भी अनियमितता, लापरवाही और व्यावहारिक समस्याओं का सामना किया होगा जो शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया में व्यवधान उत्पन्न करते हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु आपने कुछ रणनीतियों का प्रयोग किया होगा जो कि हमेशा पूर्णतया प्रभावशाली नहीं थीं। शिक्षकगण प्राय: इन अनुशासनहींनता की समस्याओं की आवृति को न्यूनतम करने एवं इनका प्रभावशाली ढंग से सामना करने के तरीकों को जानने के विषय में इच्छुक रहते हैं। विद्यार्थी के दुर्व्यवहार के सुधार हेतु अनुशासनहींनता में लिप्त विद्यार्थियों को परामर्शदाता अथवा शिक्षक परामर्शदाता के पास भेजा जाता है।

यह इकाई आपको अनुशासनहींनता का अर्थ, महत्व और कारणों के विषय में जानकारी उपलब्ध कराने पर आधारित है। यह इकाई एक शिक्षक या परामर्शदाता के रूप में आपको अनुशासनहींनता की रोकथाम के तरीकों को सीखने में सहायता देगी। यह एक प्रसिद्ध कहावत है कि अनुशासनहींनता की समस्याओं को नियंत्रित करने से ज्यादा अच्छा अनुशासनहींनता की रोकथाम करना है। अधिगम प्रक्रिया में आत्म – अनुशासन और आरोपित अनुशासन के बीच अन्तर को समझना बहुत आवश्यक है। विद्यार्थियों में आत्म – अनुशासन शिक्षक अथवा विद्यार्थी की देखरेख में बनाई गई कुछ स्व-प्रबोधन (Monitor) और स्व – नियमित करने वाली योजनाओं के प्रयोग से उनके मन में आरोपित किया जा सकता है।

1.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित बिन्दुओं को समझने में समर्थ होंगे –

- अनुशासन के अर्थ एवं महत्व की व्याख्या करने में।
- कक्षा में और बाहर अनुशासन-संबंधी समस्याओं एवं इसके कारणों की पहचान करने में।
- आत्म-अनुशासन और बाह्य रूप से आरोपित अनुशासन के बीच भेद करने में।
- आत्म – अनुशासन के महत्व के विचार-विमर्श में।
- अनुशासनहींनता की रोकथाम और आत्म – अनुशासन के पालन एवं आरोपण हेतु योजनाओं के प्रयोग में।

1.2 अनुशासन क्या है ?

अनुशासन से तात्पर्य मापदण्डों एवं नियमों के प्रति निष्ठा रखना और उन निर्धारित मान्यताओं को बिना प्रश्न उठाए या चुनौती दिए पालन करना। विद्यालय परिस्थिति में भी इसका तात्पर्य विद्यालय के नियमों का पालन करना, अधिकारियों के प्रति आज्ञाकारी होना, शिक्षकों के आदेशों का पालन करना और कक्षा एवं विद्यालय में व्यवस्था को कायम रखना है। जो लोग मापदण्डों एवं नियमों को तोड़ते हैं, वे सामान्य तौर पर विद्यालयों एवं घरों

में दण्डित किए जाते हैं जो उनके लिए दर्द, भय, चोट आदि का कारण बनता है। प्राचीन काल से ही कानून तोड़ने वालों अथवा अपराधियों को अपराध करने में उनकी इच्छाशक्ति और मनोबल को कमजोर करने हेतु शारीरिक दण्ड दिया जाता रहा है। बच्चों को अनुशासित करने से सम्बन्धित मुद्दे ताकि वे समाज के द्वारा निर्धारित मापदण्डों एवं नियमों का स्वेच्छा से पालन करें, ये मुद्दे शिक्षकों एवं अभिभावकों को प्राय: किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर देते हैं। अपने वास्तविक भाव में अनुशासन प्राकृतिक स्वाभाविक रूप में आत्म-निग्रह और आत्म-नियंत्रण की एक प्रक्रिया है जो एक व्यवस्था में विकास को समर्थन एवं प्रोत्साहन देती है चाहे यह एक शैक्षिक व्यवस्था हो अथवा कोई अन्य व्यवस्था।

1.3 अनुशासन आवश्यक क्यों ?

एक शिक्षक के रूप में आप जानते हैं कि अधिगम एक संरचनाबद्ध परिवेश में आगे बढ़ता है और यह सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थी अपने कार्य में बाह्य स्रोतों से अनवरत पुरस्कार या दण्ड के बिना ही किंचित् गंभीर एवं स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए अनुशासित और आकृष्ट हैं। समाजीकरण के अभिकर्ता के रूप में शिक्षक एवं अभिभावक विद्यार्थियों से अनुशासित एवं परिपक्व तथा जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं परन्तु कभी-कभी वे विद्यार्थियों के व्यवहार-प्रबन्धन में मुश्किल चुनौतियों का सामना करते हैं। इस तरह के प्रश्न की कितनी स्वतंत्रता दी जानी चाहिए? किस रूप में सीमितताएँ या प्रतिबन्ध आरोपित होने चाहिए ? बच्चों में किस तरह से सही और गलत के भाव स्थापित करना है, यह प्राय: वयस्कों के दिमाग में उत्पन्न होता है।

कुछ सामान्य समस्याओं के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं जिनका शिक्षक सामान्य तौर पर सामना करते हैं और इन परिस्थितियों से निपटने के लिए उनके द्वारा प्रयुक्त कुछ दण्डात्मक योजनाओं का वर्णन किया जा रहा है।

निम्नलिखित स्थितियों को पढ़िए:

नितीश दिए हुए कार्य पर ध्यान नहीं देता है। यदि वह करता है तो बेढ़ंगे तरीके से करता है। वह अन्य विद्यार्थियों से लड़ाई करता है और शिक्षण के समय अपनी शरारतों से पूरी कक्षा को अस्त-व्यस्त कर देता है। अपने इस व्यवहार के कारण वह प्राय: शिक्षकों द्वारा पीटा जाता है और बहुत बार उसे कक्षा से बाहर खड़ा कर दिया जाता है।

दिनेश तीन महीने से कक्षा में देरी से आता है, गृह कार्य की कॉपी नहीं लाता है और कक्षा में अन्य विद्यार्थियों के साथ लड़ाई-झगड़ा करता रहता है। उसके दुर्व्यवहार की रिपोर्ट प्राय: उसके माता-पिता के पास भेजी जाती है।

कक्षा VIII के विद्यार्थियों ने अपना गणित का पीरियड समाप्त किया है। उन्हें अगले पीरियड में प्रयोग कार्य के लिए विज्ञान प्रयोगशाला में जाने की आवश्यकता है। वे जाने में बहुत समय लेते हैं और इस समय शोर करते हैं तथा एक दूसरे को चिढ़ाने, धक्का देने, लड़ने, धमकाने आदि में लिप्त रहते हैं। इन सभी बच्चों को उठक-बैठक करने या मुर्गा बनने के लिए कहा जाता है।

जैसा कि ऊपर की स्थितियों में देखा गया है कि शिक्षक प्राय: शारीरिक दण्ड का सहारा लेते हैं। बच्चों, अभिभावकों, शिक्षकों तथा मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण एशिया के देशों जैसे भारत, बाँग्लादेश, भूटान,

नेपाल, मालदीव आदि में विद्यालयों में शारीरिक दण्ड देना एक सामान्य प्रथा है। यह केवल बच्चों के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास को ही नहीं रोकता है बल्कि बच्चों के विद्यालय छोड़ने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है (UNICEF, 2001)। (निम्नलिखित को ध्यानपूर्वक पढ़िए।)

विद्यालयों में शारीरिक दण्ड

पूरे विश्व की तरह दक्षिण एशिया में प्रत्येक दिन विद्यालयों में अनुशासन के नाम पर बच्चों की पिटाई की जाती है। शारीरिक दण्ड से अभिप्राय शरीर पर दण्ड देने से है। इस प्रकार की हिंसा एक उत्तेजित शिक्षक, अभिभावक, वयस्क या एक बड़े बच्चे की एक साधारण आवेगी प्रतिक्रिया या जानबूझ कर किए गए कार्य का दण्ड हो सकती है। इससे मतलब नहीं है कि हिंसा का स्वरूप क्या है, यह हमेशा बच्चों के आधारभूत मानव अधिकारों का उल्लंघन है (हैमरबर्ग, टी.एन्ड नेवेल, पी. 2001)। यद्यपि ज्यादातर देशों ने विद्यालयों में शारीरिक दण्ड के सम्बन्ध में नियम एवं मापदण्ड बनाए/निर्धारित किए हैं परन्तु उन कानूनों को लागू करना प्रायः कमजोर होता है। विद्यालयों में बच्चों को दण्ड देने के कुछ सामान्य तरीके हैं – बच्चों को बेंच पर खड़ा करना, हाथ ऊपर करना, डंडे से मारना और चुभोना, पूरा दिन धूप में खड़े रखना, तिरस्कृत करना, गाली देना और अपमानित करना या कुछ दिनों के लिए उन्हें निलम्बित करना, उपहास उड़ाना, लंच या छुट्टी के समय उन्हें रोक लेना, उन्हें एक अँधेरे कमरे या भण्डार-कक्ष में बंद करना, उन्हें फ़र्श पर बैठाना, सफ़ाई करवाना, खेलों में भाग लेने, पाठ्य-सहगामी क्रियाकलापों आदि की अनुमति न देना। चरमसीमा के मामलों में यह बच्चों को यातना देने, बाल यौन दुराचार, बिजली का करंट लगाने से लेकर वह सभी कार्य जिसमें तिरस्कार, अपमान, शारीरिक एवं मानसिक चोट तथा मृत्यु तक के रूप में हो सकती है। आधारभूत अधिकार के अलावा बच्चे की पिटाई करने से दर्द, चोट, अपमान, चिन्ता, क्रोध और बदला लेने की भावना उत्पन्न होती है जिसका दीर्घ अवधि तक मनोवैज्ञानिक प्रभाव रहता है। विभिन्न अध्ययनों से यह भी पता चला है कि जीवन के शुरुआती वर्षों में बाल दुराचार एवं शारीरिक हिंसा बच्चों को हिंसक बनने में योगदान देते हैं (कार एंड विले, 1997)। शारीरिक दुराचार बच्चे की योग्यता के भाव को कम करता है और निराशा के प्रति उनकी असुरक्षा की भावना को बढ़ाता है (सुइ डी., सुइ डी. डब्ल्यू. एंड सुइ एस. 2000)। लगातार हिंसा से प्रभावित बच्चे अपने एवं दूसरों के प्रति खराब सम्प्रेषण, उत्तेजक व्यवहार जैसे दुष्क्रियात्मक व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। इसके अलावा यह अपराध की भावना, उल्लंघन, अपने ऊपर नियंत्रण न रख पाना और निम्न स्तरीय आत्म-सम्मान को उत्पन्न करते हैं (एस सी एफ – स्वीडन एंड इपीओसीएच, 1993)। शारीरिक दण्ड के मुद्दों को उठाने से पहले हिंसा के मूल कारणों को अवश्य उठाया जाना चाहिए और बच्चों के अनुकूल, बच्चों पर आधारित शिक्षण-अधिगम को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। –यूनिसेफ, 2001, दक्षिण एशिया के विद्यालयों में शारीरिक दण्ड।

विद्यार्थियों के दुर्व्यवहार एवं अनुशासन से संबंधित अन्य समस्याओं के लिए उपयुक्त निरोधक एवं निदानात्मक उपायों की योजना बनाने तथा आयोजित करने के क्रम में अनुशासन के वास्तविक अर्थ एवं उद्देश्य तथा इस प्रकार की समस्याओं के कारणों को समझना नितान्त आवश्यक है।

हमें सर्वप्रथम दो प्रकार के अनुशासन-बाह्य और आंतरिक के बीच अन्तर स्पष्ट करना चाहिए।

1.3.1 आन्तरिक और बाह्य अनुशासन

बाह्य और आन्तरिक अनुशासन क्या है ? बाह्य अनुशासन बाह्य अधिकारी या शिक्षकों के द्वारा इच्छित व्यवहार को प्राप्त करने हेतु दण्ड/पुरस्कार के प्रयोग के द्वारा आरोपित किया जाता है। आन्तरिक अनुशासन के मामले में यह व्यक्ति के द्वारा अपने व्यवहार को नियमित करने के लिए अपने ऊपर संयम के द्वारा किया जाता है।

आप में से कुछ लोग बाह्य रूप से आरोपित प्रथाओं जैसे बच्चे को कक्षा से बाहर खड़ा रखना या चिल्लाने का प्रयोग कर रहे होगें। लेकिन हममें से बहुत से लोगों ने यह पता लगाकर कि बच्चा उस तरीके से व्यवहार क्यों कर रहा था उसके मन में आन्तरिक अनुशासन बैठाने का प्रयास किया होगा और सामाजिक रूप से इच्छित व्यवहार करने हेतु बच्चे को प्रेरित करने के लिए उस कारण को बताने का प्रयास किया होगा।

सामान्यत: समाजीकरण की प्रक्रिया में बच्चे सही या गलत के विषय में ज्ञान अर्जित करते हैं । मनोवैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि जब बच्चे परिपक्व होते हैं तब इसमें परिवर्तन आता है। शुरुआती वर्षों में संयम की योग्यता अभिभावक/शिक्षक/बड़े भाई-बहन के द्वारा निर्धारित सीमाओं और उनके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन एवं ज्ञान पर मुख्य रूप से आधारित होती है। कुछ सिद्धांतवादी विश्वास करते हैं कि सामान्य रूप से बच्चा पुरस्कार और दण्ड के प्रति प्रतिक्रिया करता है और सहमति प्राप्त एवं पुरस्कृत व्यवहारों को अपनाता है तथा दण्डित व्यवहारों का परिहार करता है। तथापि एक अन्य मत के अनुसार बच्चा/बच्ची अंतर्दृष्टि एवं तर्कशक्ति का प्रयोग करता/करती है जब वह अर्जित योग्यता से अनुशासन के नियमों को समझकर उन स्थितियों में प्रतिक्रिया करने में परिपक्व हो जाता/जाती है। इसमें अनुशासन कायम रखने के लिए कभी-कभी स्व-उत्पन्न कारणों के आधार पर (आंतरिक अनुशासन) और कभी दूसरों के द्वारा निर्धारित नियमों एवं मापदण्डों के आधार पर (बाह्य अनुशासन) को मानने की आवश्यकता को समझने से होता है। इसलिए महत्वपूर्ण व्यक्तियों को बच्चों को उनके विचारों को व्यक्त करने हेतु अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता होती है और उन मुद्दों पर उनके निर्णय लेना होता है जो उनसे एवं उनके आस-पास रहने वालों से संबंधित हैं।

कौन सी प्रथा बेहतर प्रथा है ?

बहुतसे मामलों में दण्ड का प्रयोग आज भी किया जाता है। विद्यालय के नियमों को न मानने वाले विद्यार्थियों को हिंसक गतिविधियों में लिप्त होने हेतु या दुर्व्यवहार हेतु उनकी शक्ति एवं मनोबल को कमजोर करने के लिए शारीरिक दण्ड दिया जाता है। यह उपागम दिमाग की क्षमता को अनुशासित करने में मदद नहीं करता है बल्कि बच्चों में भय और क्रोध की स्थापना कर सकता है। इसलिए इस प्रकार से अनुशासित करने में अस्थायी प्रभाव रहने की संभावना है। उदाहरण हेतु कक्षा से बाहर एक बच्चा अपने मूल अवांछनीय व्यवहार से अलग व्यवहार कर सकता है। वह बाहरी रूप से अनुशासित एवं शिष्ट प्रतीत हो सकता है लेकिन जहाँ तक उसकी अभिवृत्ति एवं व्यवहार का संबंध है, वह हमेशा अपरिवर्तित रह सकता है।

दूसरे उपागम में व्यक्ति के विषय में जानकारी अर्जित करना और उसके गलत व्यवहार के कारण का पता लगाकर उसके गलत व्यवहार को सुधारना है और उसके पश्चात् उसके व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए उसे समर्थ बनाना है ताकि अनुशासनहींनता की आवृत्ति न हो। यह दिमाग, हृदय और कार्य का अनुशासन है जो आंतरिक अनुशासन या आत्म-अनुशासन की तरफ ले जा सकता है।

1.3.2 आत्म-अनुशासन का महत्व

आत्म-अनुशासन सही और गलत की अवधारणा को अर्जित करने की एक क्रमिक प्रक्रिया है। आपने यह अवलोकन किया होगा कि एक कम उम्र का बच्चा बाह्य अनुशासन के प्रति सही प्रतिक्रिया करता है। एक बच्चा/बच्ची यह समझता और स्वीकार करता/करती है कि जब वह स्वैच्छिक रूप से नियमों को तोड़ता/तोड़ती है तब उसका परिणाम सामने आता है। क्रमशः वह व्यवहार के अनुमोदित तरीकों को समझना प्रारंभ कर देता/देती है और अपनी सीमाएँ निर्धारित कर लेता/लेती है। अनुशासन कायम रखने के लिए तर्क या कारणों के विषय में जानने का अवसर देने पर बच्चे भी अपने पर नियंत्रण और संयम लगाना सीख लेते हैं। इस प्रकार आत्म-अनुशासन सामाजिक रूप से स्वीकृत एवं इच्छित तरीके से कार्य या संयम रखने की योग्यता है। एक बच्चा आत्म-अनुशासित हो सकता/ती है जब वह निम्नलिखित तकनीकों का प्रयोग करता/ती है :

- आत्म-संयम की आवश्यकता को समझता/ती है।
- एक विशेष तरीके से व्यवहार करने के विषय में स्पष्टीकरण देने में सक्षम है।
- नियम को बनाने में भी सहभागिता करता/ती है।
- पुरस्कार या तुष्टीकरण को स्थगित या विलम्ब करने में सक्षम है।

जबकि आप समझ चुके हैं कि अनुशासन क्या है, यह आवश्यक क्यों है और बाह्य एवं आन्तरिक या आत्म-अनुशासन के बीच क्या अन्तर है, अब हम यह चर्चा करेंगे कि अनुशासनात्मक समस्याओं का सामना करते समय इस उपागम का प्रयोग किस प्रकार से किया जा सकता है।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास -1

निम्नलिखित कथनों में सही और गलत बताइए – सही ग़लत

1. अनुशासन केवल बाह्य अधिकारी या महत्वपूर्ण वयस्कों द्वारा ही आरोपित किया जा सकता है तथा स्वयं अर्जित नहीं किया जा सकता है।
2. एक बच्चे में आत्म-अनुशासन का होना तभी कहा जा सकता है जब वह तुष्टीकरण में विलम्ब कर सकता/ती है।
3. शारीरिक दण्ड आवश्यक होता है और जल्दी या देरी से उसका प्रयोग होना है।
4. अनुशासन की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता होनी चाहिए।
5. एक वयस्क की तुलना में एक बच्चे को अनुशासित करना अधिक आसान है।

1.4 अनुशासनहींनता के कारण

बच्चों के दुर्व्यवहार के लिए उत्तरदायी विविध कारणों को निम्नलिखित विस्तृत श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

घर या पारिवारिक कारक – घर का दूषित वातावरण जिसमें गाली-गलौज, माता-पिता के बीच लड़ाई जो बच्चों के लिए गलत प्रतिमान स्थापित करता है, घर पर व्यवस्थित दिनचर्या, नियमितता या देखभाल में कमी, अभिभावकों द्वारा बच्चों को दिए जाने वाले मूल्यवान समय की कमी, अत्यधिक प्यार-दुलार या बच्चों की माँगों को सदैव पूरा करना आदि बच्चों में अनुशासनहींनता उत्पन्न कर सकते हैं।

विद्यालय का दृष्टिकोण, शिक्षक का व्यवहार, आदि – विद्यालय के कार्यक्रम, प्रथाएँ, नियम एवं मापदण्ड विद्यार्थियों की आवश्यकताओं से कितना तालमेल रखते हैं तथा उनके विकास एवं समग्र उन्नति हेतु कितना अवसर उपलब्ध करा रहे हैं। इसके अलावा, शिक्षक का व्यवहार जिसमें कठोर या अधिकारपूर्ण लहजा, कक्षा को सँभालने में अक्षमता, व्यवहार प्रबन्धन हेतु दण्डात्मक तरीकों का प्रयोग, खराब शिक्षण तकनीकें, निम्न स्तरीय प्रेरणा, आदि विद्यालयों से बच्चों की लापरवाही, अभिरुचि में कमी एवं अनुशासनहींनता के लिए जवाबदेह कारण पाए गए हैं।

बच्चे का व्यक्तित्व – कभी-कभी बच्चे में स्वयं की कमी अनुशासन की समस्याओं का कारण हो सकती है, जैसे – एक बच्चे का उत्तेजक व्यवहार, अतिक्रियाशीलता को यदि सही ढंग से नहीं सँभाला जाता है तो अनुशासन की समस्या हो सकती है।

दुर्व्यवहार के कारणों की पहचान करने के पश्चात् हम अनुशासन को कायम रखने के लिए इस सूचना का इस्तेमाल विभिन्न तकनीकों में कर सकते हैं। यदि अनुशासनहींनता के कारणों को हटा दिया जाता है तो अनुशासन का तार्किक परिणाम हो सकता है।

क्रियाकलाप – 1

निम्नलिखित तीन परिस्थितियों को पढ़िए और देखिए कि क्या आप समस्या के मूल कारण का पता लगा सकते हैं।

पीटर को उसके पड़ोसी ने मारा और प्रत्युत्तर में पीटर ने भी अपने पड़ोसी को मारा। पड़ोसी बुरी तरह से घायल हो गया। पीटर दौड़कर घर आया और अपने पिता को बताया। पीटर के पिता ने केवल उसकी बात सुनी और शान्त रहे। कुछ दिन के पश्चात् पीटर विद्यालय में इस प्रकार की घटना में शामिल हुआ और वह इसके लिए बुरी तरह से दण्डित किया गया।

राधा प्रत्येक विषय में एक अच्छी छात्रा थी। वह इसके लिए प्राय: प्रशंसित एवं पुरस्कृत होती थी। अब जबकि राधा को एक होनहार लड़की के रूप में स्वीकार कर लिया गया है, वह अब पुरस्कार एवं प्रशंसा नहीं प्राप्त कर रही है। उसकी एक शिक्षिका मीरा उसकी प्रत्येक छोटी गलती के लिए उसे डाँटती है। राधा की रुचि समाप्त होने .0 अन्य अध्यापकों के अनुसार वह उनकी कक्षा के सबसे अच्छे विद्यार्थियों में से एक है।

कक्षा VIII के विद्यार्थियों को उनके कक्षा अध्यापक के द्वारा फुटबॉल के मैदान में जाने को कहा जाता है। अध्यापक किसी तरह का निर्देश नहीं देता है कि वे वहाँ क्या करेंगे, क्या खेल खेलेंगे और कौन उनका निरीक्षण करेगा। बच्चे खेल के मैदान में जाते हैं, कुछ खेलते हैं और शेष बच्चे लड़ाई करते, चिढ़ाते और दूसरों को परेशान करते देखे जाते हैं।

- ------------ ---------------- -------------- ----------------
- ------------ ---------------- -------------- ----------------
- ------------ ---------------- -------------- ----------------
- ------------ ---------------- -------------- ----------------

उपर्युक्त उदाहरणों के लिए क्या आप सुनिश्चित कर सकते हैं कि दुर्व्यवहार का संभावित कारण क्या हो सकता है ? पहली विवादित परिस्थिति में घर एवं विद्यालय के नियम बच्चों के दिमाग में दुविधा उत्पन्न करने के संभावित कारण हो सकते हैं। दूसरी परिस्थिति में, शिक्षक की अभिवृत्ति विसामान्य व्यवहार का सबसे प्रबल कारण हो सकती है, तीसरी परिस्थिति में, नियमों की स्पष्टता में कमी शायद अनुशासनहींनता को जन्म दे रही है। अब हमें पता लगाना है कि आप अपनी कक्षा में अनुशासन कायम करने के लिए क्या कर सकते हैं।

1.5 अनुशासन कायम रखने की तकनीकें

एक शिक्षक परामर्शदाता के रूप में आप अनुशासनहींनता को रोकने एवं अनुशासन को कायम रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। अनुशासनहींनता की विविध समस्याओं के समाधान हेतु परिस्थिति/ व्यवहार की पहचान एवं विश्लेषण करना प्रमुख होता है। तथापि स्वस्थ विद्यालयी वातावरण एवं शिक्षण अधिगम विद्यालय में अनुशासनहींनता की रोकथाम में एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है।

निम्नलिखित क्या करना चाहिए एवं क्या नहीं करना चाहिए, कथन शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं के लिए सहायक हो सकते हैं।

- प्रत्येक बच्चे के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना, बिना शर्त स्वीकार करना और व्यक्तित्व का सम्मान करना।
- व्यंग्य/कटाक्ष का प्रयोग न करना बल्कि प्रशंसा एवं प्रोत्साहन का प्रयोग करना।
- गुस्सा न करना और विचार-विमर्श के लिए प्रोत्साहित करना तथा निर्णयों का सम्मान करना।
- लज्जित न करना या विद्यार्थियों को उनके मित्रों के सामने शर्मिन्दा न करना, किसी बच्चे की पृष्ठभूमि या उपलब्धियों से अलग हटकर प्रत्येक बच्चे को सम्मान देना।
- अनुकूल, निष्पक्ष और दृढ़ रहना।
- विद्यार्थियों को लगातार धमकी न देना बल्कि नियमों का पालन करने की आवश्यकता के विषय में बताना।
- अधिगम हेतु पर्याप्त सामग्री की योजना बनाना और अधिगम तथा अन्य दूसरे क्रियाकलाप के लिए तैयार रहना।
- छोटी-छोटी समस्याओं को बड़े अधिकारियों को न बताना बल्कि उन्हें अपने स्तर पर समझना और आपस में उनका समाधान करने की कोशिश करना।
- बच्चों के साथ अच्छे संबंध विकसित करने के लिए पहल करना।
- प्रत्येक बच्चे को स्वीकार करना परन्तु उसके बुरे व्यवहार को नहीं।
- सम्प्रेषण के समय संवाद में सुस्पष्टता रखना।

क्रियाकलाप – 2

श्रीमान् ठाकुर कक्षा – VIII को इतिहास पढ़ाते हैं। वह हमेशा बिना तैयारी के आते हैं और विद्यार्थियों को बिना कुछ दिए अपनी कक्षा को 10-15 मिनट पहले समाप्त कर देते हैं। विद्यार्थी आपस में बातचीत करना और दुर्व्यवहार करना शुरू कर देते हैं। श्रीमान् ठाकुर हमेशा की तरह अपना धैर्य खो देते हैं और विद्यार्थियों पर चिल्लाते हैं। उद्दंड बच्चों के समूह में से वे दो-तीन बच्चों को पकड़ कर प्रधानाचार्य के पास ले जाते हैं। यह परिस्थिति लगातार दोहराई जाती है परन्तु विद्यार्थियों का दुर्व्यवहार प्रतिदिन बढ़ रहा है। क्या आप उन तथ्यों को पहचान सकते हैं जो श्रीमान् ठाकुर के द्वारा प्रयोग किए जा रहे हैं और जिसे उन्हें नहीं करना चाहिए।

--------- --------- --------- --------- --------- ---------

--------- --------- --------- --------- --------- ---------

--------- --------- --------- --------- --------- ---------

हाँ, आप सही हैं ! उन कई न करने योग्य कार्यों को जिनका आपने ऊपर उल्लेख किया है, श्रीमान् ठाकुर उनमें से अधिकतर कार्यों को कर रहे हैं। इसका परिणाम यह है कि श्रीमान् ठाकुर अनुशासन कायम करने में सक्षम नहीं हैं।

अब हमें आगे अनुशासन कायम रखने हेतु "नियम" की अवधारणा को समझना है। हम प्राय: नियम बनाते हैं परन्तु इनका पालन कभी-कभी ही होता है। शिक्षकों को प्राय: यह कहते हुए सुना जा सकता है 'तुम नियमों का पालन नहीं कर रहे हो' या 'तुमने नियम तोड़ दिया है'। शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ चिन्तन और विचार विमर्श करना चाहिए कि नियम क्यों बनाए जाते हैं ? नियमों को लागू करने से पहले निम्नलिखित बातों को दिमाग में रखा जा सकता है।

1. नियम बनाने के लिए उसके कारणों की व्याख्या करें ताकि विद्यार्थी जानें कि ये नियम उनको किस प्रकार से लाभ पहुँचाएंगे।
2. नियम बनाने में विद्यार्थियों की सहभागिता लें।
3. विद्यालय सत्र के प्रारम्भ में सभी के समक्ष नियमों की व्याख्या करें।
4. स्पष्ट नियम बनाएं। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों से प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कहें 'शान्त रहना महत्वपूर्ण क्यों है', इस प्रश्न पर परिचर्चा से शान्त रहने की आवश्यकता को समझने में सहायता मिलेगी।
5. आवश्यक होने पर नियमों को दोहराएं।
6. संक्रमण काल जैसे एक क्रियाकलाप से दूसरे क्रियाकलाप के बीच के समय को नियंत्रित करने के लिए नियम बनाएं।
7. दण्ड एवं पुरस्कार का निर्धारण सुस्पष्ट करें।

निम्नलिखित परिस्थितियों को देखकर हमें यह पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि अनुशासनहींनता का कारण क्या है और एक शिक्षक को अनुशासन कायम करने के लिए क्या करना आवश्यक है। नीचे दो प्रकार की परिस्थितियों का वर्णन किया गया है।

- श्री डेविड छठी कक्षा को अंग्रेजी पढ़ाते हैं। वह पूरे सत्र में एक समान शिक्षण पद्धति का प्रयोग करते हुए अंग्रेजी पढ़ाते हैं। पहले तीन महीने में सभी विद्यार्थी प्रेरित होते हैं और अच्छा व्यवहार करते हैं। धीरे-धीरे बातचीत करने, खराब गृहकार्य और कक्षा में ठीक प्रकार से ध्यान न देना प्रारम्भ होता है।

- सुश्री रूबी एक गंभीर शिक्षिका हैं। वह नौवीं कक्षा को विज्ञान पढ़ाती हैं। विद्यार्थी विषय से संबंधित मामलों में उनकी ईमानदारी और गंभीरता की प्रंशसा करते हैं लेकिन वह कक्षा में पूर्णतया शांति पसंद करती हैं। वह बच्चों को प्रश्न करने, परिचर्चा करने या किसी भी तरह के हस्तक्षेप को प्रोत्साहन नहीं देती हैं। विद्यार्थी उनसे बहुत डरते हैं और वे उन्हें तथा विज्ञान के पीरियड को पसन्द नहीं करते हैं।

पहली परिस्थिति में, अधिगम में विविधता और नवीन प्रणाली को लागू करने की आवश्यकता तथा दूसरी परिस्थिति में विद्यार्थियों की अधिक सहभागिता और सक्रियता आदि शिक्षण में कुछ योजनाएं हैं जो लाभदायक सिद्ध हो सकती हैं।

नीचे कुछ अन्य तकनीकों के विषय में बताया जा रहा है जो अधिगम क्रियाकलाप में विविधता ला सकती हैं एवं विद्यार्थियों में अभिरुचि उत्पन्न कर सकती हैं। कुछ विद्वानों ने वे तरीके बताए हैं जो कक्षा की व्यतिक्रमता का सामना करने में लाभदायक हो सकते हैं।

- **शिक्षण प्रणाली में परिवर्तन –** सम्प्रेषण के बहु माध्यमों का प्रयोग करना जैसे श्रव्य, दृश्य, स्पर्श और इस तरह के अन्य बहुत से माध्यम विविधता लाने के लिए और कक्षा में अधिगम एवं जानकारी के विविध स्तरों को अच्छी तरह समझाने हेतु सहायक होते हैं। इसी प्रकार से कुछ विधियों जैसे प्रश्नोत्तरी, विचार-विमर्श, परियोजना-कार्य, नियत कार्य आदि का प्रयोग नवीनता एवं सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने में सहायक हो सकता है। एक विधि के अनवरत प्रयोग (जैसे बातचीत करना) से एकरूपता हो सकती है, यदि बच्चों की अभिरुचि समाप्त हो रही हो तो शिक्षक चल रही परिचर्चा के सम्प्रत्यय की व्याख्या करने में दूसरे माध्यम का सहारा ले सकता है, योजना या विषय को बदल सकता है।

- **समय लेना –** अनुशासनहींन व्यवहार का सामना करने हेतु यह एक अदण्डात्मक उपागम है। यदि एक विद्यार्थी के द्वारा कक्षा में लगातार व्यवधान डाला जा रहा है तो उसे विनम्रतापूर्वक कक्षा को छोड़ने के लिए कहा जा सकता है जब तक कि वह पढ़ने के लिए पुन: तैयार न हो।

- **विरेचन (भावशांति) -** यह व्यक्ति के अन्दर मौजूद उत्तेजक शक्ति को बाहर निकालने की प्रक्रिया है। जितने अधिक समय तक यह शक्ति बनती रहेगी उतनी अधिक उत्तेजना उस समय दिखाई देगी जब यह निकलेगी। इसके द्वारा बच्चों को अपने दु:ख को बाहर निकालने का अवसर उपलब्ध कराना चाहिए और उन्हें अपने मित्रों/समकक्षों के साथ अपनी समस्याओं के बारे में बात करने की

अनुमति देनी चाहिए। बच्चों को ऐसे शिक्षकों के पास जाना चाहिए जिनमें व्यापक रूप से समझने की अभिवृत्ति हो और आसानी से उपलब्ध हो सकें।

- **दृश्य अनुबोधन/इशारा -** कक्षा में बच्चों द्वारा उत्पन्न की जा रही समस्या को गैर-भाषीय संकेतों जैसे घूरकर देखना या हाथ से इशारे का प्रयोग करके समस्यात्मक व्यवहार को रोकना है। यह व्याख्यान में बिना व्यवधान के गतिशील गतिविधि की सामान्य गति को कायम रखता है और साथ-ही-साथ परेशान करने वाले व्यवहार पर अंकुश लगाने में भी सहायता करता है। उदाहरण हेतु यदि एक विद्यार्थी इधर-उधर देख रहा है अथवा लापरवाह है तो इसे नियंत्रित करने का एक तरीका सामान्य रूप से किताब की तरफ इशारा करके हो सकता है। शिक्षक को विद्यार्थियों के इशारे को समझने और विद्यार्थियों को अपना इशारा देने में सक्षम होना चाहिए। उदाहरण हेतु श्रीमती अरोड़ा कक्षा में यह देखती हैं कि कुछ विद्यार्थी बातचीत में संलग्न हैं और पढ़ाई में ध्यान नहीं दे रहे हैं। वह उन विद्यार्थियों के पास जाकर खड़ी हो जाती हैं और क्रोधित निगाहों से देखती हैं। इस तरह का इशारा इसे किसी बड़ी समस्या में न जाने देकर विद्यार्थियों की लापरवाही को यहीं समाप्त कर सकता है।

शिक्षक विद्यार्थियों को यह जानने के लिए भी इशारा कर सकता है कि वे देख रहे हैं कि क्या चल रहा है? उपर्युक्त मामले में एक शिक्षिका लापरवाह विद्यार्थियों के पास जाकर क्रोधित होकर उन्हें देखती है। इस तरह के इशारे शिक्षण में व्यवधान नहीं डालते हैं और प्रभावी होते हैं।

- **स्पष्ट आदेश का प्रभाव –** यदि एक बच्चा समस्या उत्पन्न कर रहा है तो शिक्षक द्वारा दृढ़ता का प्रयोग करते हुए स्पष्ट आदेश देकर उसे आगे बढ़ने से रोका जा सकता है जिसका अन्य विद्यार्थियों के ऊपर लाभदायक प्रभाव हो सकता है। यह इसलिए कहा गया है क्योंकि एक शिक्षक एवं उद्दंड विद्यार्थी के बीच कक्षा में होने वाली अन्योन्यक्रिया को अन्य विद्यार्थी भी देखते हैं। इसलिए एक विद्यार्थी के साथ-साथ अन्य विद्यार्थी भी शिक्षक के सकारात्मक या नकारात्मक कार्य से प्रभावित होते हैं।

- **फोकस पर नियंत्रण –** इस तकनीक में फोकस शिक्षक एवं उद्दंड विद्यार्थी के बीच संबंध पर केन्द्रित होता है जिसे दुर्व्यवहार को ठीक करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

निम्नलिखित उदाहरण पर विचार कीजिए :

मैडम शहनाज़ रीना से जो कि प्राय: विलम्ब से आती है, कहती हैं, "मैं बहुत निराश हूँ कि मेरे बार-बार समझाने के बावजूद कि तुम विलम्ब से मत आया करो, तुम विलम्ब से विद्यालय आ रही हो। एक समझदार एवं सम्माननीय विद्यार्थी होने के कारण मैं सदैव तुम्हारे विषय में सोचती हूँ कि तुम कभी भी नियमों को नहीं तोड़ोगी और शिक्षक को परेशान नहीं करोगी तथा जो मैं कहती हूँ उस पर ध्यान दोगी"।

उपर्युक्त उदाहरण में शिक्षक ने 'अनुमोदन फोकस' का प्रयोग किया है जहाँ पर विद्यार्थी को शिक्षक की अपेक्षाओं से परिचित कराया गया है जो उसके अनुशासनहींन व्यवहार को न्यूनतम करने में सहायता कर सकता है।

अगली परिस्थिति 'कार्य-केन्द्रित उपागम' का एक उदाहरण है। शिक्षक कार्य पर केन्द्रित होता है जिसे एक बच्चे को करने की आवश्यकता होती है, हो सकता है कि बच्चा इसे ठीक प्रकार से करने में सक्षम न हो। इसको करते समय जरूरत से अधिक गंभीर होने की आवश्यकता नहीं है।

“तुम्हें कक्षा में ध्यान लगाने की आवश्यकता है अन्यथा तुम बाद में प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाओगे। मैं इस पाठ को नहीं दोहराऊँगा।”

- **शारीरिक सामीप्य** – विद्यार्थियों के दुर्व्यवहार को ठीक करने के लिए 'शारीरिक सामीप्य' के प्रयोग के उदाहरण नीचे दिए गए हैं। यदि एक शिक्षक अपने एवं विद्यार्थी के बीच की दूरी को कम करता है और गलती करनेवाले के पास खड़ा होता है, यह प्राय: देखा गया है कि छोटे-छोटे दुर्व्यवहार रुकते हैं।

- **गहन विश्लेषणात्मक (Post Mortem) सत्र –** यह इसलिए कहा गया है क्योंकि शिक्षिका ने विद्यार्थी के दुर्व्यवहार का विस्तृत विश्लेषण करने का निर्णय लिया है, जैसे –असलम कक्षा में दुर्व्यवहार करता है, शिक्षिका सामान्य रूप से उससे कक्षा के पश्चात् कक्षा में उसके बातचीत करने की आदत के संदर्भ में विचार-विमर्श हेतु मिलने के लिए कहती है। सुनील अन्य बच्चों को परेशान करता है और उसका मन प्राय: कक्षा में नहीं लगता। अनीता मैडम अपनी कक्षा में उसे अपने पास बिठाती हैं और सुनिश्चित करती हैं कि अन्य पीरियडों में भी वह अध्यापकों के पास बैठे। अनुशासन की कुछ अन्य विधियाँ जिनकी विस्तृत रूप से चर्चा की गई है और सफलतापूर्वक अपनाई गई हैं उन्हें अगले कुछ पैराग्राफों में बताया गया है।

- **‘गलती करो – परिणाम भोगो’ –** खेल के पीरियड के दौरान सही व्यवहार न करने वाले विद्यार्थियों या खेल सामग्री को नुकसान पहुँचाने वाले विद्यार्थियों को दो सत्रों के लिए खेलों में जाने की अनुमति नहीं दी गई है। कोई भी बच्चा जो एक परिस्थिति में दुर्व्यवहार या गलत आचरण का प्रदर्शन करता है उसे उस तरह की या संबंधित परिस्थिति के लाभ से वंचित किया जा सकता है।

क्या आप सोचते हैं कि नियमों का पालन न करने पर सुविधा को खोने की यह तकनीक आपके विद्यार्थियों के लिए सफल हो सकती है ?

क्रियाकलाप – 3

इस प्रकार की उन पाँच परिस्थितियों की सूची बनाइए जिसमें आप उपर्युक्त तकनीकों का प्रयोग कर सकते हैं।

- --------- --------- --------- --------- ---------
- --------- --------- --------- --------- ---------
- --------- --------- --------- --------- ---------

आत्म-निरीक्षण अभ्यास – 2

नीचे दिए गए विकल्पों में से खाली स्थानों को भरें :

अ - दृश्य अनुबोधन ब - समय लेना

स - गलती करो –परिणाम भोगो द - विरेचन

1. -------------------- कक्षा में अनुशासनहींनता का सामना करने के लिए एक अदण्डात्मक उपागम है।

2. -------------------- एकत्रित भावों को बाहर निकालने की प्रक्रिया है।

3. कक्षा में गैर-भाषिक संकेतों का प्रयोग, जैसे समस्या उत्पन्न कर रहे विद्यार्थी को क्रोध से देखना या हाथ से इशारा करने को -------------------- कहा जाता है।

4. -------------------- तकनीक में बच्चे को सुविधा न देकर या लाभ से वंचित कर के दण्ड दिया जाता है।

1.5.1 प्रबलन

हम सभी जानते हैं कि सकारात्मक प्रबलन एक समान परिस्थितियों में वांछित व्यवहार की आवृत्ति की संभावना को बढ़ा देता है। प्रबलन को पुरस्कार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। उपर्युक्त उदाहरणों में पुरस्कार शिक्षक का विद्यार्थियों के निरीक्षण में कमी तथा अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए प्रेरणा है।
ये विभिन्न तरीके हैं जिसमें प्रबलन उपलब्ध कराया जा सकता है। अन्तराल के समय एवं आवृत्ति को प्रबलन की सूचियों के रूप में संदर्भित किया जा सकता है।

प्रबलन की समय सूचीयाँ	विवरण
• अनवरत प्रबलन समय-सूची	➤ यह प्रत्येक समय घटित होने पर व्यवहार में प्रबलता लाती है।
• आंशिक प्रबलन समय-सूची	➤ यह व्यवहार में कभी-कभी प्रबलता लाती है, हमेशा नहीं।
• निश्चित अनुपात	➤ एक निश्चित संख्या में प्रतिक्रिया के पश्चात् की व्यवहार में प्रबलता लाती है।
• अनुपात समय-सूची	➤ एक निश्चित संख्या के बजाय अनिश्चित संख्या में प्रतिक्रिया के बाद प्रबलन होता है।
• निश्चित अन्तराल	➤ एक समय-सूची जो केवल एक निश्चित समय अवधि के पश्चात् ही प्रतिक्रिया के लिए प्रबलन उपलब्ध कराती है।
• अस्थिर अन्तराल समय-सूची	➤ एक समय-सूची जिसमें प्रबलनों के बीच समय अनिश्चित होता है।

1.5.1.1 पुरस्कारों के प्रकार

अध्ययनों से पता चला है कि पुरस्कार सकारात्मक भावनाओं को उत्पन्न करते हैं और वे किसी भी व्यवहार की संभावना को बढ़ाते हैं।

पुरस्कारों को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है : प्राथमिक एवं द्वितीयक। प्राथमिक पुरस्कार वे हैं जो कुछ जैविक आवश्यकताओं को संतुष्ट करते हैं और पूर्व के अनुभव पर ध्यान न देकर स्वाभाविक रूप से कार्य करते हैं। वे व्यक्ति की तात्कालिक आवश्यकताओं से भी संबंधित होते हैं जैसे भोजन, पानी, आदि। द्वितीयक पुरस्कार वे हैं जो प्राथमिक प्रबलक के साथ अपने संबंध के कारण उद्दीपक बन जाते हैं, या तो प्राथमिक पुरस्कारों की बारम्बारता का संकेत करते हैं या उनके साथ जुड़ जाते हैं जैसे –प्रशंसा, शाबाशी देना, मुस्कराना आदि। पुरस्कार कई प्रकार के हो सकते हैं :

- **द्रव्यात्मक पुरस्कार -** द्रव्यात्मक पुरस्कार बच्चों के द्वारा पसंद किए गए पदार्थ एवं सामान हैं, जैसे – कंचे, गेंद, पतंग, चूड़ियाँ आदि।
- **सामाजिक पुरस्कार –** सामाजिक पुरस्कार बच्चों द्वारा पसंद किए जाने वाले प्रशंसा के शब्द या इशारे हैं, जैसे – अच्छा, शाबाश, उत्तम या गैर शाब्दिक जैसे – मुस्कराना, सिर हिलाकर सहमति देना, गले लगाना आदि।
- **गतिविधि पुरस्कार -** गतिविधि पुरस्कार वे कार्य या व्यवहार हैं जिनको करना बच्चे पसंद करते हैं जैसे – संगीत सुनना, टेलीविजन देखना, चित्र बनाना, साइकिल चलाना, खेलना आदि।
- **सुविधाएँ–** विशेष सुविधा या विशेष पद देना, जैसे एक बच्चे को मॉनीटर, कैप्टन या समूह का नायक बनाना आदि।
- प्रतीकात्मक पुरस्कार - प्रतीकात्मक पुरस्कार वे सामग्री हैं जो अपने रूप में मूल्यहीन हैं परन्तु अन्य चीजों के साथ संबंधित होकर महत्व प्राप्त करते हैं। वांछित व्यवहार का प्रदर्शन करने पर उन्हें बच्चों को दिया जाता है, जैसे – दर्जा देना, बैज देना, सही का निशान, कार्ड या प्रमाण पत्र, आदि।

आप उपर्युक्त पुरस्कारों में से किसी एक का प्रयोग कर सकते हैं परन्तु याद रखिए आप को पहले यह पता करना है कि आप किस लिए बच्चे को पुरस्कृत कर रहे हैं। इसलिए व्यवहार को सुधारने या प्रबलन हेतु इसका प्रयोग शुरू करने से पूर्व आपको यह जानने की आवश्यकता है कि किसके लिए कौनसा पुरस्कार प्रयोग किया जाना चाहिए क्योंकि अलग-अलग विद्यार्थियों के लिए ये पुरस्कार अलग-अलग प्रकार का महत्व रखते हैं।

कुछ सिद्धांत हैं जिनका पुरस्कारों का प्रयोग करते समय पालन करने की आवश्यकता होती है।

- वांछित व्यवहार के घटित होने के तुरन्त बाद प्रबलन उपलब्ध कराना चाहिए।
- प्रारम्भिक स्तर पर निर्धारित व्यवहार हेतु प्रत्येक बार प्रबलन दीजिए तथा बाद में पुरस्कार हेतु प्रेरणा को स्थगित करना सीखने के लिए बच्चों को शिक्षा देने हेतु पुरस्कारों की आवृत्ति को धीरे-धीरे कम करिए।
- निर्धारित व्यवहार को प्राप्त करने के पश्चात् विरामी प्रबलन का प्रयोग कीजिए।

- द्रव्यात्मक पुरस्कार हेतु सुनिश्चित आदत को कम करने के लिए द्रव्यात्मक पुरस्कार के साथ सामाजिक पुरस्कार या अन्य द्वितीयक पुरस्कारों को जोड़िए।
- धीरे-धीरे आत्म प्रबलन को लागू कीजिए।

एक उदाहरण के रूप में निम्नलिखित परिस्थितियों में हमें प्रबलन देने का गहन रूप में अध्ययन करना है।

राधा एक परिश्रमी छात्रा है। वह हमेशा कक्षा में पढ़ाए जाने वाले पाठ को तैयार करती है एवं नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहती है। जब कभी अध्यापक कक्षा में प्रश्न पूछते हैं या कार्य देते हैं, राधा हमेशा अपना हाथ उठाती है। अब जबकि अध्यापक उस पर ध्यान नहीं दे पाते हैं या उससे उत्तर देने को नहीं कहते हैं उसने अपना हाथ उठाना बंद कर दिया है और कक्षा में भाग लेने के लिए प्रेरणा नहीं महसूस करती है।

हाँ ! बिना उपयुक्त प्रबलन के वांछित व्यवहार कायम नहीं रह पाता है और नया व्यवहार सीखना संभव नहीं होता है।

सही व्यवहार को पुरस्कृत करने की विधि के द्वारा इस प्रकार के व्यवहार की आवृत्ति को बढ़ाया जा सकता है। मेहता सर ने घोषणा की, "सभी विद्यार्थी जो बिना एक बार भी रुके दौड़ को पूरा करते हैं, एक खेल विषय पर विशेष बैज प्राप्त करेंगे।" तीस विद्यार्थियों ने दौड़ में भाग लिया और ज्यादातार ने बिना रुके दौड़ पूरा किया। मेहता सर उन विद्यार्थियों की पहचान नहीं कर पाए जो बीच में एक या अधिक बार रुके। वह किसी को भी पुरस्कार नहीं दे पाए। क्या आप सोचते हैं कि ये विद्यार्थी अगली बार मेहता सर के निर्देशों का पालन करेंगे ? संभवत: नहीं ! क्योंकि वे सफल विद्यार्थियों को पुरस्कार देने के अपने वादे को पूरा नहीं कर पाए।

क्रियाकलाप – 4

उन परिस्थितियों का चयन कीजिए जिनमें प्राथमिक प्रबलक जैसे भोजन एवं पानी सर्वाधिक उपयुक्त होंगे।

- --------- --------- --------- --------- ---------
- --------- --------- --------- --------- ---------
- --------- --------- --------- --------- ---------
- --------- --------- --------- --------- ---------
- --------- --------- --------- --------- ---------
- --------- --------- --------- --------- ---------

आत्म-निरीक्षण अभ्यास – 3

निम्नलिखित का मिलान कीजिए –

1	वांछित व्यवहार हेतु तात्कालिक प्रबलन	क	प्रारंभिक चरणों में
2.	लक्षित व्यवहार प्रत्येक बार प्रबलित किया जाता है	ख	बच्चों द्वारा पसंद की जाने वाली सामग्रियाँ जैसे – पतंग, कंचे, गेंद, आदि।
3.	द्रव्यात्मक पुरस्कारों के उदाहरण हैं-	ग	प्रबलन देने का सिद्धांत।
4.	गतिविधि पुरस्कार वे कार्य या व्यवहार हैं जो विद्यार्थियों के द्वारा पसंद किए जाते हैं जैसे -	घ	एक बच्चे को समूह का मॉनीटर बनाना, आदि।
5.	विशेष सुविधा या विशेष पद देने में इस प्रकार की चीजें हो सकती हैं	ड	संगीत सुनना, टेलीविजन देखना, खेल खेलना, आदि।

क्या सभी परिस्थितियों में सुनिश्चित चीजों को अनवरत उपलब्ध कराते रहना बुद्धिमानी है ? नहीं, इसलिए सुनिश्चित प्रबलक को सामाजिक प्रबलक के साथ मिलाना अत्यन्त आवश्यक है। यह धीरे-धीरे सुनिश्चित प्रबलक को कम करने में सहायक हो सकता है। छोटे बच्चों के मामले में सुनिश्चित पुरस्कार बेहतर कार्य कर सकते हैं।

1.5.2 क्रोध पर नियंत्रण

हमें निम्नलिखित परिस्थिति का अवलोकन करना चाहिए :

शमीम अहमद कक्षा – 8 में कक्षाध्यापक हैं। वे लड़ाई-झगड़े एवं एक-दूसरे को परेशान करने वाले कुछ विद्यार्थियों की पहचान करते हैं। वे विद्यार्थी तब प्राय: दूसरों के साथ चिल्लाने, मारने एवं धक्का देने में लिप्त रहते हैं जब भी वे गुस्से में होते हैं। शमीम अहमद ने इन विद्यार्थियों को कुछ शिथिलन अभ्यासों में प्रशिक्षित किया और उनसे आँख एवं मुँह बंद करके किसी अच्छे बिंदु पर ध्यान लगाने को कहा। एक महीने के बार-बार अभ्यास के बाद विद्यार्थियों का उत्तेजक व्यवहार कम हो गया।

उपर्युक्त परिस्थिति में, बच्चे के उग्र विचारों/भावनाओं को प्रसन्नता वाले भावनाओं/विचारों के साथ बदलकर उसकी सहायता की गई है। यह विद्यार्थियों को सिखाने में सहायता करता है कि वे अपने व्यवहार को नियंत्रित करने का प्रयास कर सकते हैं और परिस्थिति का प्रभावशाली ढंग से सामना कर सकते हैं। दूसरा उदाहरण "रॉबिन, श्निडर और डॉलनिक (1976) की "Turtle" (टर्टल) तकनीक है जिसमें शिक्षक उत्तेजित विद्यार्थियों से कछुए की स्थिति की कल्पना करने को कहते हैं जब वे विद्यार्थी अशांत होते हैं। विद्यार्थी अपने सिर को डेस्क (मेज) पर रखना, अपनी आँखें बन्द करना और मुठ्ठी को जोर से बंद करना सीखते हैं। यह उनको क्रोध उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों में तात्कालिक प्रतिक्रिया देता है और एक उपयुक्त व्यवहार में लगे रहने तथा संरचनात्मक समाधानों को सोचने योग्य बनाता है। इसका मुख्य उद्देश्य आवेगी प्रतिक्रिया में विलम्ब करने हेतु विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना है, धीरे-धीरे जब वे शिथिल हो जाते हैं तब उन्हें संरचनात्मक विकल्पों के बारे में सोचने के लिए कहा जाता है।

1.5.3 योग और ध्यान

योग एवं ध्यान, एकाग्रता तथा क्रोध नियंत्रण में सुधार के साथ-ही-साथ शरीर एवं दिमाग को अनुशासित करने के लिए भी प्रभावशाली माने गए हैं। योग एवं ध्यान भारतीय विद्यालयों की पाठ्यचर्या के एक आवश्यक हिस्से के रूप में निर्देशित किए गए हैं लेकिन इनका प्रयोग इन तकनीकों में सही प्रकार से प्रशिक्षित अध्यापकों के द्वारा ही किया जाना चाहिए। इन तकनीकों में अच्छी तरह से प्रशिक्षित व्यक्तियों के द्वारा विद्यालय में विद्यार्थियों हेतु योग एवं ध्यान का नियमित कार्यक्रम चलाया जा सकता है। योग एवं ध्यान के विषय में "माड्यूल -2" में "वैकल्पिक चिकित्सा" नामक इकाई में विस्तार से चर्चा की गई है।

1.5.4 समकक्ष साथियों से मदद

बच्चे अपने साथियों से बहुत कुछ सीखते हैं। विद्यार्थियों के अधिगम एवं व्यवहार में सुधार हेतु "समकक्ष साथियों से सीखना" एवं "समकक्ष साथियों से मदद" प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। शिक्षक नेतृत्व गुणों से युक्त विद्यार्थियों की पहचान कर सकते हैं जो दूसरों की मदद करने के लिए इच्छुक एवं प्रेरित होते हैं। ध्यान से सुनने के कौशल में प्रशिक्षण लेने के बाद वे अपने सहपाठियों की विषय से संबंधित और अन्य सामाजिक या व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने में सहायता कर सकते हैं। एक प्रशिक्षित परामर्शदाता विद्यार्थियों के लिए "समकक्ष साथियों के लिए सहायक" अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में शिक्षकों की सहायता कर सकता है।

1.6 आत्म-प्रबंधन

यह सुनिश्चित है कि विद्यार्थियों को आत्म-नियंत्रण या आत्म-प्रबंधन में प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है। जब तक विद्यार्थी स्वयं अपने व्यवहार को बदलने के लिए सक्रिय रूप से भाग नहीं लेते हैं और अनुशासन को कायम रखना नहीं सीखते हैं तब तक कोई भी बाह्य दबाव सफल नहीं होगा। इस प्रकार आत्म-अनुशासन का तात्पर्य एक अनुशासित दिमाग एवं आदतों का पालन करना है। एक आत्म अनुशासित विद्यार्थी अपने तरीके से कार्य करने के लिए स्वयं को मुक्त समझ सकता/ती है लेकिन वह निश्चित सीमाओं के बाहर नहीं जाता/ती है। यह एक आन्तरिक क्षमता है जो किसी भी परिस्थिति में सही प्रकार से कार्य करने के लिए व्यक्ति को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करती है। अब हम कुछ आत्म-प्रबंधन/ आत्म-प्रबोधन (Monitoring) विधियों के विषय में विचार-विमर्श करेंगे।

ये विधियाँ अधिक सफल हो सकती हैं यदि सर्वप्रथम विद्यार्थियों को एक अनुशासित जीवन जीने के लिए नियम एवं अनुदेशन का पालन करने एवं अधिक नियोजित एवं व्यवस्थित होने के लाभ को समझने के लिए प्रेरित किया जाये। यदि कोई समस्या है तो उसमें परिवर्तन लाने के लिए तैयार उसे करना है। एक बार जब प्रेरणा एवं इच्छा का अंकुरण हो जाता है तब परिवर्तन जल्दी होता है और दीर्घ अवधि तक रहने की संभावना होती है। आत्म-प्रबंधन में आत्म-निरीक्षण एवं आत्म-सूचना निहित होती है। बच्चे को एक समय-सूची के अनुसार आदतों को गिनने या नियमित करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है या दिशा दिखाई जाती है। इस तरह की योजनाएँ सफल रहती हैं क्योंकि अपने व्यवहार को अच्छी तरह से देखने की प्रक्रिया में उन्हें पता लग जाता है कि उन्हें क्या परिवर्तन करने की आवश्यकता है। विद्यार्थी समस्यात्मक व्यवहार एवं इसके कारणों को समझते एवं महसूस करते हैं जो

उन्हें उनके कार्य एवं विचारों में परिवर्तन लाने हेतु पहल करने में सहायक होता है। यह अन्तर्दृष्टि विद्यार्थियों को उनके दैनिक जीवन के व्यवहार को देखने में मदद करती है।

हमें निम्नलिखित उदाहरण का अध्ययन करना चाहिए।

लक्ष्मण कक्षा – 7 का विद्यार्थी है। वह बार-बार खिड़की से बाहर देखता है और इस प्रकार अपनी एकाग्रता खोता है। इसके परिणामस्वरूप वह कक्षा में प्रासंगिक परिचर्चा का अवसर खो देता है।

कक्षा – 8 का एक विद्यार्थी हरि कक्षा में अपनी डेस्क (मेज) पर बैठे साथी से सदैव बातचीत करता रहता है और शिक्षक उसे ऐसा करते हुए पकड़ते हैं, इस प्रकार पाठ पढ़ाने में व्यवधान उपस्थित हो जाता है और अन्य विद्यार्थी असहाय होकर देखते हैं।

लक्ष्मण और हरि समझ नहीं पाते हैं कि किस प्रकार उनके व्यवहार से अन्य विद्यार्थी परेशान हो रहे हैं।

उपर्युक्त परिस्थिति में क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि एक शिक्षक लक्ष्मण एवं हरि को अपने में सुधार करने के लिए किस प्रकार से सहायता कर सकता है ?

यदि शिक्षक हरि और लक्ष्मण को अपने व्यवहार के निरीक्षण हेतु दिशा दिखाता है तब वह हरि से जितनी बार वह अपने सहयोगी से बात करता है, उसे डायरी प्रविष्टि के लिए कहता है और उसका निरीक्षण किया जाता है। इसी प्रकार लक्ष्मण जितनी बार खिड़की से बाहर की तरफ देखता है, उसे लिखने के लिए कहा जाता है। हरि ने लिखा कि प्रत्येक पीरियड में जब वह बात कर रहा था तब पाँच से सात बार शिक्षक ने उसे देखा। लक्ष्मण ने भी लिखा कि उसने कम-से-कम दस बार खिड़की से बाहर की तरफ देखा। उन दोनों से अपने व्यवधान उत्पन्न करने वाले व्यवहार का रिकार्ड रखने को कहा गया। तब उनसे शिक्षक द्वारा निरीक्षण करने की आवृत्ति को कम करने तथा अध्ययन में अपने नंबरों के सुधार के लिए प्रत्येक दिन व्यवधान उत्पन्न करने वाले व्यवहार को कम करने को कहा गया। शिक्षक ने ध्यान दिया कि लक्ष्मण एवं हरि ने अपने दुर्व्यवहार को कम कर लिया है और कक्षा में उनकी एकाग्रता में सुधार हुआ है।

वे परिवर्तन जो हरि एवं लक्ष्मण के द्वारा अपने व्यवहार का निरीक्षण करने के पश्चात् घटित हुए उसे आत्म-प्रबन्धन के नाम से जाना जाता है।

1.6.1 आत्म – अनुदेशन

आत्म – अनुदेशन के द्वारा अपने विचार पर नियंत्रण करने की इस विधि को "जोर से/गहन रूप से सोचना" (think aloud) कहा जाता है। आत्म-शाब्दिक अभिव्यक्ति, वैकल्पिक प्रतिक्रिया विकसित करना, कारण एवं प्रभाव को जानने में विद्यार्थियों की सहायता करना, आदि वे विधियाँ हैं जो विद्यार्थियों को आत्म-संयम विकसित करने में सहायता करती हैं।

एक शिक्षक आत्म-संयम को विकसित करने या बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों से निम्नलिखित कथनों का नियमित अभ्यास करने के लिए कह सकता है।

- स्वयं पर नियंत्रण कर सकता/सकती हूँ।
- मित्र बना सकता हूँ।
- ठीक हूँ।
- बिना सहायता के सीख सकता हूँ।
- समर्थ हो सकता हूँ।
- सफल हो सकता हूँ।

इन सकारात्मक विचारों के अनवरत अभ्यास के साथ विद्यार्थी अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए आवश्यक योग्यता अर्जित कर सकते हैं।

1.6.2 आत्म-प्रकटीकरण

अपने आपको व्यक्त करने का अवसर प्रदान करना आत्म-प्रकटीकरण कहलाता है। यह एक सुरक्षित वातावरण में अपने गुणों, सीमाओं एवं समस्याओं के विषय में परिचर्चा करने में एक व्यक्ति के लिए सहायक होता है।

उदाहरण

विद्यालय के प्रधानाध्यापक फ़ादर थॉमस हमेशा आत्म-संयम में विश्वास रखते हैं। वे व्यक्तिगत रूप से एवं समूह में बच्चों की समस्याओं के बारे में विचार-विमर्श हेतु बहुत समय देते हैं। उनका मित्रवत् व्यवहार विद्यार्थियों को अपनी अच्छी एवं बुरी आदतों को उनके सामने प्रकट करने में प्रोत्साहित करता है। विद्यार्थी उनके साथ अपनी बुरी आदतों से छुटकारा पाने के तरीकों की जानकारी के लिए विचार-विमर्श हेतु भी उत्साहित होते हैं।

परामर्श के दौरान आत्म-प्रकटीकरण का यह तात्पर्य है कि एक शिक्षक या परामर्शदाता विचार-विमर्श की जा रही समस्या या मामले से संबंधित अपने व्यक्तिगत अनुभव को प्रकट करता है जिसका एक चिकित्सीय महत्व है और वांछित व्यवहार हेतु एक प्रतिमान के रूप में भी कार्य करता है।

क्रियाकलाप – 5

निम्नलिखित विधियों का प्रयोग करते हुए अपनी कक्षा में अनुशासन कायम करने के लिए प्रत्येक में एक गतिविधि दीजिए जिसका आप प्रयोग करेंगे :

तकनीक	गतिविधि
आत्म-प्रबोधन	
टर्टल (Turtle) प्रतिक्रिया	
आत्म-अनुदेशन	
योग एवं ध्यान	
आत्म-प्रकटीकरण	

1.6.3 आत्म-आँकड़े अथवा डायरी प्रविष्टि

डायरी प्रविष्टि एक अन्य विधि है जिसका प्रयोग किसी के व्यवहार के विषय में जानकारी प्राप्त करने हेतु किया जा सकता है। विद्यार्थियों के दैनिक जीवन की सभी महत्वपूर्ण घटनाओं एवं परिस्थितियों को तथा अपने

व्यवहार के विषय में जो कुछ वे अच्छा महसूस करते हैं और उस व्यवहार को जिसमें वे सुधार करना चाहते हैं, यह सब लिखने के लिए कह करके इस अभ्यास को लागू किया जा सकता है। अगले कुछ महीनों में उनसे उनकी लिखी हुई डायरी एवं उस व्यवहार का रिकार्ड जिसमें वे सुधार करना चाहते हैं, उसे अच्छी तरह से निरीक्षण करने के लिए कहा जा सकता है और व्यवहार में सुधारीकरण हेतु शिक्षकों के साथ परिचर्चा करना है।

क्रियाकलाप – 6

विद्यार्थियों से कुछ व्यवहारों की सूची बनाने के लिए कहिए जिसे आत्म-सुधार हेतु वे अपनी डायरी में लिख सकते हैं ?

- आज 10 मिनट विलम्ब से विद्यालय पहुँचा, मैं पुन: कभी भी विलम्ब से नहीं पहुँचूँगा।
- अपने साथी से कठोरता से बोला, आज से मैं विनम्रता से बोलूँगा।
- ---
- ....

इस प्रकार की बहुत-सी बातें हो सकती हैं और सूची कभी भी समाप्त नहीं होगी। डायरी को लिखने/विकसित करने की कोशिश कीजिए।

1.7 अनुशासन को सुधारने हेतु परामर्श उपागम

बच्चों के दुर्व्यवहार को ठीक करने में परामर्श को बहुत सहायक माना गया है। परामर्शदाता इसकी शुरुआत एक गर्मजोशी एवं उन्मुक्त वातावरण को उत्पन्न करके कर सकता है जो बच्चे के दुर्व्यवहार करने की आवश्यकता को न्यूनतम करेगा एवं उसे अपनी नकारात्मक भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए अवसर प्रदान करेगा। परामर्श संबंध का एक प्रतिमान के रूप में प्रयोग के द्वारा शिक्षक इसका उपयोग विद्यार्थियों के साथ अपने अन्योन्यक्रिया की गुणवत्ता में सुधार एवं दुर्व्यवहार हेतु उनके मनोबल को कम करने के लिए कर सकता है। शिक्षक परामर्शदाता दोषी को व्यक्तिगत या समूह परिस्थितियों में अपनी निकृष्ट या नकारात्मक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अवसर उपलब्ध करेंगे। तर्क यह है कि दुर्व्यवहार निकृष्ट भावनाओं को दबाने से घटित होता है जिसे बाहर निकालने की आवश्यकता होती है। यदि इन्हें चेतना के स्तर पर लाया जाता है तब दुर्व्यवहार की मूल प्रवृत्ति को कम किया जा सकता है (विलियमसन, 1955)।

परामर्श सत्रों का प्रयोग बच्चे के घर के वातावरण के स्वरूप (गर्मजोश, अशांति) को समझने के लिए किया जा सकता है। घर के वातावरण को अनुशासन हेतु अनुकूल बनाने में सुधार के लिए माता-पिता को मार्गदर्शन उपलब्ध करा कर किया जा सकता है। अनुशासन हेतु वातावरण के निर्माण में विद्यालय का दर्शन, इसके नियम एवं प्रथाएँ तथा अन्योन्यक्रिया शैली का भी योगदान होता है। परामर्शदाता बच्चे द्वारा सामना की जाने वाली विद्यालय से संबंधित कठिनाइयों की पहचान करके, बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली पाठ्यचर्या के निर्माण में योगदान दे करके, सीखने वालों के लिए विद्यालय को एक संतोषजनक स्थान के रूप में स्थापित करके उनकी सहायता कर सकता है।

अनुसंधान अनुशासित व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए अनुशासन की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता का समर्थन करते हैं (मर्फी, 1995, ब्रॉफी, 1985)। अनुसंधान यह भी संकेत करते हैं कि वास्तव में विद्यार्थियों को उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार एवं आत्म-प्रबंधन का शिक्षण उन्हें अनुशासित करने में मददगार हो सकता है (गैलागर,1997, गॉटफ्रेडसन एंड हायबल,1993, शॉकी एंड सेवियर,1991, काइल 1991)। डोलार्ड, क्रिस्टेन्सेन, कोल्यूसी एंड इपेन्चिन (1996) ने खोज किया कि विद्यार्थियों को उनके व्यवहार के विषय में ज्यादा जिम्मेदारी प्रदान करना न केवल सामान्य बच्चों में बल्कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के मामले में भी महत्वपूर्ण पाया गया।

अनुशासनहींनता को दूर करने में एक अन्य कदम इसकी रोकथाम हो सकती है। समस्याओं के उत्पन्न होने से पहले उनकी रोकथाम करना बहुत महत्वपूर्ण है। रोकथाम की योजनाओं के बिना व्यक्ति अल्पकालीन समाधानों के अन्तहीन चक्र में फँसकर रह जाता है। कक्षा के नियम निर्धारित करना, उत्तरदायित्व निर्धारित करने की प्रक्रिया आदि शुरूआती कदम हैं। दुर्व्यवहार के पलों का सामना करने के लिए प्रायोगिक योजनाओं के साथ तैयार रहना भी बहुत महत्वपूर्ण है। ध्यान प्राप्त करने की इच्छा, शक्ति का अभ्यास, बदला, परिवर्जन, आवेग तथा अप्रेरक व्यवहार आदि का प्रभावशाली ढंग से सामना करने के लिए विभिन्न योजनाओं की आवश्यकता होती है।

और भी, उचित व्यवहार के चयन हेतु विद्यार्थियों को आवश्यक समर्थन देना बहुत महत्वपूर्ण है। अनुशासन की प्रक्रिया में जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार का शिक्षण, कक्षा में सद्भावपूर्ण वातावरण की स्थापना एवं विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता तात्कालिक परिस्थिति का सामना करने में मुख्य हैं जिनकी परिणति समाज के अनुकूल व्यवहारों के रूप में होती है। कभी-कभी माता-पिता का सहयोग भी विघटन में वैकल्पिक व्यवहार के चयन हेतु आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त जब विद्यार्थियों का विद्यालय से सकारात्मक संबंध होता है तब हिंसा को रोका जा सकता है (फरलौंग, मॉरीसन एंड पैवेल्स्की, 2000)। सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी संबंध विद्यालय के प्रति विद्यार्थियों के अनुकूल अभिवृत्ति को प्रोत्साहित करता है। व्यवहार पर वांछित प्रतिबंध दृढ़ एवं उपयुक्त विधियों के साथ-साथ प्रेम, समझ एवं गर्मजोशी को उपलब्ध कराकर विद्यार्थियों में आत्म-अनुशासन को विकसित करने की नींव (आधारशिला) डाली जा सकती है।

1.8 सारांश

कक्षा के अंदर और बाहर का अनुशासन शिक्षकों एवं मार्गदर्शक परामर्शदाताओं के लिए मुख्य चिंता का विषय है। कक्षा में अनुशासन के बिना शिक्षक को अधिगम का परिणाम प्राप्त करने में मुश्किल होगी। अनुशासन के बिना किसी भी विद्यार्थी को उसके लक्ष्य को हासिल करने में सहायता नहीं दी जा सकती है। विद्यालय में अनुशासन को कायम रखने में मार्गदर्शक परामर्शदाता तथा अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

एक मार्गदर्शन एवं परामर्श उपागम बाह्य रूप से आरोपित अनुशासन का प्रबल विरोध करता है। मार्गदर्शन उपागम बच्चे को समझने, अनुशासन की समस्या के कारणों तथा अपने व्यवहार को नियंत्रित करने हेतु व्यक्ति को सशक्त बनाने पर बल देता है।

विवादित नियम, नियमों में स्पष्टता की कमी, अरुचिकर गतिविधियाँ, असफलता का अनुभव, घर का अप्रिय वातावरण, विद्यालय संगठन की गुणवत्ता और सामाजिक-आर्थिक कारण, अनुशासनहींनता की समस्याओं के कारणों की पहचान करना एवं विश्लेषण करना तथा रोगोपचारीय तरीकों को अपनाना सहायक हो सकता है।

एक स्वस्थ शिक्षण वातावरण के निर्माण हेतु अनुशासन बहुत महत्वपूर्ण है। अनुशासन कायम करने के लिए व्यंग्य का प्रयोग, क्रोधित होना, गलत टिप्पणी, विद्यार्थियों को धमकी देना, छोटे-छोटे मामलों को अधिकारियों को बताना, आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। नियमों में स्पष्टता, भाषा एवं सम्प्रेषण, नियमितता एवं दृढ़ता, विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक आवश्यकताओं की देखभाल करना, आदि कुछ अन्य तत्व बीज हैं जो अनुशासन को कायम रखते हैं। कुछ अन्य प्रभावशाली तरीके बीच-बीच में शिक्षण की विधियों में परिवर्तन, खेलों का इस्तेमाल करना, प्रश्नोत्तरी, हास-परिहास करना आदि हैं।

प्रबलक वांछित व्यवहार की आवृत्ति को बढ़ाते हैं। अधिगम को सुरक्षित रखने के लिए सशक्त पुरस्कृत करने वाले परिणामों को उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। प्रबलन की सहायता से आत्म-अनुशासन को बेहतर ढंग से कायम किया जा सकता है। प्रबलन प्रदान करने के विभिन्न सिद्धांत प्रभावशाली परिणाम दे सकते हैं।उम्र, लिंग, संस्कृति एवं वैयक्तिक वरीयताओं के आधार पर प्रबलकों का चयन किया जा सकता है।

इस इकाई में विद्यार्थियों को अनुशासित करने के लिए आत्म-अवलोकन, आत्म-अनुदेशन, आत्म-प्रकटीकरण, डायरी प्रविष्टि, योग एवं ध्यान, समकक्ष साथियों से मदद आदि तकनीकें प्रस्तुत की गई हैं।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास

1. कक्षा में अनुशासन कायम करने के लिए किन्हीं पाँच तरीकों का उदाहरण के साथ वर्णन कीजिए।
2. विविध प्रकार के पुरस्कार क्या हैं जिनका शिक्षक या अभिभावक बच्चों को अनुशासित करने के लिए प्रयोग कर सकते हैं ?
3. प्रबलन की विविध समय-सूचियाँ क्या हैं जिनका कक्षा में प्रयोग किया जा सकता है ? उदाहरणों के साथ व्याख्या कीजिए।
4. अपने विद्यार्थियों के साथ आत्म-अनुशासन की किन्हीं दो तकनीकों की व्याख्या कीजिए और उसके परिणामों के विषय में लिखिए।

आत्म – मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तर बिंदु

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए –

- अनुशासन बाह्य साधनों जैसे शिक्षक या अन्य वयस्कों के द्वारा बताकर या बच्चों को आत्म-नियंत्रण या आत्म-प्रबंधन के प्रशिक्षण के द्वारा कायम किया जा सकता है।
- किन्हीं पाँच बाह्य तकनीकों की उदाहरणों के साथ व्याख्या करना।

2. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए –

- द्रव्यात्मक पुरस्कार
- सामाजिक पुरस्कार
- गतिविधि पुरस्कार
- सुविधाएँ
- प्रतीकात्मक पुरस्कार

3. निम्नलिखित समय-सूचियों की उदाहरण के साथ व्याख्या कीजिए –

- अनवरत प्रबलन समय-सूची
- अंशीय प्रबलन समय-सूची
- निश्चित अनुपात
- अनिश्चित अनुपात समय-सूची
- निश्चित अन्तराल
- अनिश्चित अन्तराल समय-सूची

4. किन्हीं दो आत्म-अनुशासन की तकनीकों जैसे आत्म-अनुदेशन या आत्म-प्रकटीकरण की व्याख्या कीजिए और बताइए कि वे किस प्रकार से आपके विद्यार्थियों के लिए लाभदायक हैं।

आत्म-निरीक्षण अभ्यासों के उत्तर बिंदु

आत्म – निरीक्षण अभ्यास – 1

1 - गलत
2 - सही
3 - गलत
4 - सही
5 - सही

आत्म – निरीक्षण अभ्यास – 2

1 - ब
2 - द
3 - अ
4 - स

आत्म – निरीक्षण अभ्यास – 3

1 - स

2 - अ
3 - ब
4 - ड.
5 - द

संदर्भ पुस्तकें

- Brophy, J. 1985. Classroom management as instruction: Socialising self-guidance in students. Theory into Practice. 24 (4), 233–24.
- Dollard, N., Christensen, L., Colucci, K., and Epanchin, B. 1996. Constructive classroom management. Focus on Exceptional Children. 29 (2),1–12.
- Furlong, M. J., Morrison, G. M. and Pavelski, R. 2000. Trends in school psychology for the 21st century: Influences of school violence on professional change. Psychology in the Schools. 37, 81–90.
- Gallagher, P. 1997. Promoting dignity: Taking the destructive D's out of behavior disorders. Focus on Exceptional Students. 29 (9), 1–19.
- Gottfredson, D., Gottsfredson, G., and Hybl, L. 1993. Managing small adolescent behavior: A multiyear, multischool study. American Educational Research Journal. 30 (1), 179–215.
- Hammarberg, T., and Newell, P. 2000. The Right Not to be Hit: Children's Rights, Turning Principles into Practice. UNICEF and Save the Children Sweden. Stockholm.
- Karr-Morse, R., and Wiley, M. S. 1997. Ghosts from the Nursery: Tracing the Roots of Violence. The Atlantic Monthly Press. New York.
- Murphy, C. 1995. Building positive attitudes in the classroom. Schools in the Middle. 4 (4), 31–33.
- Robin, A., Schneider, M., and Dolnick, M. 1976. The turtle technique: An extended case study of self-control in the classroom. Psychology in the Schools. 13, 449-453.
- Shockley, R. and Sevier, L. 1991. Behavior management in the classroom. Schools in the Middle. 1 (2), 14–18.

- SCF-Sweden & EPOCH. 1993. "The Child's Right to Physical Integrity and the UN Convention." Report to the UN Committee on the Rights of the Child from End Physical Punishment of Children Worldwide and Radda Barnen, Swedish Save the Children.
- Sue, D., Sue, D. W., and Sue, S. 2000. Understanding Abnormal Behaviour (6th ed.). Houghton Mifflin Company, Boston.
- UNICEF. 2001. Corporal Punishment in Schools in South Asia. UNICEF Regional Office for South Asia, Nepal.
- Williamson, E.G. 1955. The fusion of counselling and discipline in the educative process. Personnel and Guidance Journal, 34, 74–79.

पठनीय पुस्तकें

- Bhatnagar, A. and Gupta, N. 1999. Guidance and Counselling: A PracticalApproach. (Vol. 2). Vikas Publication House. New Delhi.
- Bichlen, R.F. and Snowman, J. 1993. Psychology Applied to Teaching (7th ed.). Houghton Mifflin Company, Boston.
- Bull, S. and Solity, J. 1987. Classroom Management: Principles to Practice. Croom Helm, London.
- Clarizio, H.F. 1971. Toward Positive Classroom Discipline. John Wiley and sons, Inc. New York.
- Clark, D.D. 1981. Disruptive incidents in secondary school classroom: A sequence analysis approach, Oxford Review of Education, 7 (2),111–117.
- Copper, J., Heron, T.E. and Heward, W.L. 1987. Applied Behavior Analysis. Merrill Publishing Company, New Jersey.
- Daniel, and Susan, G. 1977. Classroom Management. Pergamon Press Inc. London.
- Good, T. and Brophy, J. 1987. Looking in Classroom (4th ed.). Harper and Row Publishers, Inc. New York.
- Kaplan, P.S. 1997. Educational Psychology for Teachers. West Publishing Company, New York.

- Watkins, C., and Wagner, P. 1987. School Discipline: A Whole School Practical Approach. Basil Blackwell, England.

वेबसाइट्स:

- http://www.counselingoutfitters.com/kyle.htm
- http:wwww.lyalservicesindia.com/articles/punish.htm

2

एक मार्गदर्शन कार्यक्रम की योजना बनाना एवं आयोजित करना - II

2.0 परिचय

2.1 उद्देश्य

2.2 मार्गदर्शन कार्यक्रम : मार्गदर्शन सेवाओं का कार्यान्वयन

2.3 एक मार्गदर्शन कार्यक्रम की योजना बनाना

2.4 कार्यक्रम प्रबंधन को समझना

2.4.1 कर्मचारी, वित्त एवं सुविधाओं का प्रबन्ध करना
2.4.2 सहायता करने वाली गतिविधियों का प्रबन्ध करना

2.5 मार्गदर्शन कार्यक्रम के कार्यान्वयन प्रतिमान

2.6 एक व्यापक विद्यालय मार्गदर्शन कार्यक्रम

2.7 एक मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित करना

2.7.1 प्राथमिक स्तर हेतु मार्गदर्शन गतिविधियाँ
2.7.2 माध्यमिक स्तर हेतु मार्गदर्शन गतिविधियाँ
2.7.3 उच्चतर माध्यमिक तथा वरिष्ठ माध्यमिक स्तर हेतु मार्गदर्शन गतिविधियाँ

2.8 सारांश

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास

आत्म-मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु

आत्म–निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिंदु

संदर्भ पुस्तकें

पठनीय पुस्तकें

वेबसाइट्स

2.0 परिचय

विद्यालयी मार्गदर्शन को बच्चों एवं युवाओं के लिए एक शैक्षिक दर्शन तथा सम्पूर्ण विकास हेतु कार्यक्रम को चलाने के रूप में देखा जा सकता है। आपको पता है कि एक दर्शनशास्त्र के रूप में मार्गदर्शन इस विश्वास पर कायम है कि प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण एवं असाधारण है और उसे सहायता की आवश्यकता है। इसे एक कार्यक्रम के रूप में लागू करने के लिए आपको एक विशेष मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम की योजना बनाने एवं आयोजित करने की आवश्यकता होगी जो विद्यार्थियों की सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षणिक एवं कॅरियर आवश्यकताओं के अनुरूप हो और उन्हें जीवन की आवश्यकताओं को हासिल करने हेतु तैयार कर सकें।

समय के साथ विद्यालय मार्गदर्शन कार्यक्रमों की प्रकृति में परिवर्तन आया है। पहले समय में विद्यालय के परामर्शदाता केवल कुछ समस्यात्मक मामलों की आवश्यकता पर ध्यान देते थे परन्तु अब वे मार्गदर्शन सेवाओं के एक समग्र क्षेत्र को उपलब्ध करा रहे हैं जो प्राथमिक कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों की विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तथा वैयक्तिक उद्देश्य निर्धारित करने, भावी योजनाओं के विकास एवं समस्याओं को दूर करने में उनकी सहायता करने के लिए कक्षा अन्योन्यक्रिया, सही प्रकार से योजित मार्गदर्शन कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने में लगे रहते हैं।

पहले की इकाई में दिए हुए विभिन्न मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाओं तथा गतिविधियों से आप परिचित होंगे। इस इकाई में आपको इस बात से परिचित कराया जाएगा कि एक परामर्शदाता के रूप में आपको इन कार्यक्रमों को किस प्रकार प्रयोग में लाना है, वे कौन सी बातें हैं जिन पर ध्यान देना बहुत जरूरी है, आप किसकी और कहाँ से सहायता लेंगे तथा आप किस प्रकार से संसाधनों का संचालन करेंगे।

यह इकाई तीनों विद्यालयी स्तरों – प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक में से प्रत्येक स्तर पर कुछ निर्देशनात्मक गतिविधियों को उपलब्ध कराने के उद्देश्य पर आधारित है जो आपको आपके विद्यालय के संसाधनों एवं आवश्यकताओं के अनुसार मार्गदर्शन एवं परामर्श की योजना बनाने एवं क्रियान्वयन में मार्गदर्शन करेगा।

2.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप निम्नलिखित बिंदुओं को समझने में सक्षम होंगे :-

- विद्यालय में एक मार्गदर्शन कार्यक्रम की योजना के चरणों के नामनिर्देशन में,
- विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर मार्गदर्शन कार्यक्रमों के द्वारा विद्यार्थियों में विविध योग्यता एवं क्षमता को विकसित करने की पहचान करने में,
- विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों में पहचान की गई क्षमताओं को विकसित करने के लिए उपयुक्त कार्यक्रमों के साथ मार्गदर्शन कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने में।

2.2 मार्गदर्शन कार्यक्रम : मार्गदर्शन सेवाओं का कार्यान्वयन

एक मार्गदर्शन कार्यक्रम में विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों तथा विद्यालय प्रशासन की सामूहिक सहभागिता आवश्यक होती है जो व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थी की आवश्यकताओं के साथ-ही-साथ संस्था की आवश्यकताओं के अनुरूप होती है। मॉड्यूल 1 के इकाई 1 में पहले से ही चर्चा किए जा चुके मार्गदर्शन के उद्देश्यों को संभवत: प्राप्त किया जा सकता है यदि विद्यालय का मार्गदर्शन कार्यक्रम मार्गदर्शन की विविध सेवाओं को मिश्रित करते हुए एक समग्र रूप में हो। एक मार्गदर्शन कार्यक्रम में अभिविन्यास, कॅरियर सूचना, सलाह, अग्रप्रेषण, परामर्श नियोजन, फॉलो-अप तथा मूल्यांकन से सम्बन्धित निवेशों की आवश्यकता होती है। मॉड्यूल 1 के इकाई 2 में इन घटकों में से प्रत्येक के लिए मार्गदर्शन गतिविधियों का वर्णन किया गया है।

यद्यपि मार्गदर्शन एवं परामर्श को विद्यालय कार्यक्रम के उद्देश्यों को हासिल करने के लिए एक आवश्यक घटक के रूप में माना गया है परन्तु अभी भी इसे एक स्पष्ट पहचान नहीं मिली है। किसी भी देश के विद्यालयों में मार्गदर्शन एवं परामर्श को विभिन्न तरीकों से आयोजित किया जाता है। यह इकाई विद्यालयी परामर्श कार्यक्रम की एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करती है। ASCA का राष्ट्रीय प्रतिमान (ASCA,2003) इस संदर्भ में कुछ निर्देशों को प्रस्तुत करता है। यह प्रतिमान तीन मुख्य क्षेत्रों – शैक्षणिक उपलब्धि, कॅरियर योजना तथा वैयक्तिक – सामजिक विकास हेतु सामर्थ्य बढ़ाने के प्रोत्साहन के उद्देश्य पर आधारित है। यह इस बात पर भी बल देता है कि एक समग्र कार्यक्रम को विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखने की जरूरत होती है। इस प्रकार बच्चे का सम्पूर्ण विकास सबसे आगे होता है और यह परामर्शदाता तथा शैक्षिक कर्मचारियों के बीच पुल का काम करता है।

यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के विषय में अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए शिक्षकों, चिकित्सा कर्मचारियों एवं स्टाफ के अन्य सदस्यों का एक सामूहिक प्रयास भी होता है। मार्गदर्शन कार्यक्रम का एक अन्य भाग अभिभावकों, शिक्षकों एंव अन्य बुद्धिजीवियों को सलाह प्रदान करना है तथा सामुदायिक एजेन्सियों से सम्बन्ध स्थापित करना है। इसी प्रकार कार्यक्रम का मूल्यांकन, आकंड़ों का विश्लेषण, फॉलो-अप और मार्गदर्शन संसाधनों का अनवरत विकास एवं आधुनिक बनाना आदि अन्य कार्य एक परामर्शदाता के द्वारा किए जाते हैं।

लेकिन किसी अन्य शैक्षिक कार्यक्रम के समान मार्गदर्शन कार्यक्रम की भी सावधानीपूर्ण योजना बनाने की आवश्यकता होती है। सीमित संसाधनों के मामलों में आपको उन मार्गदर्शन आवश्यकताओं को पहचानने एवं वरीयता देने की आवश्यकता होगी जिन्हें आप क्रियान्वित करना चाहते हैं। यह इस बात को सुनिश्चित करेगा कि किस गतिविधि को आप अपने कार्यक्रम में अधिक महत्व देना चाहते हैं जो बदले में यह सुनिश्चित करेगा कि मार्गदर्शन कार्यक्रम संस्था एवं विद्यार्थियों की उन विशिष्ट आवश्यकताओं के प्रति जवाबदेह है जिनके लिए इसका प्रबन्ध किया गया है।

2.3 एक मार्गदर्शन कार्यक्रम की योजना बनाना

एक मार्गदर्शन कार्यक्रम विशेष रूप से उल्लिखित विद्यार्थियों के तीनों क्षेत्रों – वैयक्तिक-सामाजिक विकास, शैक्षिक- शैक्षिकवर्ष निर्माण तथा कॅरियर व्यावसायिक योजना के परिणामों की प्राप्ति में विकासात्मक, आनुक्रमिक एवं केन्द्रित है। यदि मार्गदर्शन कार्यक्रम को विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों पर आरोपित किया जाता है

तो वे इसे स्वीकार नहीं करेंगे और इस प्रकार यह प्रभावी नहीं होगा। मार्गदर्शन कार्यक्रम को प्रभावशाली एवं स्वीकृतयोग्य बनाने के लिए इसे प्रत्येक विद्यार्थी को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य पर आधारित होना चाहिए। कार्यक्रम का लक्ष्य विद्यालय के दर्शन एवं उद्देश्य के समानान्तर होना चाहिए और शैक्षिक उपलब्धि, कॅरियर योजना तथा वैयक्तिक –सामाजिक विकास को सुसाध्य बनाने में सहायक होना चाहिए।

1- आवश्यकता का आकलन

प्रथम चरण के रूप में आपको अपने विद्यालय में परामर्श और मार्गदर्शन सेवाओं की आवश्यकता के आकलन का प्रबंध करना होगा। इसलिए एक मार्गदर्शन कार्यक्रम की योजना में आवश्यकताओं का आकलन सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि हो जाती है। आवश्यकता के आकलन का तीन प्रकार से महत्व है (भटनागर एंड गुप्ता, 1999)।

- यह एक मार्गदर्शन कार्यक्रम के विशेष उद्देश्यों पर ध्यान केन्द्रित करता है।
- यह एक 'शुरुआती बिंदु' निर्धारित करता है तथा
- यह मार्गदर्शन कार्यक्रम के योजना चरण में सहभागियों से सम्बंधित मनोवैज्ञानिक रूप से सशक्त सिद्वातों को नियोजित करता है। रिमर एंड बर्ट (1980) ने विद्यालय परामर्शदाताओं के लिए प्रयोग पर आधारित चरण-दर-चरण आवश्यकता आकलन की योजना उपलब्ध कराई है।

प्रथम चरण : योजना समिति का निर्माण

विद्यालय में मार्गदर्शन कार्यक्रम के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को रेखांकित करने के लिए पहला चरण अभिभावकों, विद्यार्थियों, शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधन प्रतिनिधियों आदि को मिलाकर एक योजना समिति का गठन करना है। विद्यालय परामर्शदाता विद्यालय प्रमुख की सलाह से समिति के सदस्यों की पहचान कर सकता है, विभिन्न सदस्यों की भूमिका एवं उत्तरदायित्व की रूपरेखा तैयार कर सकता है और विद्यालय सत्र के लिए कार्य की योजना बना सकता है।

द्वितीय चरण : मार्गदर्शन कार्यक्रम के उद्देश्यों को परिभाषित करना

योजना समिति के गठन के पश्चात् मार्गदर्शन कार्यक्रम के विस्तृत उद्देश्यों को परिभाषित करने का कार्य किया जाता है। ये उद्देश्य विद्यालय और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं से उत्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिए एक मार्गदर्शन कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यालय में बीच में पढ़ाई छोड़कर जाने वाले विद्यार्थियों के अनुपात को रोकने के लिए हो सकता है। इस प्रकार का उद्देश्य अनुत्तीर्ण होने वाले या निम्नस्तरीय उपलब्धि वाले विद्यार्थियों को शैक्षिक मार्गदर्शन या अभिभावकीय मार्गदर्शन की आवश्यकता से निकलकर आ सकता है। इस प्रकार के उद्देश्य मार्गदर्शक अध्यापक / परामर्शदाता को मार्गदर्शन कार्यक्रम में गतिविधियों की योजना बनाने में सहायता प्रदान करेंगे जिसमें विद्यालय छोड़ने वालों की पहचान करना, विद्यार्थियों की समस्याओं एवं अन्य गतिविधियों के सम्बन्ध में शिक्षकों को दिशा-निर्देश देना शामिल हो सकता है जिस पर इस इकाई में बाद में चर्चा की जाएगी । कार्यक्रम के उद्देश्य वास्तविक, प्राप्त करने योग्य तथा विद्यालयी व्यवस्था के दायरे के अंदर होने चाहिए। वे विद्यार्थियों की आवश्यकता के प्रति जवाबदेह होने

चाहिए। यह बात हमेशा दिमाग में रखना चाहिए कि वास्तविक आवश्यकताएँ हमेशा वैसी नहीं होती हैं जैसा कि उन्हें समझा गया है। परामर्शदाताओं को यह देखना चाहिए कि विद्यार्थी /शिक्षक या प्रशासक वास्तव में क्या चाहते हैं, हो सकता है कि उन्हें अपनी आवश्यकताओं के विषय में ठीक प्रकार से पता न हो लेकिन जो कुछ वे चाहते हैं उस विषय में उनके विचार सशक्त हो सकते हैं।

तृतीय चरण : आवश्यकताओं के आकलन हेतु तकनीकें

आधारभूत आकलन की कई तकनीकें हैं। आपने मॉड्यूल 6 के इकाई 2 और 4 में इनमें से कुछ के विषय में विस्तृत रूप में पढ़ा है। इन तकनीकों में से एक या कई मिश्रित या जैसा उपयुक्त हो वैसा प्रयोग कीजिए—

- प्रत्यक्ष अवलोकन
- सूचित व्यक्तियों के साथ विचार करना
- समूह परिचर्चा पर ध्यान केन्द्रित करना
- विद्यार्थियों की समस्याओं एवं आवश्यकताओं पर अध्ययन का रिकार्ड एवं रिपोर्ट तैयार करना
- प्रश्नोत्तरी की मदद से सर्वेक्षण करना
- साक्षात्कार
- मनोवैज्ञानिक परीक्षण /तालिकाएँ

उदाहरणार्थ विद्यार्थियों की उपलब्धि में बाधक विषय को लेकर विद्यार्थी प्रतिनिधियों के साथ एक संकेन्द्रित समूह परिचर्चा आयोजित की जा सकती है। इस प्रकार की परिचर्चा के आयोजन से आपको विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पहचानने में सहायता मिल सकती है। विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के विषय में सूचना एकत्रित करने हेतु प्रश्नोत्तरी एवं जाँच -सूची लोकप्रिय विधियाँ हैं। मूनी ने विद्यार्थियों की समस्याओं को पहचानने के लिए समस्या जाँच-सूची का विकास किया (मूनी एंड गोर्डन, 1950)। रा.शै.अ.एवं प्र.प. के डी.ई.पी.एफ.ई. में मार्गदर्शन संसाधन केन्द्र पर इस जाँच-सूची का भारतीय रूपान्तरित अनुवाद है जिसमें छः समस्यात्मक क्षेत्रों यथा-स्वास्थ्य, धन, सामाजिक जीवन, घरेलू सम्बन्ध, व्यवसाय, विद्यालय कार्य से सम्बन्धित 200 कथन हैं।

विद्यार्थियों से उनके द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं के समक्ष सही का चिह्न लगाने को कहा जाता है। कुछ कथनों के नमूने नीचे दिए गए हैं –

1 बहुत आसानी से थक जाता हूँ।

2 अपने मित्र की तुलना में मेरे पास कम धन है।

3 लोगों के साथ घुलने-मिलने में परेशानी होती है।

4 घर में मेरे साथ एक बच्चे के समान व्यवहार किया जाता है।

5 मुझे चिन्ता है कि मैं लोगों को किस प्रकार से आकर्षित करूँ।

6 दसवीं कक्षा के पश्चात् आगे क्या करना चाहिए, इस विषय में सलाह चाहता हूँ।

7 विद्यालय परिचर्चा में मैं बोलने में डरता हूँ।

आप इसी प्रकार के मानकीकृत प्रश्नोत्तरी या जाँच-सूची जो उपलब्ध हो सकती है, उसका प्रयोग कर सकते हैं या आप अपने विद्यालय में विद्यार्थियों की समस्याओं का आकलन करने के लिए इसी प्रकार की प्रश्नोत्तरी तैयार कर सकते हैं।

चतुर्थ चरण : उपकरणों/साधनों का प्रबंध करना

विद्यालय परामर्शदाता व्यक्तिगत सम्पर्क को सुनिश्चित करते हुए चयनित नमूनों पर साधनों का प्रबंध करता है जो विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों से गहन सूचना उपलब्ध कराता है।

पंचम चरण : परिणामों को क्रियान्वित करना

आकलन की आवश्यकता की प्रक्रिया का यह चरण विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मार्गदर्शन कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु उद्देश्यों के निर्धारण तथा योजना एवं कार्य में सहायता करता है। मार्गदर्शन कार्यक्रम के विकास के विषय में अधिक जानकारी की इस इकाई के भाग 2.6 में चर्चा की गई है।

छठा चरण : मूल्यांकन एवं फॉलो-अप

मूल्यांकन एवं फॉलो-अप मार्गदर्शन कार्यक्रम द्वारा लक्ष्य किए गए समूह की आवश्यकताओं को पूरा करने के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है। विद्यालय में कार्यक्रम को लागू कर देने के पश्चात् फॉलो –अप किया जाता है।

2- विद्यार्थी के सामर्थ्य की पहचान

योजना प्रक्रिया के अगले चरण में एक विशेष स्तर पर योग्यता को विकसित करने की पहचान करना है। क्षमताएँ ज्ञान, अभिवृत्ति या कौशल हैं जो अवलोकनीय हैं और एक अधिगम परिस्थिति से वास्तविक जीवन की परिस्थिति में आनुपातिक परिणामों के साथ स्थानांतरित किए जा सकते हैं। एक मार्गदर्शन कार्यक्रम का निर्माण करते समय एक परामर्शदाता के लिए यह मुख्य केन्द्रबिंदु होना चाहिए।

3- कार्यक्रमों की सूची विकसित करना

योजना प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण चरण मार्गदर्शन सेवाओं को सही ढंग से लागू करने के लिए कार्यक्रमों की सूची (calendar) का विकास करना है। कार्यक्रमों की एक व्यवस्थित सूची परामर्शदाता को समय का विश्लेषण करने में सहायता प्रदान करती है जो कार्यक्रम में प्रयोग किया जाना है। कार्यक्रमों की व्यवस्थित सूची लक्ष्य किए गए क्षेत्र के उद्देश्यों, ग्रेड के स्तरों, दिनांक एवं गतिविधियों को पहचानने में सहायता करती है। परामर्शदाता के साप्ताहिक एवं मासिक समय-सारिणी को प्रदर्शित करती हुई कार्यक्रमों की सूची को प्रकाशित कराके विद्यार्थियों, स्टाफ, अभिभावकों एवं समुदाय को वितरित करना चाहिए ताकि विद्यार्थी आवश्यकता पड़ने पर सही समय पर उन सुविधाओं का लाभ उठा सकें।

4- लिखित पाठ्यचर्या तैयार करना

एक समग्र मार्गदर्शन कार्यक्रम का आंतरिक एवं आवश्यक भाग एक लिखित पाठ्यचर्या तैयार करना है। लिखित पाठ्यचर्या मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाओं को प्रदान करने में एक मार्गदर्शक एवं मुख्य दस्तावेज के रूप में कार्य करता है और एक सही ढंग से नियोजित कार्यक्रम के लिए मापदण्ड निर्धारित करता है। मुख्य रूप से पाठ्यचर्या का निर्माण विद्यार्थियों को शैक्षिक, कॅरियर एवं वैयक्तिक विकास के क्षेत्रों में सामर्थ्य को प्राप्त करने, विकसित करने एवं प्रदर्शन करने में सहायता देने के लिए किया जाता है (ASCA प्रतिमान, 2003), जिसकी इस इकाई के परवर्ती भाग में चर्चा की गई है।

5- सलाहकार परिषद् का निर्माण करना

योजना प्रक्रिया में अगला चरण इन सेवाओं से लाभान्वित होने वाले समूह के प्रतिनिधियों को शामिल करते हुए एक सलाहकार परिषद् का निर्माण करना है। इस प्रकार के परिषद् का मुख्य कार्य समुदाय के अन्दर विद्यालय परामर्श कार्यक्रम के लिए कार्यक्रम के उद्देश्यों को निर्धारित करने, सहयोग उपलब्ध कराने, सलाह देने, गतिविधियों का पुनरीक्षण और उस पर बहस करने में सहायता करना है। समिति विद्यालय और समुदाय के बीच सम्प्रेषण की दोतरफा प्रणाली को उपलब्ध कराएगी जो सभी शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए आवश्यक है। परिषद् के सदस्यगण विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षण एवं गैर- शिक्षण स्टाफ, परामर्शदाता, प्रधानाचार्य एवं विद्यालय के अन्य प्रशासकों के समुदाय से सम्बन्धित होने चाहिए।

2.4 कार्यक्रम प्रबंधन को समझना

एक बार जब सैद्धांतिक स्तर पर कार्यक्रम की संकल्पना कर ली जाती है अर्थात् ठीक प्रकार से यह जानने के पश्चात् कि क्या करना है, एक परामर्शदाता को इसके क्रियान्वयन पक्ष को देखने की आवश्यकता होती है। प्रबंधन की दृष्टि से कार्य के दो आधारभूत क्षेत्रों की पहचान करना आवश्यक है। वे हैं –

- पहला, वे क्षेत्र जो आधारभूत संसाधनों जैसे- कर्मचारी, वित्त और सुविधाओं का प्रबंध करने से सम्बंधित हैं।
- दूसरा, वे क्षेत्र जो आयोजन करने एवं सुसाध्य बनाने वाली गतिविधियों जैसे समन्वयन, सम्प्रेषण, सहयोग, निर्णय लेना एवं मूल्यांकन पर केन्द्रित हैं। आने वाले भाग में इन पहलुओं पर विस्तार से बताया जाएगा।

2.4.1 कार्मिक, वित्त एवं सुविधाओं का प्रबन्ध करना

कार्मिक –

जैसा कि आपको पहले से ही पता है कि मार्गदर्शन एक सामूहिक कार्य है। किसी भी कार्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित उन व्यक्तियों की पहचान करना है जो मार्गदर्शन एवं परामर्श कर्मचारी के रूप में कार्य करेंगे।

मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए एक समन्वयक के रूप में आपकी प्रारम्भिक जिम्मेदारी उन व्यक्तियों की पहचान करने से शुरू हो सकती है जो इस कार्यक्रम से सम्बन्धित होंगे। उन व्यक्तियों

को जिम्मेदारी सौंपने से पूर्व आपको पूर्ण रूप से विवेकशील रहने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए –

- शैक्षिक योग्यता - यद्यपि शैक्षिक योग्यता प्रदर्शन के लिए एकमात्र मापदण्ड नहीं है फिर भी इसकी पूर्णतया अनदेखी नहीं की जा सकती है।
- बहुमुखी प्रतिभा – अलग – अलग पृष्ठभूमि के कर्मचारियों की नियुक्ति से विशिष्ट कौशलों का एक विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध कराना चाहिए।
- अनुकूलनशीलता – मार्गदर्शन एवं परामर्श उपलब्ध कराने के कार्य हेतु चयनित व्यक्तियों को विद्यार्थियों से सम्बन्धित समुदाय की विशेषताओं जैसे – सामाजिक –आर्थिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक संरचना के विषय में जानकारी प्राप्त करना महत्वपूर्ण होता है। चयनित व्यक्ति को समुदाय का सर्वेक्षण करने तथा समुदाय या क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुसार कार्यक्रम को अनुकूल बनाने में समर्थ होना चाहिए जिसके विषय में आप मॉड्यूल 1 के इकाई 7 'मार्गदर्शन हेतु सामुदयिक संसाधनों का उपयोग करना' में पढ़ चुके हैं।
- उत्तरदायित्व का निर्धारण – प्रत्येक सदस्य को विशेष गतिविधियों के लिए नियुक्त करना चाहिए जिसके लिए वह पूर्णतया जिम्मेदार हो। उत्तरदायित्व के निर्धारण में आपको स्टाफ के सदस्यों के विशेष कौशलों, अनुभवों एवं व्यक्तिगत विशेषताओं को ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

वित्त –

कार्यक्रम के आयोजन हेतु वित्तीय उपलब्धता पर अधिक जोर नहीं दिया जा सकता है। एक परामर्शदाता / शिक्षक के रूप में आपको यह जानने की आवश्यकता है कि वित्तीय सहायता कहाँ से प्राप्त करना है। वित्तीय सहायता के प्रमुख स्रोत व्यापारिक घराने, क्लब हैं या अभिभावकों के समूह में से जो कार्यक्रम में अपना सामाजिक -वित्तीय योगदान देने के इच्छुक हैं। प्रत्येक बजट मद एक गतिविधि से सम्बन्धित होता है जो इसके प्रत्युत्तर में कार्यक्रम के विशेष उद्देश्यों से सम्बन्धित होता है। व्यय हेतु कारणों को समझना आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ —

गतिविधि	:	आवश्यकताओं के आकलन हेतु आंकड़े एकत्रित करना
बजट	:	1000 रुपये
विशेष उद्देश्य	:	एक मार्गदर्शन कार्यक्रम को बनाने के लिए विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का आकलन करना
		या
गतिविधि	:	कॅरियर प्रदर्शनी
बजट	:	5000 रुपये
विशेष उद्देश्य	:	कॅरियर सूचनाओं का प्रचार

सुविधाएँ

मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम को आयोजित करने में आवश्यक सुविधाओं को शामिल किया जाना चाहिए –

- उपयुक्तता
- सुगम्यता

उपयुक्तता उपलब्ध सुविधाओं की संख्या एवं उनकी गुणवत्ता से सम्बन्धित है। सुगम्यता से तात्पर्य है कि यह उनकी पहुँच में होना चाहिए जिनसे यह सम्बन्धित है।

उस स्थान का आकार साज-सामान एवं सामान्य सजावट वातावरण को निर्धारित करते हैं जहाँ कोई कार्य करता है या भाग लेता है। खुशनुमा परिवेश का निर्माण करने के लिए कमरे को आरामदायक फर्नीचर, पौधों, फूलों आदि से सजाकर साफ-सफाई रखना चाहिए। अधिकतर विकासशील देशों में विद्यालयों में बहुत बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की देखभाल की जाती है और उसमें स्थान की कमी हो सकती है। आदर्श रूप में एक मार्गदर्शन अध्यापक या परामर्शदाता के पास एक विशेष कमरा उपलब्ध होना चाहिए। एक मेज और कुछ कुर्सियों के अलावा 2-3 आलमारियाँ होनी चाहिए और चार्ट्स, पोस्टर तथा प्रदर्शन सामग्री के लिए एक प्रदर्शनी बोर्ड/रैक होना चाहिए। एक मार्गदर्शन कार्यक्रम हेतु उपलब्ध कराई गई सुविधाएँ प्रायः विद्यालय प्रशासन के द्वारा कार्यक्रम को दिए जाने वाले महत्व/वरीयता को प्रतिबिम्बित करती हैं।

2.4.2 सहायता करने वाली गतिविधियों का प्रबन्ध करना

इसमें निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया जा सकता है –

समन्वयन

यह मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम में योजित विभिन्न गतिविधियों के विनियम या देखभाल करने से सम्बन्धित है ताकि शांतिपूर्ण कार्य करने हेतु उपयुक्त योजक एवं एकीकरण हो। कार्यक्रम के प्रभावशाली क्रियान्वयन को सुसाध्य बनाने के लिए समन्वयन स्थापित किया जाता है। उदाहरणार्थ – बच्चों के आंकड़े एकत्रित करने, कॅरियर सूचना एवं परामर्श में सही तालमेल होना चाहिए और उन्हें एक-दूसरे का पूरक होना चाहिए। मार्गदर्शन हेतु निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को मूर्त रूप देने के लिए परामर्शदाता, समाज सेवी एवं विशेष बच्चों के लिए नियुक्त शिक्षक के द्वारा किए जाने वाले कार्य में भी समन्वयन होना चाहिए।

सहयोग

सामान्य रूप से सहमति प्राप्त लक्ष्यों हेतु मार्गदर्शन कार्यक्रम से सम्बन्धित व्यक्तियों में आपस में सहयोग की भावना हेतु किए जाने वाले प्रयास को सहयोग कहते हैं। मार्गदर्शन एवं परामर्श में शामिल विभिन्न व्यक्तियों को एक समूह के रूप में साथ-साथ कार्य करना चाहिए। एक व्यक्ति के कार्य को अन्य व्यक्तियों के कार्य के द्वारा पूरित किया जाना चाहिए। सभी गतिविधियों को एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने की और निर्देशित करना चाहिए।

प्रभावशाली सम्प्रेषण

सम्प्रेषण प्रायः सुनिश्चित करता है कि कार्यक्रम सही प्रकार से संचालित किया जा रहा है कि नहीं। प्रभावशाली सम्प्रेषण हेतु इस बात पर ध्यान देना है कि व्यक्तिगत प्रभाव समाप्त नहीं हुआ है और प्रतिपृष्ठ (feedback)

प्राप्त किया गया है। योजित अन्योन्यक्रिया जैसे निरन्तर बैठकों का आयोजन, मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम के सदस्यों की आपस में अन्योन्यक्रिया हेतु सामाजिक मेल की व्यवस्था, आदि अवसर उपलब्ध होने चाहिए। इस प्रकार के अवसर उन्हें आपस में योजनाओं, विचारों एवं अनुभवों के आदान-प्रदान में सहायक होते हैं।

मूल्यांकन

मूल्यांकन कार्यक्रम प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण घटक है। मार्गदर्शन और परामर्श कार्यक्रम के प्रत्येक गतिविधि का मूल्यांकन करना बहुत महत्वपूर्ण है। सारे कार्यक्रमों को सम्पूर्ण रूप से भी मूल्यांकित करना चाहिए।

इस मॉड्यूल को इकाई 4 में इस विषय में विस्तृत चर्चा की गई है।

क्रियाकलाप

एक परामर्शदाता के रूप में आपको 'बच्चों को समझना' विषय पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना है।

- आप किसको शामिल करेंगे ?
- आप अपने बजट की कैसे योजना बनाएंगे ?
- आप अधिकारियों से कौनसी सुविधाओं को उपलब्ध कराने को कहेंगे ?

इस प्रकार कार्यक्रम प्रबंधन विकसित की गई गतिविधियों को कुछ क्रमबद्धता एवं संरचना उपलब्ध कराता है। अब जबकि आप एक मार्गदर्शन कार्यक्रम के प्रबंधन के विषय में जान चुके हैं, अगला भाग आपको संगठनात्मक पहलुओं से परिचित कराएगा।

2.5 मार्गदर्शन कार्यक्रम के कार्यान्वयन प्रतिमान

मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिए विद्यालयों में विविध प्रकार के प्रतिमानों का प्रयोग किया जाता है। इन्हीं में से तीन प्रतिमानों के विषय में यहाँ चर्चा की जा रही है।

विशेषज्ञ प्रतिमान

विशेषज्ञ प्रतिमान में मार्गदर्शन एवं परामर्श पूर्णकालिक विशेषज्ञों के द्वारा प्रदान किया जाता है जो विद्यालयी परामर्श में प्रशिक्षित सत्यापित/ अनुज्ञापित शिक्षक होते हैं और जिनके पास विद्यार्थियों की विकासात्मक आवश्यकताओं से सम्बन्धित विशिष्ट योग्यता एवं कौशल होता है (ASCA राष्ट्रीय प्रतिमान, 2003)। अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, फ्राँस, इंग्लैंड, आदि देशों में जहाँ मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाएँ ठीक प्रकार से स्थापित हैं, वहाँ पर पूर्णकालिक परामर्शदाताओं के द्वारा एक विशेष प्रयोजन हेतु कार्यक्रम के रूप में मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाओं को दिया जा रहा है। भारत और अन्य विकासशील देशों में इस प्रतिमान का बहुत सीमित रूप में प्रयोग किया जा रहा है क्योंकि इसको प्रदान करने वाले प्रशिक्षित कर्मचारियों एवं आवश्यक संसाधनों की कमी है।

एशिया के देशों जैसे जापान, चीन एवं हांगकांग में मार्गदर्शन के प्रतिमानों को लागू करना ये दर्शाते हैं कि विद्यालयों में कार्यरत विशेषज्ञ परामर्शदाताओं की बहुत कमी है। मार्गदर्शन कार्य एवं गतिविधियाँ शिक्षकों के सहयोग से लागू किए जाते हैं।

कॅरियर शिक्षक प्रतिमान

उन स्थानों पर जहाँ संसाधन दुर्लभ हैं और विशेषज्ञ उपलब्ध नहीं हैं वहाँ मार्गदर्शन गतिविधि को वयस्कों के द्वारा पूरा करने की कल्पना की जाती है जो युवाओं के साथ सहज एवं स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं और उनके जीवन में दिशा एवं योग्यता की भावना विकसित कर सकते हैं। इसलिए यह कहा गया है कि मार्गदर्शन के सिद्धांत एवं प्रयोग के विषय में जानकारी रखने वाले शिक्षक बच्चों को मार्गदर्शन देने में निर्णायक भूमिका अदा कर सकते हैं। बच्चों के बहुत नजदीक होने के कारण शिक्षक एक गुरु एवं मार्गदर्शक के रूप में भूमिका अदा करने के लिए आदर्श रूप में उपयुक्त होते हैं।

2 से 6 सप्ताह का अल्प कालिक प्रशिक्षण लेकर शिक्षक कॅरियर सूचना और कॅरियर शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों के रूप में मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित करते हैं परन्तु वे अपने समय का अधिकतम भाग शिक्षण कार्य में लगाते हैं। यह प्रतिमान भारतीय व्यवस्था में लागू किया जाता है जहाँ संसाधन दुर्लभ हैं। इसमें सामान्य रूप में कॅरियर सूचना/ कॅरियर मार्गदर्शन और नियोजन से सम्बन्धित गतिविधियाँ सम्मिलित की जाती हैं। फिर भी, हाल के वर्षों में भारत में पूर्णकालिक परामर्शदाताओं के महत्व को मान्यता दी गई है।

कुछ स्थानों पर यह देखा गया है कि कॅरियर सूचना/कॅरियर मार्गदर्शन उपलब्ध कराने वाले इन कॅरियर शिक्षकों के कार्यों में राज्य शिक्षा/श्रम विभाग में लगे हुए मार्गदर्शन कार्यकर्ताओं/प्रशासकों एवं सामुदायिक एजेन्सियों के द्वारा सहयोग दिया जाता है।

शिक्षक परामर्शदाता प्रतिमान

इस प्रतिमान में शिक्षक पूर्णकालिक परामर्शदाता का प्रशिक्षण प्राप्त करके एक-दूसरे के पूरक शिक्षण कार्य एवं मार्गदर्शन दोनों करते हैं। शिक्षक- परामर्शदाता पूरी कक्षा के वैयक्तिक –सामाजिक आवश्यकताओं की देखभाल करने हेतु सामान्य रूप में समूह तकनीकों जैसे समूह में कॅरियर परामर्श या सामान्य परामर्श या कक्षा मार्गदर्शन गतिविधि आयोजित करने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

मानव विकास प्रक्रियाओं में गहन अन्तर्दृष्टि, मददगार एवं अन्योन्यक्रियात्मक कौशल शिक्षक की इस भूमिका को प्रभावशाली ढंग से पूरा करने में विशेष रूप से तैयार कर सकते हैं। विशिष्ट सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए विशेषज्ञों के साथ-ही-साथ शिक्षकों एवं प्रशासकों को प्रशिक्षित करने हेतु बड़े स्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है। ये प्रशिक्षित व्यक्ति मार्गदर्शन / परामर्श के दर्शन एवं कार्यक्रमों को सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया में एकीकृत कर सकते हैं।

आत्म – निरीक्षण अभ्यास - 1

विशेषज्ञ, कॅरियर शिक्षक एवं शिक्षक परामर्शदाता प्रतिमानों के बीच अंतर के मुख्य बिंदुओ का उल्लेख कीजिए।

विशेषज्ञ परामर्शदाता	कॅरियर शिक्षक	शिक्षक परामर्शदाता

2.6 एक व्यापक विद्यालयी मार्गदर्शन कार्यक्रम

विद्यालय मार्गदर्शन कार्यक्रम सभी विद्यार्थियों के वैयक्तिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं कॅरियर विकास के लिए आयोजित किया जाता है। इसमें सामान्यत: तीन केन्द्रित घटक निहित होते हैं —

- परामर्श एवं विकासात्मक सेवाएँ
- सूचना एवं आकलन तथा
- मिलकर कार्य करना

कार्यक्रम का परामर्श एवं विकासात्मक घटक व्यक्तिगत परामर्श, छोटे समूह में परामर्श को शामिल करने के साथ-ही-साथ बड़ी संख्या में विद्यार्थियों के सामूहिक कार्य जैसे कॅरियर शिक्षा के विषय में बताना, वर्कशॉप (कार्यशाला), समूह परिचर्चा एवं सलाह भी सम्बन्धित होते हैं। विद्यालय परामर्शदाताओं में सर्वप्रथम सीखने वालों की आवश्यकताओं को पहचानने का कौशल होना चाहिए तत्पश्चात् वैयक्तिक एवं समूह कार्य आयोजित करना चाहिए । परामर्श एवं विकासात्मक सेवाएँ युवा वर्ग को उनकी शैक्षिक समस्याओं के समाधान में, कॅरियर विकास अनुभवों को सुसाध्य बनाने में और संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन की तरफ अग्रसर होने में सहायता करती हैं।

सूचना एवं आकलन विद्यार्थी के बारे में अन्तर्दृष्टि विकसित करने में परामर्शदाता की सहायता करते हैं। परीक्षण एवं गैर – परीक्षण तकनीकें वैयक्तिक, सामाजिक, शैक्षिक उन्नति एवं कॅरियर के क्षेत्रों में विद्यार्थी के विकास में उपयुक्त सूचना उपलब्ध कराते हैं। अपने विषय में जानकारी विद्यार्थी को विद्यालय में एवं विद्यालय के बाहर के शैक्षिक अनुभवों तथा उपलब्ध अवसरों को बेहतर ढंग से प्रयोग करने में सहायता प्रदान करते हैं। कॅरियर के क्षेत्र में सूचना विद्यार्थी को कार्य के संसार से सम्बन्धित निर्णय लेने में समर्थ बनाती है ताकि उन्हें सकारात्मक एवं संतोषजनक कॅरियर उपलब्ध हो सके। यह एक व्यक्ति के रूप में विद्यार्थी की उन्नति एवं विकास को भी पोषित करता है।

समूह गतिविधियों में सलाह, सहयोग एवं समन्वयन निहित होता है। सलाह की भूमिका में परामर्शदाता अपनी विशेषज्ञता का प्रयोग उनकी सहायता करने में इस्तेमाल करता है जो विद्यार्थियों के साथ रहते एवं कार्य करते हैं। सहयोग एवं समन्वयन की समूह में काम करने के घटक के प्रत्यक्ष कार्यों में कम भूमिका होती है। इनमें से प्रत्येक गतिविधि समायोजन के विशेष क्षेत्र में विद्यार्थियों की सहायता के कार्य हेतु सभी के साथ सद्भाव एवं सहयोग

की अपेक्षा करते हुए विद्यालय के कर्मचारियों के अंत: सम्बन्धों पर बल देती है। इस कार्य के महत्वपूर्ण पहलू विद्यालय के बाहर के संसाधनों का उपयोग करना, विद्यार्थियों की सहायता के लिए सामुदायिक एजेन्सियों के साथ समन्वय करना तथा घर एवं विद्यालय के बीच सम्बंध स्थापित करना है।

2.7 एक मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित करना

मार्गदर्शन गतिविधियों को विद्यालय के लोगों एवं व्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए। यह ASCA के द्वारा बताए गए एक व्यापक मार्गदर्शन कार्यक्रम की तरह है। विद्यालय के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों को मार्गदर्शन सेवाएँ प्रदान करने हेतु राष्ट्रीय मानक में चार घटकों : मार्गदर्शन पाठ्यचर्या, वैयक्तिक विद्यार्थी योजना, प्रतिक्रियाशील सेवाएँ और व्यवस्था में सहयोग का प्रयोग किया गया है। मार्गदर्शन कार्यक्रम के इन चार घटकों का वर्णन नीचे किया जा रहा है।

मार्गदर्शन पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या एक लिखित दस्तावेज है जो पूर्ण सक्रिय, आकार में समग्र एवं विकासात्मक रूप में उपयुक्त है। पाठ्यचर्या घटक एक प्रणाली उपलब्ध कराता है जिसके द्वारा विद्यार्थी एक व्यवस्थित तरीके से मार्गदर्शन पाठ्यचर्या के ढाँचे को ग्रहण करते हैं। पाठ्यचर्या के संदर्भ में एक परामर्शदाता के उत्तरदायित्व में मार्गदर्शन पाठ्यचर्या की योजना, सूत्रबद्ध करना, क्रियान्वित करना एवं मूल्यांकन करना शामिल होता है। मार्गदर्शन पाठ्यचर्या को कक्षा में निर्देश, छोटे समूहों में परिचर्चा, आदि के द्वारा प्रदान किया जाता है। पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि, कॅरियर विकास एवं वैयक्तिक उन्नति के क्षेत्रों में ज्ञान, अभिवृत्ति एवं कौशलों को अर्जित करने में सहायता करती है।

वैयक्तिक विद्यार्थी योजना

विद्यार्थी योजना घटक प्रत्येक विद्यार्थी को अपने व्यक्तिगत उन्नति एवं विकास पर विचार करने हेतु एक अवसर उपलब्ध कराता है। एक विद्यार्थी अपनी गतिविधियों की योजना बनाने, समझने एवं निरीक्षण करने हेतु अभिभावकों या शिक्षकों के साथ जुड़कर कार्य कर सकता है। विद्यार्थी अपने वैयक्तिक, शैक्षिक एवं कॅरियर विकास के संदर्भ में अगले चरण हेतु योजना बनाने में सक्षम हो जाते हैं। परामर्शदाता विद्यार्थियों को अपने उन्नति के विषय में योजना बनाने एवं निरीक्षण करने में सहायता करते हैं और इस प्रकार उनकी योग्यताओं, कौशलों, अभिरुचियों एवं उपलब्धियों के विश्लेषण एवं मूल्यांकन में उनके साथ कार्य करते हैं। शैक्षिक एवं भावी कॅरियर लक्ष्यों को पूरा करने हेतु विशिष्ट योजना के निर्माण में प्रत्येक विद्यार्थी की सहायता के लिए परामर्शदाता वर्तमान गतिविधियों एवं मार्गदर्शन कार्यक्रमों को विकसित करते हैं। इस संदर्भ में मार्गदर्शन सेवा/सहायता वैयक्तिक परामर्श के आधार पर उपलब्ध कराई जाती है।

प्रतिक्रियाशील सेवाएँ

प्रतिक्रियाशील सेवाओं में विद्यार्थियों की तात्कालिक आवश्यकताओं और मामलों को पूरा करने की गतिविधियाँ समाहित होती हैं। इस प्रकार की आवश्यकताओं और मामलों में परामर्श, सलाह, अग्रप्रेषण एवं समकक्ष साथियों द्वारा सहायता की आवश्यकता होती है। विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए

परामर्शदाता शुरुआती अंत:क्षेप से लेकर संकटकालीन प्रतिक्रिया हेतु व्यापक क्षेत्र की सेवाएँ प्रदान करते हैं। वे विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए माता-पिता / अभिभावकों, शिक्षकों, मित्रों, आदि के साथ विचार-विमर्श करते हैं। उपलब्ध कराई गई सेवाओं में व्यक्तिगत या समूह परामर्श, संकटकालीन प्रबन्धन उदाहरण के लिए नशे की रोकथाम, आत्महत्या की रोकथाम, आदि शामिल होते हैं।

- वैयक्तिक एवं छोटे समूहों में परामर्श विद्यार्थियों को उस समय उपलब्ध कराया जाता है जब वे सम्बन्धों, व्यक्तिगत मामलों, विकासात्मक कार्यों, आदि का सामना करने में कठिनाई महसूस करते हैं। इस प्रकार का परामर्श सामान्यत: अल्प कालिक होता है। विद्यालय परामर्शदाता सामान्य रूप में चिकित्सा प्रदान नहीं करते हैं। जहाँ आवश्यक होता है, उपयुक्त डॉक्टर के पास उन्हें अग्रप्रेषित किया जाता है।

- संकटकालीन प्रबंधन परामर्श रोकथाम, अंत:क्षेप एवं फॉलो-अप उपलब्ध कराना है। परामर्श एवं सहयोग आकस्मिक संकट का सामना कर रहे विद्यार्थियों एवं उनके परिवारों को उपलब्ध कराया जाता है। इस प्रकार का परामर्श सामान्य रूप से अल्पकालिक एवं अस्थायी होता है।

व्यवस्था में सहयोग

व्यवस्था में सहयोग विद्यालयी मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम को विविध मार्गदर्शन कार्यक्रम सहयोग गतिविधियों जैसे – स्टॉफ निर्धारित करना, कार्यक्रम प्रबन्धन, रिकार्ड का विश्लेषण, पाठ्यचर्या का विकास, आदि और इस प्रकार की अन्य गतिविधियों में सहयोग के द्वारा प्रभावी बनाने में समर्थ बनाता है। एक व्यापक एवं विकासात्मक मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम को प्रस्तुत करने के लिए परामर्शदाता गतिविधियों को लागू करने में सहयोग हेतु आवश्यक योजना एवं प्रबंध कार्यों को उपलब्ध कराते हैं। परामर्शदाता रिकार्ड एवं फॉलो-अप अध्ययनों का मूल्यांकन भी करते हैं और मार्गदर्शन गतिविधियों तथा संसाधनों को अनवरत विकसित एवं आधुनिक बनाते रहते हैं।

मार्गदर्शन सेवाओं को प्रदान करने के माध्यमों के अलावा इसमें लगने वाले समय पर भी महत्व दिया गया है जिसका एक परामर्शदाता को विद्यालय के प्रत्येक स्तरों पर विविध घटकों हेतु पालन करना चाहिए। एक शिक्षक परामर्शदाता द्वारा प्रत्येक कार्यक्रम घटक के लिए दिए गए निर्धारित समय में विद्यालय के स्तरों, विद्यार्थियों की विकासात्मक आवश्यकताओं, संसाधनों के स्तर तथा कार्यक्रम में सहयोग के अनुसार विभिन्नता होती है। ASCA प्रतिमान के द्वारा प्रत्येक घटक के लिए दिया गया समय का प्रतिशत निम्नलिखित है।

	प्राथमिक विद्यालय	माध्यमिक विद्यालय	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
मार्गदर्शन पाठ्यचर्या	35% - 45%	25% - 35%	15% - 25%
विद्यार्थी योजना	5% - 10%	15% - 25%	25% - 35%
प्रतिक्रियाशील सेवाएँ	30% - 40%	30% - 40%	25% - 35%
व्यवस्था सहयोग	10% - 15%	10% - 15%	15% - 20%

विद्यालयी मार्गदर्शन गतिविधियों की योजना एवं आयोजन शैक्षिक स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक या वरिष्ठ माध्यमिक) जिनके लिए कार्य करना है उनके अनुसार अलग-अलग होती हैं। अगले भाग में विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर मार्गदर्शन की विशेष गतिविधियों की चर्चा की गई है। इनकी शैक्षिक, कॅरियर एवं वैयक्तिक / सामाजिक विकास के रूप में चर्चा की गई है जैसा कि निम्नलिखित चित्र में वर्णन किया गया है।

2.7.1 प्राथमिक स्तर हेतु मार्गदर्शन गतिविधियाँ

प्राथमिक स्तर के लिए गठित किया गया मार्गदर्शन कार्यक्रम आने वाले वर्षों के विकासात्मक कार्यों का सामना करने में सफलता हेतु नींव रखता है। प्राथमिक स्तर में 5-13 वर्षों के आयु वर्गों में 1 से VIII तक की कक्षा को लिया जाता है। प्राथमिक वर्ष वह समय है जब बच्चे एक वैयक्तिक रूप में विकास करना प्रारम्भ कर देते हैं। यह वह अवस्था है जब वे जीवन के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं के साथ बाहर की दुनिया से परिचित होते हैं। अधिगम एवं शैक्षिक उपलब्धियों में बाधा को दूर करने के लिए बच्चों की शैक्षिक, वैयक्तिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की शुरुआती दौर में पहचान एवं अंत:क्षेप आवश्यक है जिसके लिए परामर्शदाता की भूमिका का बहुत महत्व है।

प्राथमिक स्तर पर कार्यक्रम के आयोजन एवं विकास में उपयुक्त उपागमों के निर्धारण हेतु आपको उस स्तर की विकासात्मक विशेषताओं एवं जरूरतों तथा मार्गदर्शन के उद्देश्यों पर विचार करना है।

नीचे कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं जिनका आप एक परामर्शदाता के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। ये गतिविधियाँ उन उद्देश्यों के आधार पर विकसित की जा सकती हैं जिन्हें आप प्रयोग करना चाहते हैं ताकि यह विद्यार्थियों के लिए लाभदायक हो सके। आपको यह घ्यान रखना चाहिए कि नीचे दी गई मार्गदर्शन गतिविधियाँ केवल उदाहरणात्मक हैं। एक शिक्षक/परामर्शदाता के रूप में आप इन गतिविधियों को अपने पास उपलब्ध संसाधनों के अनुसार सुधार सकते हैं या उसी रूप में अपना सकते हैं।

शैक्षिक विकास

सामर्थ्य क्षेत्र/उद्देश्य	गतिविधियाँ	विद्यार्थियों के लिए लाभ
विद्यालय में विद्यार्थियों का समायोजन	• समूह परिचर्चा के द्वारा विद्यालय के नियमों, कार्यक्रमों, नीतियों, सेवाओं, सुविधाओं, आदि के बारे में अभिभावकों को परिचित कराना। • विद्यालय की विविध गतिविधियों के विषय में प्रदर्शन /प्रदर्शित करना / कठपुतली/गाने/थिएटर आदि के द्वारा विद्यार्थियों को परिचित कराना। • बच्चों को अपने बहुमूल्य सामानों, आदतों,एकत्रित की गई सामग्रियों (टिकटें, माला, सिक्के आदि) को अपने साथियों को दिखाकर उनमें बाँटने के लिए प्रोत्साहित करके विद्यालय और घर के बीच की दूरी को कम करना।	• घर से विद्यालय में एक सहज संक्रमण बनाना। • बच्चों को विद्यालय में कक्षा में प्रदर्शन एवं सफलता के बीच सम्बन्ध को समझाना।
आधारभूत शैक्षिक कौशलों को मन में स्थापित करना/विकसित करना	• अधिगम में सहायक सामग्री, उपकरणों एवं तकनीकों का प्रयोग करना। • स्मरणशक्ति को बढ़ाने के लिए तकनीकों पर परिचर्चा करना। • आधारभूत कौशलों के अधिगम में कमियों को पहचानना। • यदि सम्भव हो तो अध्ययन के लिए परिरूपित कला, संगीत, कहानी, आदि को अध्ययन के प्रयासों के साथ पूरक करना। • बच्चों को समूह अध्ययनों में सहभागिता के लिए प्रोत्साहित करना।	• शैक्षिक सफलता हेतु अध्ययन कौशलों का प्रयोग करना सीखना। • सम्प्रेषण कौशलों में प्रशिक्षित किए जाते हैं। • स्वतंत्र रूप से कार्य करने के साथ-ही-साथ अन्य विद्यार्थियों के साथ सहयोगी रूप से कार्य करने की योग्यता का प्रदर्शन करना। • विद्यार्थी कार्य एवं उपलब्धि में आत्माभिमान सीखते हैं।

परीक्षण लेने का कौशल	• गृह कार्य को एक सकारात्मक अनुभव बनाना। • छात्रों को मित्रवत् तरीके से प्रश्नोत्तर के द्वारा उन्हें परीक्षण के लिए अध्ययन करने को प्रोत्साहित करना। • परीक्षण के समय चिन्ता को राकने/ कम करने के लिए अध्ययन को दैनिक बनाना।	• विद्यार्थी शांति महसूस करते हैं और परीक्षा के समय तैयार रहते हैं। • समय और कार्य प्रबंधन के कौशलों का प्रयोग करते हैं।
शिक्षक-छात्र के सम्बन्धों में सुधार करना।	• अभिवृत्ति एवं व्यवहार की पहचान करना जो सफल अधिगम की तरफ ले जाते हैं। • बच्चों को कक्षा में उनके प्रिय व्यक्तियों, शौक आदि के विषय में बात करने की अनुमति देकर शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध में सुधार करना। • बच्चों में एक सकारात्मक आत्म -सम्प्रत्यय के विकास को सुसाध्य बनाने में कक्षा के वातावरण को स्नेहयुक्त रूप देने के महत्व पर वार्ता,चर्चा, सेमिनार, आदि के द्वारा शिक्षकों को परिचित कराना।	• विद्यार्थियों को महसूस कराना कि शिक्षक उनमें रुचि लेते हैं। • विद्यार्थी कठिनाई के समय शिक्षक के पास जाने में सहज महसूस करेंगे। • अपनेपन की भावना और समझाने तथा स्वीकृत होने की भावना बढ़ती है।
प्रवेश में वृद्धि करना तथा स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों में कमी लाना	• बच्चों में रुचि लेकर उन्हें विद्यालय आने के लिए प्रेरित करना। प्रायोगिक गतिविधि में संलग्न रखने हेतु प्रत्येक बच्चे को प्रेरित करने के लिए गृहकार्य पुस्तक तैयार करना। • विद्यालय छोड़ने की संभावित समस्याओं की पहचान करना (शैक्षिक/व्यक्तिगत)। • उन बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनौपचारिक या मुक्त विद्यालय प्रणाली के विषय में सूचना उपलब्ध कराना जो औपचारिक विद्यालय में पढ़ने में असमर्थ हैं।	• विद्यालय में जाने के लिए प्रेरित होते हैं और व्यक्तिगत सम्भाव्य को प्राप्त करते हैं। • विद्यालय की लचीली समय-सारिणी एवं समस्याओं पर घ्यान देना विद्यालय छोड़कर गए हुए बच्चों को विद्यालय में पुन: आने को प्रोत्साहित करता है। • विद्यार्थी वैकल्पिक तरीकों से अध्ययन जारी रखने को प्रेरित होते हैं।

निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करना	• बच्चों को गृहकार्य के कुछ विकल्प देकर उन्हें अपनी पंसद के गृहकार्य का चयन करने के लिए कहना।	• नये विचारों एवं स्तरों के अन्वेषण हेतु बच्चों को चिन्तन के लिए प्रोत्साहित करता है।
विद्यार्थियों की क्षमता	• विद्यार्थियों के साथ बचपन की कहानियों पर परिचर्चा करना जिनमें सही निर्णय के लिए मनपसंद पुरस्कार एवं गलत निर्णय के लिए नकारात्मक परिणामों के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।	• विद्यार्थी निर्णय लेना सीखते हैं और प्रशिक्षार्थी के रूप में सामर्थ्य एवं आत्मविश्वास की भावना को सुस्पष्ट करते हैं। • शैक्षिक लक्ष्यों के निर्धारण में विद्यार्थी की सहायता करता है। • बच्चे अपने कार्य के लिए जिम्मेदारी लेना सीखते हैं।
कॅरियर विकास		
सामर्थ्य क्षेत्र /उद्देश्य	**गतिविधियाँ**	**विद्यार्थियों को लाभ**
कार्य की विविधता समझना	• अपने विषय में ज्ञान के आधार पर कॅरियर निर्णय लेने के लिए बच्चों को कार्य के संसार के अन्वेषण हेतु तैयार करना। • पड़ोस एवं समुदाय के लोगों तथा परिवार के सदस्यों के कार्य गतिविधियों को लिखना।	• विद्यार्थियों को अलग – अलग प्रकार के कार्य के विषय में (परम्परागत और गैर-परम्परागत) जानकारी प्राप्त होती हैं। • सभी प्रकार के कार्यो के प्रति सकारात्मक प्रवृति का विकास होता है।
लोगों द्वारा किए जाने वाले विविध प्रकार के कार्यों एवं इनकी आवश्यकताओं के विषय में जागरुकता उत्पन्न करना	• विद्यालय में कार्य गतिविधियों के चयन एवं भाग लेने में बच्चों की सहायता करना। • नियोजनीयता के आधारभूत कौशलों (नियमितता, कठिन परिश्रम, समय प्रबंधन, आदि) के बारे में जागरुकता प्राप्त करने में बच्चों की मदद करते हैं।	• शैक्षिक उपलब्धि, कॅरियर सफलता एवं कार्य के संसार के बीच अन्तर को समझना।

सहयोग की भावना एवं कार्य की अभिवृत्ति के प्रति बच्चों को तैयार करना	• विद्यालय में समूह परियोजनाओं में विद्यार्थियों को भागीदारी हेतु प्रेरित करना।	• विद्यार्थी एक सहयोगी के रूप में कार्य करना, और समस्या समाधान तथा संगठनात्मक कौशलों को सीखते हैं। • टीम के सदस्य के रूप में कार्य करना सीखते हैं।
निर्णय लेना	• कार्य की आदतों के विकास एवं अपने सामर्थ्य के अधिकतम इस्तेमाल हेतु विद्यार्थियों को उनकी अभिरुचि के अनुसार छोटे-छोटे कार्यों एवं परियोजनाओं को चुनने के लिए समर्थ बनाना।	• निर्णय लेना एवं लक्ष्य निर्धारित करना सीखते हैं। • व्यक्तिगत कौशलों, अभिरुचि, योग्यता को पहचानना तथा वर्तमान कॅरियर निर्णयों के साथ उन्हें सम्बन्धित करना।
वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास		
सामर्थ्य क्षेत्र/ उद्देश्य	**गतिविधियां**	**विद्यार्थियों को लाभ**
• सकारात्मक आत्म-सम्प्रत्यय विकसित करना। • सामाजिक कौशलों का निर्माण करना। • जाति, पंथ, धर्म, आदि से निरपेक्ष सभी विद्यार्थियों के लिए प्रशंसा की भावना रखना।	• प्रबल पक्ष को पहचानने के लिए समूह गतिविधियाँ जैसे “मेरा प्रबल पक्ष”, “मैं कर सकता हूँ” “मैं पसंद करता हूँ,” “मुझे गर्व है,” “मैं आनंद उठाता हूँ,” “मैं इस बारे में अच्छा महसूस करता हूँ, “इन सीमितताओं को मुझे विजित करना है”।	• बच्चे सकारात्मक आत्म-प्रतिमान विकसित करना सीखते हैं । • विद्यार्थी स्वयं एवं अन्य को समझना एवं सम्मान करना सीखते हैं। • भावनाओं को पहचानना एवं व्यक्त करना सीखते हैं। • उपयुक्त एवं अनुपयुक्त व्यवहार, शारीरिक सम्पर्क आदि के अन्तर को पहचानना। • मानवजातीय एवं सांस्कृतिक विविधता को पहचानना, स्वीकार करना एवं प्रशंसा करना।

निर्णय लेना	• बच्चों के साथ समस्यात्मक प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए निर्णय लेने के कौशलों का प्रयोग करना ताकि इसमें उपयुक्त परिणामों पर प्रतिबिम्बन के साथ परिचर्चा सकारात्मक समाधानों की तरफ बढ़े। उदाहरण- एक अजनबी चॉकलेट देता हैं, आप एक प्रदर्शनी में खो गए हैं, आदि। • बच्चों को व्यक्तिगत एवं पारिवारिक मामलों में निर्णय लेने में सक्षम बनाना। उदाहरण- आप लाल या गुलाबी में से किस रंग की कमीज पहनना पसंद करते हैं ? दिनचर्या पर परिचर्चा जैसे – सोने का समय, सुबह की दिनचर्या, गृहकार्य के लिए समय।	• वैयक्तिक सामर्थ्य एवं गुणों को पहचानना है। • वैयक्तिक सूचना की जानकारी (टेलीफोन न0 घर का पता, आपातकालीन सम्पर्क, आदि) का प्रदर्शन करता है। • समर्थ एवं सक्षम महसूस करते हुए विद्यार्थियों के आत्म-बल को बढ़ाता है।
हिंसा की रोकथाम, संघर्ष का समाधान एवं नशे की रोकथाम	• विविध क्षेत्र से सम्बंधित घटनाओं – लड़ाई, एक-दूसरे को परेशान करने से प्रारम्भ होकर गोली चलाने तक के बारे में परिचर्चा करना और बच्चों से उनकी राय मांगना। • उपचारात्मकता के बजाय रोकथाम पर ध्यान केन्द्रित करना। • हिंसा की रोकथाम, नशा, समूह गतिविधियों पर कार्यक्रम एवं वर्कशाप आयोजित करना। • नशे का प्रयोग, हिंसक कार्यों, आदि पर समूह परिचर्चा।	• संघर्ष समाधान कौशलों का प्रयोग करना सीखता है । • समकक्ष साथियों के नकारात्मक साथ से दूर रहना सीखना। • हिंसा एवं नशे के नकारात्मक पहलुओं के विषय में जागरुकता प्राप्त करते हैं एवं सुरक्षित रहना सीखते हैं।
माध्यमिक विद्यालय में संक्रमण हेतु तैयार करना	• संक्रमण अवधि (मित्र बनाना, स्वतंत्रता, आदि) में कार्यों का सामना करने के लिए पर्याप्त वैयक्तिक एवं सामाजिक संसाधनों तथा कौशलों को उपलब्ध कराना।	• जीवन की अगली विकासात्मक अवस्था का विश्वास के साथ सामना करना सीखता है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समग्र विकास में योगदान देना	• बच्चों की दृश्य –श्रवण सम्बंधी, लिखने, बोलने या गणना करने में बोधात्मक कमी, ध्यान देने में कमी, अति-सक्रियता, स्मरणशक्ति में कमी, आदि को उपचारीय परीक्षणों की सहायता से या बच्चों का अवलोकन करके पहचानना। • बच्चों एवं अभिभावकों के साथ परीक्षणों, अवलोकन एवं साक्षात्कार के द्वारा योग्यता /विशेष योग्यता/कमी/ असमर्थता के स्तर का उपचार करना। • अक्षम व्यक्तियों के स्वास्थ्य लाभ के लिए सामुदायिक संसाधनों, योजनाओं एवं कार्यक्रमों का उपयोग करना।	• अपनी सीमाबद्धता का सामना करना। • बच्चे अपनी ताकतों एवं सामर्थ्य का पूर्ण प्रयोग करना सीखते हैं। • आत्म-विश्वास प्राप्त करते हैं।

प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए शिक्षा, रोकथाम, पूर्व पहचान एवं हस्तक्षेप प्रदान करते हुए विद्यालयी परामर्शदाता बाद के वैयक्तिक एवं सामाजिक कॅरियर एवं शैक्षिक सफलता की नींव डालते हैं।

2.7.2 माध्यमिक स्तर हेतु मार्गदर्शन गतिविधियाँ

माध्यमिक स्तर में 14 से 16 वर्ष के बच्चे जो IX एवं X कक्षाओं में पढ़ते हैं, उन्हें शामिल किया जाता है। इस अवधि में तीव्र गति से शारीरिक विकास एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों के कारण इसे संक्रमण की अवस्था कहा जाता है। इस अवधि में व्यक्ति बहुत से परिवर्तनों जिनमें यौवनारंभ से सम्बंधित शारीरिक परिवर्तन, परिवार एवं साथियों के साथ सम्बन्धों में परिवर्तन और सामाजिक एवं शैक्षिक परिवर्तन शामिल हैं, इन सबका अनुभव करते हैं।

बाल्यावस्था से किशोरावस्था में संक्रमण के समय विद्यार्थी विविध अभिरुचियों के अन्वेषण की आवश्यकता के द्वारा विशेषित होते हैं। वे कक्षा में अपने अधिगम के प्रायोगिक रूप को अपने जीवन एवं कार्य से सम्बन्धित करके प्रयोग करना चाहते हैं। वे अपने लिए प्राय: विशिष्ट पहचान की तलाश में रहते हैं और वे सलाह तथा सहमति के लिए माता-पिता के बजाय ज्यादातर साथियों के पास जाते हैं। बहुत-से युवा दूसरे लोगों के द्वारा की गई टिप्पणियों पर अत्यंत संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं। अधिकतर विद्यार्थी आराम, समझ एवं सहमति पाने के लिए मुख्य रूप से मित्रों पर आश्रित रहते हैं (ASCA, राष्ट्रीय प्रतिमान 2003)। इस अवस्था में तार्किक कौशलों और निर्णय लेने की क्षमता में भी वृद्धि होती है लेकिन विद्यार्थियों के अधिकतर खतरनाक व्यवहारों में लगे रहने की भी संभावना होती है।

इस अवस्था के दौरान विद्यार्थी बहुत सारे शैक्षिक एवं सामाजिक दबावों का सामना करते हैं जो इस अवधि को तनावयुक्त बनाता है। यह समय अधिक स्वतंत्रता एवं जिम्मेदारियों की आवश्यकता के साथ-ही-साथ व्यवहार के वयस्क तरीकों को अपनाने की इच्छा से जाना जाता है। परामर्शदाता विद्यालय वातावरण को सुरक्षित बनाने

में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं जहाँ हिंसा, उत्तेजक व्यवहार और अन्य नकारात्मक पहलुओं के घटित होने की न्यूनतम संभावना हो। यह विद्यार्थियों के लिए माध्यमिक स्तर के अनुभवों को सफल बनाने में सहायक होगी। इसे विद्यालय में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं पर केन्द्रित करके विद्यालय के अनुसार मार्गदर्शन कार्यक्रम बनाकर किया जा सकता है।

निम्नलिखित उद्देश्य एवं गतिविधियाँ कुछ उपयोगी सुझाव हैं जो एक परामर्शदाता को विद्यार्थियों के लाभ हेतु माध्यमिक स्तर पर मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित करने में सहायता प्रदान करेंगे।

शैक्षिक विकास

सामर्थ्य क्षेत्र/उद्देश्य	**गतिविधियाँ**	**विद्यार्थियों के लिए लाभ**
शैक्षिक/अध्ययन कौशलों/आदतों/ अभिवृत्तियों, आदि का विकास	• विद्यार्थियों को सक्रिय एवं प्रायोगिक अधिगम, कार्यशाला का आयोजन करना, परियोजना, आदि में शामिल करके अधिगम में सकारात्मक अभिरुचि उत्पन्न करना। • स्मरणशक्ति, आदि के लिए विभिन्न अधिगम शैलियों, तकनीकों से पढ़ाना। • विद्यार्थियों को वार्ता, अध्ययन से सम्बन्धित विषयों पर दूसरों से चर्चा करना एवं सुनने के लिए प्रोत्साहन हेतु समूह मार्गदर्शन सत्रों का प्रयोग करना। • विद्यार्थियों को सृजनात्मक एवं विशिष्ट ढंग से समस्या समाधान के बारे में शिक्षण देने हेतु एक प्रभावशाली उपागम 'brain-storming' का प्रयोग करना। • कार्यशाला के आयोजन के द्वारा विद्यार्थियों के आत्म-ज्ञान, आत्म-स्वीकृति हेतु शिक्षण एवं आत्म-अनुदेशन में वृद्धि करना।	• शैक्षिक सफलता के लिए आवश्यक अध्ययन कौशलों के प्रयोग को सीखते हैं। • विद्यालयी प्रदर्शन को सकारात्मक ढंग से प्रभावशाली बनाने हेतु अधिगम शैलियों के ज्ञान का प्रयोग करते हैं। • विद्यालय,अध्ययन, पाठ्यसहगामी गतिविधियों में संतुलन कायम करने की योग्यता का प्रदर्शन करते हैं।
परीक्षण लेने का कौशल	• मित्रवत् रूप में प्रश्नोत्तर विधि के द्वारा विद्यार्थियों को परीक्षण हेतु अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करना। • परीक्षण के समय एवं उससे पहले चिंता को दूर करने के लिए अध्ययन की दिनचर्या बनाना। • लगातार अध्ययन के बीच में विद्यार्थियों को आराम के लिए समय देना।	• विद्यार्थी कार्य एवं उपलब्धि में आत्माभिमान महसूस करना सीखते हैं। • विद्यार्थी परीक्षण के समय पूर्णतया तैयार एवं शांति महसूस करते हैं।

आलोचनात्मक वैचारिक कौशलों को उत्कृष्ट बनाना	• विद्यार्थियों को नियमित रूप से तर्क एवं वैचारिक अभ्यास प्रदान करना। • परिस्थितियाँ उत्पन्न करके विद्यार्थियों को निर्णय देने एवं विश्लेषण करने के लिए कहना।	• आलोचनात्मक वैचारिक कौशलों को सीखते एवं प्रयोग करते हैं। • एक घटना के निरीक्षण में बहस करना एवं विचार व्यक्त करना सीखते हैं। • अन्तर्दृष्टि/सहज ज्ञान विकसित करते हैं।
निर्णय लेना	• विद्यालयी विषयों के साथ बाद की शैक्षिक योजनाओं को सम्बन्धित करके चुनौतीपूर्ण शैक्षिक लक्ष्यों के निर्माण में किशोरों की सहायता करना। • रोल प्ले के बाद उनसे रोल प्ले करने, परिस्थितियाँ उत्पन्न करने एवं निर्णय की व्याख्या करने को कहना।	• अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेना सीखते हैं। • विद्यार्थियों की योग्यता, सामर्थ्य तथा आत्मविश्वास में सुधार होता है।
कॅरियर विकास		
सामर्थ्य क्षेत्र /उद्देश्य	**गतिविधियाँ**	**विद्यार्थियों को लाभ**
कॅरियर का अन्वेषण	• वास्तविक कार्य स्थान के निरीक्षण, पुस्कालय स्रोतों, अखबार, इन्टरनेट, आदि के द्वारा विद्यार्थियों को कार्य के संसार से परिचित कराना। • इस प्रकार के प्रकरणों जैसे – 'जीवन हेतु आवश्यकता / कॅरियर योजना', 'खाली समय का उपयोग', शौक विकसित करना, समय प्रंबधन के लिए कौशल, अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आदत बनाना, आदि पर परिचर्चा करना।	• कॅरियर योजना सूचना प्राप्त करने के लिए विविध स्त्रोतों का प्रयोग करना सीखते हैं। • विद्यार्थियों को भावी कॅरियर लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए योजनाओं से अवगत कराया जाएगा।
विविधता और कॅरियर निर्णय	• नियोजन तत्परता का विकास करना। • व्यावसायिक अन्वेषण हेतु विषय से सम्बन्धित क्षेत्रों में परियोजना कार्य या नौकरी पर लगे व्यक्तियों से साक्षात्कार निरीक्षण के द्वारा इस विषय पर	• विद्यार्थी परम्परागत और गैर-परम्परागत व्यवसायों का विश्लेषण करना सीखते हैं और उन्हें अपने कॅरियर निर्णय से सम्बंधित करते हैं।

	अध्ययन करके, प्रदर्शन सामग्री तैयार करके या कॅरियर मैगजीन, नौकरी से सम्बन्धित पोस्टर्स, चार्ट, कॅरियर प्रदर्शनी के आयोजन, आदि अवसरों को उपलब्ध कराना। • अपने व्यवसायों में अच्छी तरह से स्थापित व्यक्तियों को आमंत्रित करके विद्यार्थियों के साथ उनके व्यवसायों / जीवन शैलियों पर परिचर्चा करना।	• कार्य के संसार की विविधता और इसकी आवश्यकताओं को समझते हैं।
कार्य के संसार के संदर्भ में स्वयं को समझना	• विद्यार्थियों को शैक्षिक एवं उससे सम्बंधित क्षेत्रों में अभिरुचि का विश्लेषण करने में सहायता करना और अपनी शैक्षिक योग्यता के आधार पर कॅरियर चयन हेतु पहचान करने एवं योजना बनाने में सहायता करना। • मनोवैज्ञानिक परीक्षणों एवं गैर-परीक्षण उपकरणों का प्रयोग करते हुए योग्यता, अभिरुचि, वैयक्तिक गुणों को पहचानने में सहायता करना। • शैक्षिक एवं व्यावसायिक सूचना को उपलब्ध कराना।	• शैक्षिक उपलब्धि एवं कॅरियर सफलता के बीच सम्बन्ध को समझना। • कॅरियर अभिरुचि, सामर्थ्य से सम्बंधित पाठ्यचर्या का चयन करना।
वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास		
सामर्थ्य क्षेत्र /उद्देश्य	**गतिविधियाँ**	**विद्यार्थियों को लाभ**
चरित्र शिक्षा	• प्रभावशाली जीवन के लिए व्यक्तित्व विशेषकों / मूल्यों को समझना एवं पहचानना। • विविध रोल मॉडल्स एवं कहानियों के द्वारा अच्छे विशेषकों को विकसित करने के महत्व को बताना।	• सही तरीके से जीवन की समस्याओं का सामना करना सीखते हैं। • विद्यार्थियों में आत्म-अनुशासन को प्रोत्साहित करता है।

किशोरावस्था की अपेक्षाओं का सामना करने के लिए कौशल	• ''साथियों के दबाव'' से आप क्या समझते हैं '? साथियों के दबाव एवं इसका शिकार बनने को कैसे कम किया जा सकता है? आदि पर परिचर्चा सत्र रखना। अच्छे सम्प्रेषण के कौशलों को सिखाना। • दबाव एवं द्वन्द्व को नियंत्रित करने के लिए तकनीकों एवं युक्तियों को सिखाना। • विद्यार्थियों को लैंगिकता, विपरीत लिंग की तरफ आकर्षण जैसे मामलों को सामान्य घटना के रूप में समझने योग्य बनाना। • अभिभावकों, मित्रों एवं अन्य वयस्कों के साथ संतोषपूर्ण सम्बन्ध कायम करने के लिए 'brain – storming' सत्रों का आयोजन करना।	• वैयक्तिक ताकतों एवं गुणों की पहचान करते हैं। • विपरीत लिंग के विषय में चिंता को कम करते हैं। • लिंग-सम्बंधी सोच-विचार पर कम ध्यान देकर स्वस्थ मित्रता रखते हैं। • जीवन के प्रति समग्र दृष्टिकोण रखना सीखते हैं। • समस्याओं का सामना करने वाले कौशलों में सुधार करते हैं। • वैकल्पिक विचारों का सम्मान करना सीखते हैं। • बोलना, सुनना तथा गैर-भाषिक व्यवहार को अपनाते हुए सम्प्रेषण कौशलों को सीखते हैं।
हिंसा की रोकथाम, द्वन्द्व समाधान एवं नशे की रोकथाम के लिए जीवन कौशल एवं योजनाएँ	• हिंसा, द्वन्द्व आदि पर छोटे-छोटे समूहों में रोल प्ले करना। रोल प्ले के बाद विद्यार्थियों को यह सुनिश्चित करना है कि यह गतिविधि उनके लिए 'सुरक्षित' या 'असुरक्षित' थी। • साथियों द्वारा मध्यस्थता समूहों का निर्माण करना। • ड्रग्स, शराब एवं धूम्रपान आदि से सम्बन्धित मुददों पर परिचर्चा करना।	• शांतिपूर्ण तरीके से द्वन्द्व का समाधान करना सीखते हैं। • साथियों के दबाव का सामना करना सीखते हैं। • नशीले पदार्थों एवं इसके प्रयोग के सांवेगिक एवं शारीरिक खतरे के बारे में सीखते हैं।
वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास को बढ़ाना	• परिचर्चा एवं रोल प्ले के द्वारा विद्यार्थियों को आक्रामकता, हठधर्मिता एवं शर्मीलापन के बीच अन्तर को समझने में सहायता करना।	• साथियों के सहयोग की आवश्यकता वाली परिस्थितियों एवं विशेषज्ञों से मदद हेतु आवश्यकता वाली परिस्थितियों के बीच अन्तर स्पष्ट करना सीखते हैं।

इस अवस्था के विद्यार्थियों के लिए यह अपेक्षा की जाती है कि एक व्यापक मार्गदर्शन कार्यक्रम विद्यार्थियों को शैक्षिक सफलता प्राप्त करने एवं बाद में कॅरियर एवं व्यक्तिगत जीवन में सफलता हासिल करने में समर्थ बना सकता है।

2.7.3 उच्चतर माध्यमिक तथा वरिष्ठ माध्यमिक स्तर हेतु मार्गदर्शन गतिविधियाँ

जिन विद्यालयों में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शन कार्यक्रम उपलब्ध हैं वहाँ मार्गदर्शन कार्यक्रम की अधिकतर गतिविधियाँ वरिष्ठ माध्यमिक स्तर तक जारी रहती हैं। तथापि इन अंतिम कक्षाओं में विशेष रूप से आवश्यक कुछ गतिविधियों का उल्लेख करना आवश्यक है। इसमें XI एवं XII की कक्षाएँ शामिल होती हैं और यह किशोरावस्था से युवावस्था में संक्रमण का अन्तिम चरण है जहाँ विद्यार्थी जीवन के सभी पहलुओं के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं। विद्यार्थियों को वृहत् संसार में प्रवेश करने के लिए विद्यालय छोड़ने को तैयार होना पड़ता है। यह अवस्था उनके शैक्षिक एवं व्यावसायिक भविष्य के बारे में अत्यधिक अनिश्चितताओं का द्योतक होता है। शैक्षिक एवं कॅरियर अवसरों के बहुत सीमित होने के कारण उन्हें अपने वरीयता के शैक्षिक या कॅरियर क्षेत्रों में प्रवेश की अनिश्चितता को लेकर अत्यधिक चिन्ता रहती है। मार्गदर्शन कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वयं तथा व्यावसायिक अन्वेषण हेतु अवसरों को उपलब्ध कराकर उन्हें अपने वास्तविक तथा व्यावसायिक सम्प्रत्ययों को अर्जित करने में सहायता करना है।

प्रत्येक अवस्था के लिए चर्चा की गई गतिविधियों एवं उद्देश्यों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिन्हें अपने विद्यालयी व्यवस्था की आवश्कताओं के अनुसार परामर्शदाताओं द्वारा अपनाया या सुधार किया जा सकता है।

वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास

सामर्थ्य क्षेत्र /उद्देश्य	गतिविधियाँ	विद्यार्थियों को लाभ
शैक्षिक/अध्ययन कौशलों का विकास	• विद्यार्थियों को विविध स्त्रोतो से शैक्षिक सूचना को प्राप्त करने, संगठित करने एवं प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित करना।	• विद्यार्थी सफल अधिगम की तरफ जाने के लिए अभिवृत्तियों एवं व्यवहारों की पहचान करते हैं।

	• विद्यार्थियों को सक्रिय एवं प्रायोगिक अधिगम में शामिल करके, कार्यशाला, परियोजना कार्य, आदि के आयोजन के द्वारा सकारात्मक अभिरुचि उत्पन्न करना। • स्मरणशक्ति आदि के लिए विभिन्न अधिगम शैलियों एवं तकनीकों को सिखाना। • विद्यार्थियों को आलोचनात्मक विचार उत्पन्न करने वाले विषयों पर वार्ता, चर्चा एवं दूसरों के विचारों को सुनने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु समूह मार्गदर्शन सत्रों का प्रयोग करना। • अंत: वैयक्तिक कौशलों का विकास करना।	• आत्म-निर्देशित एवं स्वतन्त्र प्रशिक्षु हो जाते हैं। • विद्यालय, अध्ययन एवं सहपाठ्यगामी गतिविधियों के बीच संतुलन की योग्यता प्रदर्शित करते हैं। • वे सम्प्रेषण में बोलना, सुनना एवं गैर-भाषीय व्यवहार को समझते हैं।
माध्यमिक के बाद शैक्षिक योजना	• इश्तेहार /हस्तपुस्तिका देकर विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं के बारे में परिचय देना।	• माध्यमिक स्तर के बाद के विकल्पों को अभिरुचि, अभिक्षमता, अभिवृत्ति एवं योग्यता के अनुरूप पहचानते हैं।
निर्णय लेना	• विद्यार्थियों के लिए छोटे कार्यों एवं परियोजनाओं की योजना बनाना एवं कार्य देना ताकि उनके सामर्थ्य का पूर्णतया उपयोग हो सके। • किशोरों को चुनौतीपूर्ण शैक्षिक लक्ष्यों को स्थापित करने में सहायता प्रदान करना।	• शैक्षिक लक्ष्यों की उन्नति का आकलन करने के लिए समस्या समाधान एवं निर्णय लेने के कौशलों का प्रयोग करते हैं। • अपने कार्य के लिए जिम्मेदारी लेना सीखते हैं।
	• विद्यार्थियों को नियमित रूप से तार्किक अभ्यासों को देना, जैसे brain storming , प्रश्नोत्तरी आदि।	• विद्यार्थियों के सामर्थ्य, सक्षमता और आत्मविश्वास में सुधार होता है।

आलोचनात्मक विचार	• परिस्थितियाँ प्रदान करके विद्यार्थियों को निर्णय देने एवं विश्लेषण करने को कहना।	• आलोचनात्मक विचार का प्रयोग करना सीखते हैं। • एक घटना के बारे में सही ढंग से बहस करना, विचार करना एवं अवलोकन करना सीखते हैं। • अन्तर्दृष्टि विकसित करना।
किशोरावस्था से वयस्क अवस्था में संक्रमण	• विद्यार्थियों को चरित्र विशेषकों, नियोजनात्मक कौशलों, आदि की आवश्यकता को समझने में सहायता करना।	• संक्रमण अवधि का सामना करने के लिए आवश्यक जानकारियाँ देने के पश्चात् विद्यार्थी बाह्य पर्यावरण में प्रवेश करना आसान समझते हैं। • विद्यालय से कार्य /विद्यालय से उच्च अध्ययन में संक्रमण हेतु सफलतापूर्वक तालमेल कायम करना सीखते हैं।
कॅरियर विकास		
सामर्थ्य क्षेत्र /उद्देश्य	**गतिविधियाँ**	**विद्यार्थियों को लाभ**
कॅरियर अन्वेषण	• कार्य के संसार के विषय में व्यापक जानकारी देने के लिए कॅरियर मार्गदर्शन कक्षाएँ एवं कार्यशाला आयोजित करना। • कार्य के विविध क्षेत्रों से व्यक्तियों को परिचर्चा के लिए आमंत्रित करना। • कॅरियर पर प्रदर्शनी एवं फिल्म दिखाने का आयोजन करना। • सामुदायिक एजेन्सियों, नियोजक के साथ सलाह/अग्रप्रेषण एवं विद्यालय छोड़ने वालों का फॉलो-अप करना।	• कार्य स्थान में जिम्मेदारी, विश्वसनीयता, नियमितता, सत्यनिष्ठा एवं प्रयास के महत्व को समझना। • कॅरियर अभिरुचियों से सम्बन्धित पाठ्यचर्या का चयन करना।

कॅरियर निर्णय एवं योजना	• नियोजन तत्परता का विकास। • नौकरी से सम्बन्धित सूचना उपलब्ध करने के लिए संस्थाओं/ संगठनों के विशेषज्ञों के साथ कॅरियर चर्चा/ कार्यशाला, कॅरियर योजना सप्ताह की प्रदर्शनी आदि के द्वारा विविध प्रशिक्षण पाठ्यचर्यी एवं व्यवसायों की आवश्यकताओं को वैयक्तिक कारकों से सम्बन्धित करना। • नौकरी तलाश करने से सम्बन्धित कौशलों जैसे अपने विषय में सार तैयार करना, साक्षात्कार में कैसे शामिल हों, आदि में प्रशिक्षण देना। • नौकरी के क्षेत्र की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कौशलों के अर्जन हेतु तैयार करने में विद्यार्थियों की सहायता करना।	• अभिरुचि के क्षेत्र में सामर्थ्य का विकास करते हैं। • शैक्षिक योग्यता के अनुसार कॅरियर योजनाओं का आकलन करते हैं। • कॅरियर परिपक्वता का विकास करना।
विविधता एवं कॅरियर निर्णय	• कॅरियर सूचना प्राप्त करने के तरीकों का प्रयोग। नए एवं उभरते हुए व्यवसायों के विषय में जानकारी देने पर बल देना। • व्यापक क्षेत्र के कॅरियर निर्णय/ विकल्पों को जानने की आवश्यकता के विषय में विद्यार्थियों से परिचर्चा करना।	• किस प्रकार से परिवर्तनशील आर्थिक एवं सामाजिक आवश्यकताएँ नियोजन प्रचलनों एवं भावी प्रशिक्षण को प्रभावित करते हैं, उसको समझना। • विद्यार्थियों को कार्य स्थल की परिवर्तनशील प्रकृति को समझने योग्य बनाना जिसकी जीवनपर्यंत अधिगम एवं नौकरी के जरूरतों में आवश्यकता होती है।
वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास		
सामर्थ्य क्षेत्र /उद्देश्य	**गतिविधियाँ**	**विद्यार्थियों को लाभ**
आत्म-ज्ञान को सुसाध्य बनाना	• आकलन प्रक्रिया का प्रयोग करके विद्यार्थियों की योग्यता, अभिक्षमता, व्यक्तित्व की विशेषताओं, आदि को समझना।	• अल्प कालिक एवं दीर्घकालिक लक्ष्यों की योजना बनाने में समर्थ होना।

	• समूह मार्गदर्शन गतिविधियों जैसे कार्यशाला, समूह परिचर्चा, आत्म-जागरुकता एवं आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए आयोजन करना।	• जीवन की घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए इनका सामना करने वाले कौशलों को सीखते हैं।
सामाजिक कौशल	• संप्रेषण कौशलों को सुधारने, निश्चयात्मकता के लिए प्रशिक्षण आदि के विषय में कार्यक्रम आयोजित करना । विविध वैयक्तिक एवं सामाजिक समस्याओं के उपचार हेतु समूह /व्यक्तिगत परामर्श एवं साथियों द्वारा परामर्श का प्रयोग करना।	• विद्यार्थी परिवर्तनशील वैयक्तिक सामाजिक एवं पारिवारिक भूमिकाओं को पहचानना एवं परिचर्चा करना सीखते हैं। • लक्ष्य को हासिल करने के लिए वैकल्पिक तरीकों की पहचान करते हैं। • नियमों, कानूनों, सुरक्षा तथा व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा के बीच सम्बंध के बारे में सीखते हैं।
हिंसा की रोकथाम, द्वन्द्व समाधान एवं नशे की रोकथाम	• विविध प्रकार के हिंसक व्यवहारों पर समूह परिचर्चा एवं अर्थापत्ति जिसकी बड़ी कीमत अदा करनी पड़ती है। • उत्तेजनात्मक कार्यों में लिप्त होने से प्राप्त परिणाम जो जीवन को बर्बाद कर सकते हैं, उन पर परिचर्चा। • नशे के विषय में वार्ता का आयोजन करना और इसके नकारात्मक प्रभाव को जानने के लिए नशा –मुक्ति केन्द्रों पर जाना। • विद्यार्थियों को समस्याओं का सामना करने की योजनाओं, तनाव तथा क्रोध प्रबधंन कौशलों, आदि को सीखने में सहायता देने हेतु परिचर्चा सत्रों का आयोजन करना।	• परेशान करने, लड़ने, आत्महत्या, आदि के नकारात्मक परिणामों के बारे में जागरुकता प्राप्त करते हैं। • विद्यालय में विद्यार्थियों की सुरक्षा की भावना, हिंसक एवं गैर-हिंसक व्यवहारों के प्रति अभिवृत्ति में परिवर्तन आता है।

	• द्वन्द्वों के समाधान के लिए अभिभावकों के साथ मुलाकात का प्रबंध करना । • बिना लड़ाई के क्रोध को नियंत्रित करने के लिए brain storming का प्रयोग करना। • रोल प्ले :- विद्यार्थियों को एक विशेष प्रकार की द्वन्द्व समाधान की परिस्थिति दीजिए जिसमें एक व्यक्ति लड़ना चाहता है और दूसरा रोल प्ले में शांतिपूर्ण समाधान करने की कोशिश करता है । रोल प्ले के पश्चात् इस पर परिचर्चा एवं विश्लेषण कीजिए ।	• परिवार के साथ आनंददायक अन्योन्यक्रिया करने में समर्थ होते हैं ।

उच्चतर माध्यमिक अवस्था विकास, संभावना, उत्तेजना, विक्षिप्तता, निराशा एवं आशा से भरी होती है (ASCA प्रतिमान,2003) । इस अवस्था में विद्यार्थियों को वैयक्तिक एवं सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने और उपयुक्त कॅरियर लक्ष्यों की स्थापना करने और इस प्रकार समुदाय एवं समाज हेतु व्यापक स्तर पर उनके योगदान के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम अति आवश्यक हैं ।

एक समग्र मार्गदर्शन कार्यक्रम गतिविधियों एवं सेवाओं को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराता है जिसमें आकलन, सूचना परामर्श, सलाह, अग्रप्रेषण, नियोजन, फॉलो-अप एवं मूल्यांकन शामिल हैं। कार्यक्रम विद्यार्थियों के सामर्थ्य को केन्द्रित करता है जिसका उद्देश्य उनकी कमियों पर ध्यान देने के बजाय उनकी ताकतों को बढ़ाना होता है । जैसा कि मार्गदर्शन कार्यक्रम सभी स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक) पर जुड़ा हुआ है इसलिए कार्यक्रम की निरन्तरता को कायम रखना है और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं पर समुचित ध्यान देने की अपेक्षा की जाती है ।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास 2

निम्नलिखित का मिलान कीजिए : -

1 मार्गदर्शन पाठ्यचर्या : 1 संकटकालीन परामर्श, अग्रप्रेषण, सलाह ।

2 वैयक्तिक विद्यार्थी योजना : 2 कार्यक्रम प्रबंधन, आंकड़ों का विश्लेषण, प्रलेखन ।

3 प्रतिक्रियाशील सेवाएँ : 3 समीक्षा, सलाह देना, नियोजन ।

4 व्यवस्था सहयोग : 4 कक्षा-अनुदेशन, छोटे समूहों में परिचर्चा करना ।

2.8 सारांश

एक मार्गदर्शन कार्यक्रम को विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास को सुसाध्य बनाने के लिए गतिविधियों के तारामंडल (समूह) के रूप में निर्मित करना चाहिए । इस प्रकार के कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए अनेक बिंदुओं पर

विचार करना आवश्यक होता है। बच्चों और समाज की जरूरतों /माँगों की विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मार्गदर्शन गतिविधियों को योजित करना है। विद्यार्थियों की समस्याओं एवं आवश्यकताओं का सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। यह अति आवश्यक है क्योंकि कार्यक्रम के लक्ष्य, उद्देश्य, क्रियान्वयन योजनाएँ एवं मूल्यांकन तकनीकें निर्धारित किए गए समूह की आवश्यकताओं पर निर्भर होते हैं। विद्यालयी परामर्शदाताओं को आवश्यकता के आकलन की प्रक्रिया से पूर्ण रूप से परिचित होना चाहिए। उन्हें विद्यालय में और विद्यालय के बाहर उपलब्ध स्रोतों का अपने कार्य में प्रयोग करने के संदर्भ में अपने तरीके से सर्वेक्षण भी करना चाहिए।

मार्गदर्शन कार्यक्रम के विविध प्रतिमान हैं। कुछ विद्यालयों में पूर्णकालिक परामर्शदाता हैं जबकि कुछ में शिक्षक परामर्शदाता हैं और इसमें से अधिकतर विद्यालयों में केवल कॅरियर शिक्षक हैं। मार्गदर्शन के मुख्य निवेश क्षेत्र क्रियान्वित किए जा रहे प्रतिमान के आधार पर अलग-अलग होंगे।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास

1. एक मार्गदर्शन कार्यक्रम की आवश्यकताओं के आकलन में आपके द्वारा ध्यान दिए जाने वाले चरणों की व्याख्या कीजिए।
2. एक व्यापक विद्यालय मार्गदर्शन कार्यक्रम के आवश्यक घटक क्या हैं ?
3. शैक्षिक विकास के लिए विद्यालय के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर एक मार्गदर्शन कार्यक्रम की गतिविधियों को उनके विशेष उद्देश्यों के साथ रेखांकित कीजिए।

आत्म- मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु

1-निम्नलिखित चरणों की विस्तृत रूप से व्याख्या कीजिए:

- एक योजना समिति का गठन करना
- मार्गदर्शन कार्यक्रम के उद्देश्यों की व्याख्या करना
- प्रयोग किए जाने वाले उपकरणों की पहचान करना
- उपकरणों का प्रबन्ध करना
- परिणामों को क्रियान्वित करना
- फॉलो अप

2-एक मार्गदर्शन कार्यक्रम के निम्नलिखित घटकों की व्याख्या करना :

- मार्गदर्शन पाठ्यचर्या
- वैयक्तिक विद्यार्थी योजना

- प्रतिक्रियाशील सेवाएँ
- व्यवस्था में सहयोग

3- वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास

सामर्थ्य क्षेत्र/ उद्देश्य	**गतिविधियां**
शैक्षिक अध्ययन कौशल	• विद्यार्थियों को विविध प्रकार के स्रोतों से शैक्षिक सूचनाओं को प्राप्त करना, संगठित करना एवं प्रयोग करने में प्रशिक्षण देना। • विद्यार्थियों को सक्रिय एवं प्रायोगिक अधिगम में शामिल करके वर्कशॉप, परियोजना, आदि के द्वारा सकारात्मक अभिरुचि उत्पन्न करना। • स्मरणशक्ति आदि के लिए विभिन्न अधिगम शैलियों एवं तकनीकों को सिखाना। • विद्यार्थियों के लिए आलोचनात्मक विचार एवं समस्या समाधान उत्पन्न करने वाले विषयों पर वार्ता, चर्चा एवं दूसरों के विचारों को सुनने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु समूह मार्गदर्शन सत्रों का प्रयोग करना।
उच्चतर माध्यमिक के बाद की शैक्षिक योजना	• इश्तेहार / हैंडबुक देकर विविध शैक्षिक संस्थानों के विषय में परिचित कराना। • विद्यालयी विषयों एवं अन्य गतिविधियों तथा विद्यालय के बाद शैक्षिक एवं कॅरियर अवसरों के बीच सम्बन्ध स्थापित करना।
निर्णय लेना	• विद्यार्थियों को छोटे-छोटे कार्य एवं परियोजनाओं को करने के लिए देना ताकि उनकी क्षमताओं का पूर्णतया उपयोग किया जा सके। • किशोरों को चुनौतीपूर्ण शैक्षिक लक्ष्यों को स्थापित करने में सहायता करना।
आलोचनात्मक विचार	• विद्यार्थियों को नियमित रूप से तार्किक अभ्यास देना। • विद्यार्थियों को विविध प्रकार की परिस्थितियों को प्रदान करके उनसे निर्णय देने एवं विश्लेषण करने के लिए कहना।
विद्यार्थी से वयस्क में संक्रमण	• चरित्र एवं नियोजनात्मकता कौशलों के संदर्भ में समाज की आवश्यकताओं को समझने में विद्यार्थियों की सहायता करना। • किशोरों में वृत्ति परिपक्वता का विकास।

आत्म- निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिंदु –

आत्म-निरीक्षण अभ्यास -1

विशेषज्ञ परामर्शदाता

- एक व्यावसायिक रूप से शिक्षित व्यक्ति
- पूर्णकालिक परामर्शदाता के रूप में कार्यरत

कॅरियर शिक्षक

- अल्पकालिक प्रशिक्षित एक शिक्षक
- विद्यार्थियों को कॅरियर सूचना उपलब्ध कराता है।

शिक्षक- परामर्शदाता

- मार्गदर्शन एवं परामर्श में प्रशिक्षित शिक्षक
- एक विद्यालयी व्यवस्था में शिक्षक एवं परामर्शदाता के रूप में कार्य करता है।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास -2

iv 2. iii 3. i 4. ii

संदर्भ पुस्तकें

- American School Counselor Association. 2003. The ASCA national model:
- A framework for school counseling programs. Professional School Counselling. 6 (3), 165-168.
- American School Counselor Association. 2004. The Role of the Professional School Counsellor. Alexandria.
- Bhatnagar, A. and Gupta, N. (Eds.). 1999. Guidance and Counselling: A Practical Approach. (Vol.1). Vikas Publishing House. New Delhi.
- Mooney R.L. and Gordon L.V. 1950. Problem Checklist. Psychological Corporation. New York.
- Rimmer, S. M. and Burt, M. A. 1980. Needs assessment: A step-by-step approach. The School Counsellor. November, 59-62.

पठनीय पुस्तकें

- Arizona Department of Education. 2007. Handbook of the Arizona Model: A Framework for School Counselling Programs. Phoenix, AZ.

- Caroll, M. R. 1980. Standards for guidance and counselling programs. The School Counsellor. November, 86-86.
- Gibson R. L. and Mitchell, M. H. 2007. Introduction to Counselling and Guidance. Prentice Hall. New Jersey.
- Gysbers, N. and Hendersons, P. 1988. Developing and Managing Your School Guidance Program. American Association for Counseling and Development. Alexandira, VA.
- Humes, G. W. and Hohenshil, T. H. 1987. Elementary counselors, school psychologists, school social workers: Who does what? Elementary School Guidance and Counselling. 22, 37-45.
- Iowa Department of Education. 2008. Iowa School Counselling – A Program Framework: One Vision, One Voice. Des Moines.
- Massachusetts Department of Education. 2006. Massachusetts Model for Comprehensive School Counselling Programs. Amherst.
- Kellett, M. and Nind, M. 2003. Implementing Intensive Interaction in Schools: Guidance for Practitioners, Managers and Coordinators. David Fulton. London, UK.
- Scales, P. C. 2005. Developmental assets and the middle school counselor. Professional School Counselling. 9(2), 104-110.
- Wigfield, A., Lutz, S. L. and Wagner, A. L. 2005. Early adolescents' development across the middle school years: Implications for school counselors. Professional School Counseling. 9(2), 112-119.

वेबसाइट्स

- www.ade.az.gov
- www.iowaschoolcounselors.org
- www.mtschoolcounselor.org./MT_school_Counseling_Programme_Model/Process_Model.html
- www.masca.org
- www.schoolcounselor.org

3

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

भाग – I **मानसिक रूप से विकृत/बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श**

भाग – II **अधिगम अशक्तता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श**

भाग – III **शारीरिक अशक्तता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श**

भाग – I मानसिक रूप से विकृत/बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

3.0 परिचय

3.1 उद्देश्य

3.2 बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के लक्षण

3.3 बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों की आवश्यकताओं को पहचानना

3.4 बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के लिए मार्गदर्शन

3.5 शैक्षिक मार्गदर्शन के लिए सुझाव

3.6 सामाजिक-सांवेगिक विकास हेतु परामर्श

3.7 पर्यावरणीय हस्तक्षेप

3.8 मानसिक रूप से विकृत बच्चों के माता-पिता के साथ कार्य करना

3.9 मानसिक रूप से विकृत बच्चों के लिए व्यावसायिक पुनर्वास

3.10 सारांश

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास
आत्म-मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु
आत्म-निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिंदु
संदर्भ पुस्तकें

3.0 परिचय

बौद्धिक रूप से अशक्त या मानसिक रूप से विकृत शब्दावली का प्रयोग उन लोगों के विषय में बताने के लिए किया जाता है जिनकी बुद्धि लब्धि (IQ) सामान्य बुद्धि स्तर से नीचे होती है। बौद्धिक अशक्तता वर्तमान समय में इसके लिए वरीयता वाली शब्दावली बन गई है जिसे पहले मानसिक रूप से मंद बुद्धि के रूप में प्रयोग किया जाता था। मानवोचित रूप से व्यक्ति को संबोधित करने के तरीके में परिवर्तन सीमित बौद्धिक क्षमता वाले लोगों के प्रति समाज में सकारात्मक अभिवृत्ति को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह कदम इस प्रकार के लोगों के जीवन में एक बेहतर प्रभाव डाल सकता है।

निम्नलिखित व्यक्ति अध्ययन (case) बौद्धिक रूप से अशक्त एक बच्चे का उदाहरण है।

राजू अपने बड़े भाई रामू की तुलना में बहुत धीरे-धीरे विकसित हुआ जो उसके माता-पिता के लिए चिंता का कारण था। 6 वर्ष की उम्र में उसकी वाक् क्षमता इतनी धीरे-धीरे विकसित हो रही थी कि उसके माता-पिता ने सुनने में कमी का संदेह किया। तथापि ऑडियोलॉजिस्ट को राजू के सुनने में कुछ भी कमी नहीं मिली और राजू को एक मनोवैज्ञानिक के पास अग्रप्रेषित कर दिया जिसने राजू के कई प्रकार के प्रेक्षण किए और एक मानकीकृत बुद्धि परीक्षण किया। बुद्धि लब्धि (IQ) परीक्षण में परीक्षण प्राप्तांक 60 का संकेत दिया जो बुद्धि लब्धि के औसत प्राप्तांक 100 से बहुत नीचे था। यद्यपि कालक्रमानुसार राजू अब 7 वर्ष का है लेकिन वह 3-4 वर्ष के बच्चे के समान कार्य करता है। उसने अपने उम्र के स्तर के लिए आत्म-सहायक आवश्यक कौशलों जैसे –कपड़े पहनना, भोजन करना, व्यक्तिगत स्वास्थ्य आदि को अर्जित कर लिया है लेकिन कभी-कभी वह आक्रामक हो जाता है। राजू मध्यम रूप में बौद्धिक अशक्तता से पीड़ित होने वाला एक बच्चा है।

उपर्युक्त व्यक्ति अध्ययन उस कष्ट का चित्रण करता है जिसे एक सीमित बुद्धि वाले बच्चे को सहना पड़ता है। प्राय: यह समझा जाता है कि सीमित बौद्धिक क्षमता वाले बच्चों की बुद्धि लब्धि सामान्य से नीचे होती है और इस प्रकार के बच्चे सीखने या अपनी देखभाल करने में असमर्थ होते हैं। यद्यपि बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों की बुद्धि लब्धि (IQ) सार्थक रूप से कम होती है और दैनिक कार्यों में बहुत समस्याओं का सामाना करना पड़ता है लेकिन उनमें से बहुत लोग काफी हद तक सीख सकते हैं और एक वयस्क के रूप में कम-से-कम आंशिक रूप में स्वतंत्र जीवन बिता सकते हैं। यह इकाई बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के लक्षणों एवं दैनिक जीवन तथा विद्यालय में उसके सामने उपस्थित होने वाली शारीरिक, वैयक्तिक एवं संवेगात्मक समस्याओं के बारे में चर्चा करती है।

यद्यपि वरीयता की शब्दावली बौद्धिक अशक्तता है फिर भी बौद्धिक एवं विकासात्मक अक्षमता पर अमेरिकन एसोसिएशन (AAIDD, पहले AAMR) के द्वारा घोषित आधिकारिक परिभाषा एवं पूर्वधारणा वैसी ही है जैसा कि मानसिक रूप से मंदबुद्धि के रूप में पाई गई है।

बौद्धिक अशक्तता को एक महत्वपूर्ण उप-औसतीय बौद्धिक कार्य-प्रणाली के रूप में परिभाषित किया गया है जो अनुकूलन व्यवहार की कमी के समवर्ती रहती है (अमेरिकन मनोचिकित्सक संघ 1994)। उप-औसतीय बौद्धिक अशक्तता कार्य-प्रणाली बुद्धि लब्धि से संबंधित है जो मानकीकृत बुद्धि परीक्षण के अनुसार 70 या उससे कम होती है। 55 से 70 के बीच बुद्धि लब्धि प्राप्तांकों वाले व्यक्तियों में मध्यम बौद्धिक अशक्तता होती है

और 40 से 55 के बीच, 25 से 40 के बीच एवं 25 से नीचे बुद्धि लब्धि प्राप्तांकों वाले व्यक्तियों में क्रमश: मन्द, तीव्र, तथा गम्भीर बौद्धिक अशक्तता होती है। अनुकूलक व्यवहार में कमी एक व्यक्ति की सीमितता से संबंधित है जिसमें अपने दैनिक आवश्यकताओं का ध्यान रखने के लिए उसे अन्य लोगों पर निर्भर रहना पड़ता है।

इसका यह तात्पर्य नहीं है कि बौद्धिक अशक्तता वाला एक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं का ध्यान रखने के लिए कभी भी अपने आप में समर्थ नहीं हो सकता है। इस इकाई में इस विषय पर चर्चा की जाएगी कि किस प्रकार से सही सहयोग, शिक्षा एवं प्रशिक्षण के द्वारा वे आंशिक रूप में स्वावलम्बी हो सकते हैं। इस संदर्भ में, अभिभावक, शिक्षक एवं परामर्शदाता मानसिक रूप से विकृत बच्चों को बेहतर जीवन उपलब्ध कराने में एक प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं और वे शिक्षकों के सहयोग से कुछ सीमा तक स्वावलम्बी बन सकते हैं।

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप निम्निलिखित पहलुओं को समझने में सक्षम होंगे :

- बौद्धिक अशक्तता के अर्थ एवं किस प्रकार से वे अन्य बच्चों से अलग होते हैं, इसका वर्णन करने में।
- इस समूह के विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों के द्वारा सामना की जा रही समस्याओं एवं विशेष आवश्यकताओं की व्याख्या करने में।
- उनके प्रबल पक्ष को पहचानना तथा उनके विकास एवं बेहतर समायोजन को बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन एवं गतिविधियों की योजना बनाना एवं आयोजित करना।

3.2 बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के लक्षण

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, बौद्धिक अशक्तता नम्र, मध्यम, तीव्र से प्रचंड स्तरों तक होती है। बौद्धिक अशक्तता के मुख्य लक्षणों में शामिल हैं –

- दैनिक क्रियाकलापों जैसे सांवेदिक एवं चालक समन्वयन, बोधात्मक चालाक कौशलों, स्वयं के देखभाल करना, सामाजिक कौशलों, संप्रेषण, आत्म-निदेशन, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा, क्रियात्मक शिक्षण, आराम एवं कार्य, आदि के लिए अनुकूलन कौशलों की योग्यता में कमी।
- पठन एवं गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कमी के साथ निम्न स्तरीय शैक्षिक उपलब्धि।
- वाणी एवं भाषा के विकास में विलम्ब और सीमित शब्दकोश।
- विक्षिप्तावस्था में निम्न स्तरीय सहनशक्ति।
- ज्यादा देर तक ध्यान न दे पाना/एकाग्रता में कमी।
- सख्त एवं कठोर वातावरण का सामना करने में असमर्थ होना।
- आत्म-विध्वंसक विशेषक।

- किसी कार्य हेतु निम्न स्तरीय प्रेरणा।
- खराब आत्म-प्रतिरूप।

3.3 बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों की आवश्यकताओं को पहचानना

जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं और दैनिक जीवन की गतिविधियों में निपुणता हासिल करना चाहते हैं उन्हें सामान्य बच्चों की तुलना में सहयोग की अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि वे भोजन करना, कपड़े पहनना, नहाना एवं तैयार होने जैसे कार्यों को अपने आप करने में बहुत कठिनाई महसूस करते हैं। चीजों को इस प्रकार की भाषा में व्याख्या करने की आवश्यकता है जिसे वे समझ सकें जैसे अधिगम के लिए बार-बार दोहराने एवं अभ्यास, मूर्त पदार्थों एवं उदाहरणों के प्रयोग की आवश्यकता होती है।

बौद्धिक रूप से अशक्त प्रत्येक बच्चे के विषय में विस्तृत आकलन एवं कार्य योजना को व्यवस्थित रूप से रखना बहुत आवश्यक है। इन बच्चों के विकास को विशेष शिक्षकों, अध्यापकों एवं परामर्शदाताओं के द्वारा निगरानी किए जाने की भी आवश्यकता होती है। इसे क्रियात्मक आकलन उपकरणों के द्वारा किया जा सकता है। पूर्व-प्राथमिक से लेकर पूर्व-व्यावसायिक स्तरों तक के बच्चों के लिए विविध प्रकार के क्रियात्मक आकलन हैं। प्रशिक्षण के क्षेत्रों को पाँच श्रेणियों में रखा गया है। वैयक्तिक, सामाजिक, शैक्षिक, व्यावसायिक एवं मनोरंजनात्मक।

दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्रों (SEAR) के सदस्य देशों में एक मुख्य सकारात्मक विकास यह है कि एक बड़े स्तर पर नम्र बौद्धिक अशक्तता वाले बच्चों का सामान्य विद्यालयी व्यवस्था में अनौपचारिक या नैमित्तिक एकीकरण है। कुछ प्रयासों के साथ यह सुनिश्चित करना संभव है कि इस प्रकार के बच्चों के लिए व्यक्तिगत स्तर पर ध्यान दिया जा सकता है। इसे शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर एवं प्रशिक्षित शिक्षकों को उपलब्ध कराकर किया जा सकता है।

सामान्य विद्यालयी व्यवस्था में एक मानसिक रूप से अशक्त बच्चे को इस प्रकार बहुत-सी समस्याओं का सामना करना होगा जैसे – दूसरे बच्चे उसके रूप-रंग, उनकी तुलना में कमजोर या धीमा होने का मजाक उड़ा सकते हैं। कुछ प्रमुख समस्याएँ नीचे दी गई हैं जिनका एक बच्चे को सामना करना पड़ सकता है:

- माता-पिता के द्वारा अति सुरक्षा जो उन्हें अपने परिस्थिति की सामना करने में असमर्थता की तरफ ले जाती है।
- समकक्ष साथियों एवं दूसरों के द्वारा उपेक्षित/अस्वीकृत किए जाने की भावना।
- बार-बार की असफलता के कारण स्वयं को बेकार समझने की भावना।
- अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असमर्थ होने पर विक्षिप्तता की भावना।
- खराब आत्म-सम्प्रत्यय/निम्न स्तरीय आत्म-प्रतिरूप/नकारात्मक शरीर प्रतिरूप।
- अपने समवय साथियों की तुलना में खेल में बहुत कम अभिरुचि होती है।
- नये कार्यों को करने में भय।

- आक्रामकता, सामान को तोड़ने में लिप्त होना या हास्यजनक शोर करना, आदि।
- अजनबियों के साथ बातचीत करने में समस्या होती है।
- अपनी ताकत या योग्यता के विषय में जानकारी नहीं होती है।
- आसानी से हार मान लेते हैं या प्रयास ही नहीं करते या बहुत कम प्रयास करते हैं।

3.4 बौद्धिक रूप से अशक्तता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन

एक शिक्षक-परामर्शदाता के रूप में आपके लिए मानसिक रूप से विकृत बच्चे की ताकत एवं विशेष योग्यता, अभिरुचि, महत्वाकांक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं अध्ययन की आवश्यकताओं को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। बौद्धिक अशक्तता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन में निम्नलिखित कार्य शामिल होंगे:

- बच्चे की आधारभूत पार्श्विका (profile) का आकलन।
- अपनी कमियों को स्वीकारने एवं समायोजन करने तथा सकारात्मक पक्षों को मजबूत करने में सहायता हेतु एक गर्मजोश और प्रोत्साहित करने वाले वातावरण को उपलब्ध कराना।
- खराब आत्म-सम्प्रत्यय/निम्न स्तरीय आत्मसम्मान के कारणों की पहचान करना तथा दूसरे लोगों को जब भी संभव हो इनकी प्रशंसा करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- सफलता की तरफ ले जाने वाले संरचनात्मक प्रयासों में लगे रहने, रोल प्ले के माध्यम से जोखिम लेने को प्रोत्साहित करने तथा कठपुतली, चित्र, गुड़िया, आदि का खेल सामग्री के रूप में प्रयोग करने में सहायता करना।
- विभिन्न परिस्थितियों जैसे परिवार के लिए लिखना तथा दूसरों से अपने प्रबल पक्ष के बारे में बात करने के सफल अनुभवों को उपलब्ध करवा कर आशावादी चिन्तन का विकास करना।
- अधिगम सक्षमता के स्तर के अनुसार उन्हें उपयुक्त अधिगम अवसरों को उपलब्ध कराना।
- जीविकोपार्जन में उन्हें समर्थ बनाने के लिए कुछ व्यावसायिक कौशलों को सीखने में सहायता करना।
- स्वयं के एवं दूसरों के लिए अपनी क्षमता के अनुसार बच्चे को छोटे-छोटे कार्यों एवं कर्त्तव्यों को करने के लिए प्रोत्साहित करके उनकी सकारात्मक अभिवृत्ति को विकसित करना और कक्षा में शिक्षकों एवं साथियों के द्वारा तथा घर में माता-पिता एवं भाई-बहनों के द्वारा उसके कार्य को पुरस्कृत करके उसे सशक्त बनाना।
- उसकी कमजोरियों एवं डर के कारणों का पता लगाना और उसके आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए इन क्षेत्रों पर कार्य करना।
- उसकी व्यक्तिगत कठिनाइयों एवं समायोजन समस्याओं के प्रति सावधान रहना।
- शर्मिन्दगी से बचने के लिए समझदारीपूर्ण प्रयास करना और अपने कार्यों के लिए अनुमोदन एवं प्रशंसा करने में उनकी सहायता करना।

- संभावित अवसरों को उपलब्ध कराने के लिए बच्चे की अभिवृत्ति, संभाव्य अभिरुचि, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं संसाधनों के आधार पर एक व्यवसाय हेतु तैयार करना।
- अपने एवं अन्य के प्रति सम्पूर्ण एवं संरचित अभिवृत्ति का विकास करने के लिए उसको प्रोत्साहित करना।
- उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप एक कॅरियर शिक्षा कार्यक्रम की योजना बनाना एवं उन्हें इसमें शामिल करना।
- मानकीकृत यंत्रों, परीक्षणों एवं उपकरणों, माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों के साथ साक्षात्कार एवं प्रेक्षणों की सहायता से उनकी अभिरुचि, अभिक्षमता एवं अन्य प्रबल पक्षों के बारे में आकलन करना।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों पर कार्य अध्ययन कार्यक्रम के लिए अवसर उपलब्ध कराना।
- बाद में आने वाली व्यावसायिक तथा सामान्य समायोजन समस्याओं की रोकथाम के लिए समूह मार्गदर्शन गतिविधियों, व्यक्तिगत परामर्श, आदि के द्वारा कैम्प/अभिविन्यास कार्यक्रम का प्रबन्ध करना।
- सही व्यवहारों को सीखने का अवसर उपलब्ध कराना ताकि उन्हें और उनके परिवार के सदस्यों को अनावश्यक शर्मिन्दगी एवं विक्षिप्तता से न गुजरना पड़े। यह उन्हें अशक्तता के बावजूद सफल व्यक्तियों के वास्तविक जीवन के उदाहरण को बताकर एवं उन व्यक्तियों से बातचीत करा कर किया जा सकता है।
- मानसिक रूप से विकृत बच्चों की सामाजिक अन्योन्यक्रिया के विकास के लिए उनके परिवारजनों एवं अन्य व्यक्तियों को शामिल करके क्लबों की स्थापना करना एवं गतिविधियों का आयोजन करना। विद्यालय में माता-पिता को एक कार्यकर्ता के रूप में शामिल करके कार्यक्रम का आयोजन करना एक अच्छा विचार है।
- सामाजिक अन्योन्यक्रिया के लिए अवसर उपलब्ध कराना क्योंकि उनका सामाजिक वातावरण एवं चिन्ता प्राय: उन्हें सूचना का पता लगाने की कोशिश को रोकती है जो विशेष रूप से उनके द्वारा लैंगिकता के अनुभव का सामना करने के विरोध में होती है। इस प्रकार की सूचना को बताना ताकि उनके प्रश्नों का समाधान हो सके।
- विद्यार्थियों की अपने सक्षम शरीर वाले साथियों के समान होने की भावना पर विचार करना और जब यह नहीं हो पाता है तो उनमें उदासीनता, निराशा या क्रोध प्रकट होता है इसलिए कक्षा में ज्यादा-से-ज्यादा गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए जो मानसिक रूप से विकृत बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने हेतु उनकी विशेष सक्षमता को बाहर निकलने में सहायता प्रदान करती हैं।
- समूह या व्यक्तिगत परिचर्चा के द्वारा इस प्रकार के बच्चों की चिन्ताओं के समाधान में सहायता करना।

- समूह गतिविधियों के आयोजन एवं पहल करने हेतु उन्हें पुरस्कृत करके निर्णय लेने एवं स्वयं-सहायता हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करना।
- सभी विद्यार्थियों के साथ गर्मजोशी, स्वीकरणीय एवं प्रभावशाली संबंधों का विकास करना।
- दैनिक कार्यों को छोटे-छोटे कार्यों में बाँट करके तथा औपचारिक एवं अनौपचारिक गतिविधियों को अदल-बदल करके मानसिक रूप से विकृत विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं के लिए अपेक्षाकृत सख्त वातावरण अपनाना।

उपर्युक्त दिए गए तथ्यों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इन बच्चों की व्यक्तिगत कठिनाइयों एवं समायोजन समस्याओं के विषय में सावधान रहना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कक्षा के अन्य बच्चों को विविध प्रकार की समूह गतिविधियों में इन बच्चों को शामिल करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। अभिभावकों का मार्गदर्शन एक अन्य जिम्मेदारी है क्योंकि अभिभावकों को अपने बच्चों को अधिगम में होने वाली कठिनाइयों की अनुभूति को जानने कि आवश्यकता होती है। अपने बच्चों के पालन-पोषण में उपयुक्त सलाह प्राप्त करने के लिए अभिभावकों को उसी प्रकार की समस्या का सामना करने वाले बच्चों के अभिभावकों से बातचीत करने की आवश्यकता होती है। बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चा व्यक्ति केन्द्रित अंत:क्षेपों एवं मूर्त अनुभवों से अधिक लाभान्वित होता है। वह प्रशंसा से प्रेरित हो सकता है। शिक्षक/परामर्शदाता को विद्यार्थियों की वास्तविक अधिगम क्षमताओं के प्रति जागरुक रहने की आवश्यकता है।

3.5 शैक्षिक मार्गदर्शन के लिए सुझाव

यद्यपि ये बच्चे अधिगम में धीमे हैं परन्तु यह सर्वविदित तथ्य है कि सही प्रकार की शैक्षिक तकनीकों के प्रयोग के द्वारा शिक्षक की तरफ से थोड़ा-सा प्रयास करने/होने पर बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों को पढ़ने, लिखने एवं गणित के आधारभूत कौशलों के विषय में जानकारी देना संभव है जिसकी व्याख्या निम्नलिखित है :

- विद्यार्थियों के विकास के आकलन हेतु संपर्क रिपोर्ट बनाने के लिए उनसे समय-समय पर मिलना।
- इस प्रकार की तकनीकों जैसे - उन्हें नई चीजों को सिखाने के लिए मूर्त से अमूर्त की तरफ ले जाना, रंग-बिरंगी पाठ्यपुस्तकों का प्रयोग करना, व्यवहार में सुधार करने वाली तकनीकों- प्रबलन, दण्ड के साथ-साथ खेल सामग्री, आदि का प्रयोग करना। यह विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए प्रभावी होता है।
- अशक्त विद्यार्थियों के लिए आवश्यकता पर आधारित कार्यक्रमों के सुझाव हेतु उनकी अभिरुचियों, प्रतिभा, आवश्यकताओं एवं कॅरियर लक्ष्यों को पहचानना एवं मान्यता देना।
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालयी वर्षों के समय व्यावसायिक गतिविधियाँ या कार्य अध्ययन कार्यक्रमों की योजना बनाना चाहिए जो अशक्त विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकता है। उन्हें कार्य के संसार की वास्तविकता की जानकारी प्रदान करना जिसमें उनके द्वारा किए गये कार्यों के लिए उन्हें पुरस्कृत करके समझाना है कि पुरस्कार दिए गए कार्य को पूरा करने एवं उत्पादकता के संदर्भ में प्रदान किया जाता है।

- आधारभूत एवं निदानात्मक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए शैक्षिक लक्ष्यों एवं व्यवस्था के बारे में उन्हें पुन: जानकारी देने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों का सहयोग लेना।
- समुदाय में उपलब्ध निरोधक सेवाओं में परिवार को शिक्षित करके उनकी सहायता करना जो अशक्त विद्यार्थियों को अन्य सहायक अनुरूप समस्याओं से बचा सकता है।

शिक्षकों के लिए कुछ अन्य सुझाव :

- दिखाना, प्रदर्शन करना एवं प्रतिमान।
- बहुसांवेगिक अधिगम का उपयोग करना।
- जानकारियों को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त करना।
- समवय साथियों से सीखना एवं सहयोगात्मक अधिगम का उपयोग करना।
- विकासात्मक रूप से उपयुक्त उपागम का प्रयोग करना।
- सूचनाओं को जितना संभव हो सके, मूर्त रूप में प्रदान करें।
- अनुदेशन के छोटे समूह उपलब्ध कराना।
- विद्यार्थियों के परीक्षण सामग्री का अध्ययन कीजिए।
- पता लगाइए कि विद्यार्थी किस रूप में सबसे बेहतर ढंग से सीखता है और इस अधिगम के तरीके का उपयोग कीजिए।
- अनवरत सफलता हेतु अवसर उपलब्ध कराना।
- नए कौशलों को सिखाते समय अनुकूल शब्दावली का प्रयोग करना।
- सभी विद्यार्थियों को सहयोगात्मक रूप से कार्य करने एवं समस्या का समाधान वे जिस स्तर पर प्राप्त कर सकते हैं उसके लिए समय देना एवं प्रोत्साहित करना चाहिए।
- विद्यार्थियों को विभिन्न तरीकों से अपने विचारों को व्यक्त करने एवं उचित ठहराने के लिए अवसर प्रदान करना।
- समस्या उत्पन्न करने वाले कार्यों एवं open-ended प्रश्नों का अत्यधिक प्रयोग करना।
- विद्यार्थियों की तर्कशक्ति हेतु अपेक्षाओं को बढ़ाना एवं बहुविधि समाधानात्मक योजनाओं को प्रोत्साहित करना।
- विद्यार्थियों के आपसी संवाद एवं सहयोग पर अधिक बल देना।
- शिक्षक निर्देशित अनुदेशन का कम प्रयोग करना।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास – 1

निम्नलिखित कथनों को पढ़ कर सही या गलत का चिन्ह् लगाइए। सही गलत

1. बौद्धिक अशक्तता उप-औसतीय बौद्धिक कार्य-प्रणाली से संबंधित होती है।

2. मध्यम बौद्धिक अशक्तता 20 से नीचे के बुद्धि लब्धि स्तर से संबंधित होती है।

3. माता-पिता के द्वारा अति सुरक्षा से एक मानसिक रूप से अशक्त बच्चे की समस्याओं का सामना करने की योग्यता में सुधार होता है।

4. बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चा व्यक्ति-केन्द्रित अंत:क्षेपों से अधिक लाभ प्राप्त करता है।

क्रियाकलाप – 1

उस विद्यालय के संदर्भ में जिससे आप संबंधित हैं, नीचे उल्लेख किए गए क्षेत्रों से संबंधित कारकों की पहचान कीजिए जो मानसिक रूप से अशक्त बच्चों की शिक्षा में बाधक हैं तथा स्तम्भ अ में उनकी सूची बनाइए। स्तम्भ ब में उन अंत:क्षेपों को लिखिए जो उन बाधाओं को दूर करने के लिए आवश्यक हो सकते हैं।

प्रस्तावित क्षेत्र	स्तम्भ अ	स्तम्भ ब
पाठ्य पुस्तकें		
शिक्षण/अधिगम		
प्रक्रिया		
कक्षा व्यवस्थापन		
मूल्यांकन		

3.6 सामाजिक-सांवेगिक विकास हेतु परामर्श

प्रारंभिक स्तर पर उपयुक्त अभिभावकीय परामर्श बहुत आवश्यक है। डॉक्टर्स, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता उपलब्ध उपचार हेतु दशा एवं विकल्पों के बारे में अभिभावकों को सही प्रकार से समझाकर तथा साथ-ही-साथ उनके संदेहों का स्पष्टीकरण करके अधिक अंतर ला सकते हैं। अभिभावकीय परामर्श में संवेगात्मक सहयोग एवं मार्गदर्शन उपलब्ध कराना तथा मनोबल को मजबूत करना भी शामिल होता है। एक बार जब अभिभावक परिस्थिति को समझ लेते हैं तब उन्हें बच्चे के विवेचन एवं प्रशिक्षण हेतु उपयुक्त तरीकों को सीखने की आवश्यकता होती है। अभिभावकों को इस प्रकार की सहायता, मार्गदर्शन एवं सहयोग की जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है विशेष रूप से किशोरावस्था के समय, प्रारम्भिक वयस्क अवस्था एवं संकटकालीन समय में अनवरत आवश्यकता होती है।

विकासशील देशों में अतिरिक्त कारक जैसे धर्म, अंधविश्वास, सामाजिक अभिवृत्ति, आदि परिस्थिति को अधिक जटिल बना देते हैं। इससे भी आगे यह दावा कर सकते हैं कि कुछ निश्चित दवाइयाँ एवं जड़ी-बूटी बुद्धि को सुधार सकते हैं।

यह सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण है कि अभिभावक अपने धन एवं मूल्यवान समय को उस प्रकार के उपचार में न लगाएँ जो संदेहास्पद है या जिसका कोई महत्व नहीं है।

एक पेशेवर परामर्शदाता एवं मनोवैज्ञानिक के द्वारा वैयक्तिक परामर्श सत्र एक या दो अन्योन्यक्रिया सत्रों से लेकर सत्रों की एक श्रृंखला तक जो एक लंबे समय तक चल सकती है, के रूप में हो सकते हैं। यह प्रेक्षण किया गया है कि –

- अति सुरक्षा बच्चों को दूसरों के ऊपर आश्रित रहने की तरफ ले जाती है जो व्यक्ति की अशक्तता की वास्तविकताओं से बहुत अलग होती है। इसलिए उनको स्वावलम्बी होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आवश्यक सहयोग एवं स्वतंत्रता के प्रोत्साहन के बीच एक सही एवं वास्तविक योजना बनानी चाहिए क्योंकि अति मानसिक रूप से अशक्त के प्रति अभिवृत्ति को प्रस्तुत करता है लेकिन स्वतंत्रता के लिए अधिक प्रोत्साहन कभी-कभी खतरनाक या कठिन सिद्ध हो सकता है।
- मानसिक रूप से अशक्त विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से समझने और अन्य विद्यार्थियों की सहायता के लिए सलाह-विशेषज्ञ की भूमिका अदा करना चाहिए। मानसिक रूप से अशक्त विद्यार्थियों को उपयुक्त ढंग से प्रतिक्रिया हेतु विद्यालय के वातावरण को अधिक अनुकूल रूप से विकसित करना चाहिए।

बड़े बच्चों एवं अभिभावकों द्वारा सामना किए जाने वाले निर्भरता/स्वतंत्रता के मुद्दे और अन्य सामाजिक-सांवेगिक मुद्दों को सुलझाने में व्यक्तिगत परामर्श सहायक हो सकते हैं। पारिवारिक परामर्श में बच्चे एवं उसकी कठिनाइयों के बारे में चर्चा करने एवं पारिवारिक संबंधों को सुधारने में सहायता करने तथा घर पर अन्तर्वैयक्तिक दबावों को कम करने के लिए परिवार को एक साथ लाया जा सकता है।

अशक्त विद्यार्थियों के लिए सफल परामर्श तकनीकें वही हैं जिनका प्रयोग दूसरों के लिए किया जाता है फिर बच्चे की अधिकतम स्वीकृति के लिए अभिभावकों को परामर्श देने के लिए विशेष कौशलों की आवश्यकता हो सकती है।

परामर्श द्वारा मानसिक रूप से अशक्त बच्चे को एक स्तर तक स्वतंत्र होने के लिए मदद एवं प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जो वातावरणीय रुकावटों एवं आन्तरिक प्रबलकों की निर्भरता के बावजूद उनकी संभावनाओं के अनुकूल हो।

परामर्श उपागम केवल तभी प्रभावशाली हो सकते हैं यदि बच्चे की ताकतों एवं सीमाओं को ध्यान में रखा जाए और परामर्श उपागम बच्चे की आवश्यकताओं के अनुकूल हों।

3.7 पर्यावरणीय हस्तक्षेप

विविध प्रकार के पर्यावरणीय खतरे होते हैं जिनका एक मानसिक रूप से अशक्त बच्चे को सामना करना पड़ता है जैसे – वंचन, दाग, शारीरिक एवं लैंगिक दुर्व्यवहार तथा विकास के सीमित अवसर जो बौद्धिक अशक्तता

से संबंधित प्रारूपिक विचारों या इसका सामना करने में उनकी असक्षमता के कारण होता है (फ्यूरे, 1994, थरिन्जर, होर्टन एंड माइलिया, 1990)।

मानसिक रूप से अशक्त बच्चे संस्थानों के लिए भी गंभीर खतरा होते हैं विशेष रूप से गंभीर एवं प्रचंड श्रेणी के अशक्त बच्चे (ब्रोम्ले एंड ब्लेचर, 1991; रॉउजी, ब्लेचर एंड हैनमैन, 1990) और भी, संस्थानों में बच्चे विविध पर्यावरणीय खतरों जैसे – श्वसन रोग (ओ.ब्रायन, टेट एंड जैरिया, 1991) तथा दुर्व्यवहार एवं उपेक्षा (फ्यूरे, निसेन एंड स्ट्रांच, 1994) के कारण गंभीर खतरे में रहते हैं।

इस प्रकार एक अनुपयुक्त पर्यावरण इस प्रकार के बच्चों के विकास में और भी विलम्ब करता है इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि:

- बच्चे के पर्यावरण के उन पहलुओं की पहचान करना जो परिवार में कठिनाई उत्पन्न कर रहे हैं जैसे वित्तीय सीमाएँ नौकरी करने वाले अभिभावकों की समस्याएं, आदि जो मानसिक रूप से अशक्त बच्चे के लिए बाधाओं का निर्माण कर रहे हैं और उनके लिए सहयोग की व्यवस्था करना।

- अशक्त बच्चे को समझने एवं स्वीकार करने के लिए विद्यालय के सहयोगी कर्मचारियों को जानकारी प्रदान करना।
- प्रधानाचार्य और विशेषज्ञों जैसे विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षक तथा अन्य संबंधित अध्यापकों को शामिल करके संगठित प्रयास का आंरभ करना, शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाना, समूह के लिए सामाजिक एवं मनोरंजनात्मक गतिविधियों को आयोजित करना।
- विद्यालय की भौतिक सुविधाओं के सुधार हेतु वकालत करना जिसमें वास्तुशिल्पीय बाधाओं का निष्कासन तथा अशक्त बच्चों के लिए सहयोगी सुविधाओं का निर्माण करना।
- मानसिक रूप से अशक्त विद्यार्थियों के लिए आश्रय या पोषण गृहों, छात्रावासों, विश्राम गृह एवं डे केयर (Day care) केन्द्रों की पहचान करना।
- शिक्षण में अन्तर्वेशिक कक्षाओं के लिए सहयोग उपलब्ध कराकर सभी विद्यार्थियों, निदानात्मक कक्षाओं, गतिविधियों एवं अवसरों की क्षमता के सार्थक मूल्यांकन का प्रबंध करना जो अशक्त बच्चों की आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुकूल हों।

3.8 मानसिक रूप से विकृत बच्चों के माता-पिता के साथ कार्य करना

बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के माता-पिता के साथ कार्य करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वे बहुविध चुनौतियों का सामना करते हैं। इन अभिभावकों द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों में से एक सामाजिक अलगाव है। मित्रगण एवं परिवार के सदस्य बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चे की विशेष आवश्यकताओं को नहीं समझ सकते हैं और इस प्रकार प्रारूपिक छोटे बच्चों के परिवारों के लिए उपलब्ध बच्चों की देखभाल के सहयोग को उपलब्ध कराने में प्राय: समर्थ नहीं हो पाते हैं।

एक दूसरी चुनौती जो बार-बार बताई जाती है कि बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के माता-पिता लांछन के शिकार हो जाते हैं। अधिकतर समुदाय या पास-पड़ोस के सदस्यों को बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के व्यवहार विषय में जानकारी नहीं है या शिक्षित नहीं हैं। आगे, सामान्य जनता के पास निर्धारित व्यवहारों से बाहर के दायरे में व्यवहार के लिए बहुत कम सहनशीलता है। बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के परिवारजन सार्वजनिक स्थानों पर अपने परिवार के प्रति नकारात्मक अवधान को लेकर प्राय: संवेदनशील रहते हैं।

तीसरा, बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के माता-पिता बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों की आवश्यकताओं के साथ उसके भाई-बहनों की आवश्यकताओं के बीच संतुलन के संदर्भ में प्राय: चिन्ता व्यक्त करते हैं। अनुशासन की तकनीकों को बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के अनुकूल बनाने की आवश्यकता होती है। शैक्षिक एवं अन्य संस्थागत व्यवस्थाओं के सहयोग से माता-पिता को सहायता प्राप्त हो सकती है।

एक शिक्षक/परामर्शदाता के रूप में आपको बच्चों को अपनी अशक्तता को स्वीकार करने के लिए दिशा दिखाना है और अशक्तता के प्रति अपनी अभिवृत्ति में परिवर्तन हेतु सहायता के लिए गैर-अशक्त बच्चों के माता-पिता एवं अन्य लोगों को भी जानकारी प्रदान करना है।

आप उन अभिभावकों का उदाहरण दे सकते हैं जिन्होंने अपने बच्चे की सीमितताओं को स्वीकार किया है ताकि इस प्रकार के बच्चों के माता-पिता बच्चों की अशक्तता को स्वीकार कर सकें, एकजुट होकर एक संघ की स्थापना कर सकें। अभिभावकों को यह महसूस कराया जा सकता है कि अशक्तता का यदि पूर्ण रूप से इलाज नहीं हो सकता है तो फिर भी इसको विजित किया जा सकता है।

3.9 मानसिक रूप से विकृत बच्चों के लिए व्यावसायिक पुनर्वास

बच्चे की क्षमताओं को अधिकतम करना तथा अनुकूल स्तर की कार्यक्षमता को प्राप्त करना जो मानसिक रूप से अशक्त बच्चों के सामर्थ्य एवं अवसरों के अधिक अनुरूप है। इस विषय में आप निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं —

- कार्य की आदतों एवं अभिवृत्तियों के विकास में सहायता करना।
- उपचार एवं मूल्यांकन में सहायता करना।
- अधिक आत्म-अनुदेशन उपलब्ध कराना।
- दैनिक जीवन के कौशलों तथा जीवन की अन्य परिस्थितियों का सामना करने के लिए प्रारम्भिक प्रशिक्षण को सुसाध्य बनाना।
- उपयुक्त शैक्षिक, सामाजिक, व्यावसायिक एवं अंत:वैयक्तिक लक्ष्यों के संबंध में विद्यार्थियों की योग्यताओं के बेहतर उपयोग में सहायता करना।
- बच्चे के विषय में एक पुनर्वास योजना तैयार करने के लिए उसके वरीयता के कार्य के विषय में जानकारी तलाश करना और इसके क्रियान्वयन में सहायता करना।

- अशक्तों के लिए उपकरणों एवं कौशलों को उपलब्ध कराना जिसकी उन्हें अपने जीवन को बेहतर बनाने में आवश्यकता होती है।
- बच्चों को उत्पादक एवं आत्म-समर्थ बना करके उन्हें राष्ट्रीय एवं सामाजिक उद्देश्यों में योगदान देने में सहायता करना।

माता-पिता की भूमिका

कोई भी एक अपाहिज बच्चे का अभिभावक/माता-पिता होने के लिए तैयार नहीं होता है। अभिभावक अपने पारिवारिक जीवन के अनुभव से प्राथमिक रूप में अपने बच्चे के बारे में सीखते हैं इसलिए इन अभिभावकों के साथ कार्य करने वाले पेशेवरों को इनके अनुभवों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो प्रत्येक व्यक्ति के मामले में विशिष्ट होते हैं। यद्यपि अभिभावक सामान्य समस्याओं एवं प्रतिक्रियाओं को बता सकते हैं लेकिन संभावित प्रतिक्रियाओं का संयोजन, प्रतिक्रियाओं की तीव्रता और प्रतिक्रियाओं की अवधि कुछ ऐसे कारक हैं जिसका प्रत्येक परिवार के लिए व्यक्तिगत रूप में विचार करने की आवश्यकता है।

अभिभावकीय समायोजन में निम्नलिखित अवस्थाओं में से एक या सभी निहित हो सकते हैं -

- समस्या की जानकारी
- समस्या को पहचानना
- कारण की खोज
- उपचार के लिए तलाश, तथा
- बच्चे को स्वीकारना।

अभिभावकों को निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए –

- बच्चे में स्वाभिमान की भावना विकसित करना।
- अन्य भाई-बहनों के साथ बच्चे के प्रदर्शन की तुलना न करना।
- सभी बच्चों में शक्ति एवं क्षमता होती है और इन प्रबल पक्षों को पहचानना एवं प्रबलित किया जाना चाहिए।
- आशा का संचार करने वाले अभिभावक बच्चों को बाधाओं को विजित करने में सहायता देने के लिए एक प्रमुख शक्ति उपलब्ध कराते हैं तथा लचीले हो जाते हैं।
- अभिभावक बच्चों में अपने परिवार के प्रति उत्तरदायित्व एवं सहयोग की भावना विकसित करने में सहायता कर सकते हैं।
- अभिभावक अपने बच्चों के लिए चयन एवं निर्णय लेने तथा आत्म-अनुशासन को प्रोत्साहित करने के लिए अवसर उपलब्ध करा सकते हैं।

- अभिभावक बच्चों को उनकी गलतियों एवं असफलताओं का प्रभावी ढंग से सामना करने में सहायता कर सकते हैं।
- यदि संभव हो तो अभिभावकों को समुदाय के साथ-साथ प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उपस्थित होना चाहिए।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास – 2

निम्नलिखित विकल्पों से खाली स्थानों को भरिए।

अ - सामाजिक
ब - आत्मनिर्भर
स - स्वाभिमान
द - पर्यावरणीय

1. एक मानसिक रूप से अशक्त बच्चे को -------- होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. वंचन, दाग, शारीरिक एवं लैंगिक दुर्व्यवहार ----------- खतरे हैं जिन्हें एक मानसिक रूप से अशक्त बच्चे को सामना करना होता है।
3. ----------- अलगाव अभिभावकों द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों में से एक है।
4. अभिभावकों को अपने अशक्त बच्चे में ---------- की भावना विकसित करनी चाहिए।

क्रियाकलाप 2

अपने विद्यालय या समुदाय के बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के अभिभावकों की एक मीटिंग (बैठक) आयोजित कीजिए और उन्हें अपने अशक्त बच्चों की आवश्यकताओं की देखभाल के लिए एक संघ बनाने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

3.10 सारांश

यह इकाई बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के सम्प्रत्यय के विषय में एक विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। इसके लक्षणों, आवश्यकताओं एवं नम्र बौद्धिक अशक्तता वाले बच्चों के सामान्य विद्यालयी व्यवस्था में एकीकरण/संघटन का उल्लेख किया गया है।

उनके प्रबल पक्षों एवं योग्यताओं की पहचान करने के लिए शिक्षक की भूमिका को प्रकाशित किया गया है और शैक्षिक मार्गदर्शन हेतु विविध सुझावों को विस्तृत रूप में दिया गया है।

आगे भी, आवश्यक परामर्श को उपलब्ध कराने में परामर्शदाता की भूमिका जैसे – बच्चे की अशक्तता को स्वीकार करने में अभिभावकों की सहायता करना तथा सांवेगिक सहयोग उपलब्ध कराने का भी उल्लेख किया गया है।

यह इकाई मानसिक रूप से अशक्त बच्चों के व्यावसायिक पुनर्वास की रूपरेखा/मार्गदर्शक योजना भी उपलब्ध कराती है।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास

1. एक एकीकृत व्यवस्था में बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चे द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं की संक्षिप्त में व्याख्या कीजिए।
2. मानसिक रूप से अशक्त बच्चों के अभिभावकों के लिए परामर्श के महत्व की व्याख्या कीजिए।
3. एक मानसिक रूप से अशक्त बच्चे के लिए संभावित विविध पर्यावरणीय खतरे क्या हैं ?

आत्म-मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु

1. सामान्य विद्यालयी व्यवस्था में एक बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चा बहुत सारी समस्याओं जो उसके अलग शारीरिक बनावट के लिए अन्य बच्चों द्वारा उपहास उड़ाए जाने से लेकर उसके निम्नस्तरीय शैक्षिक प्राप्तांक तक का सामना करेगा।
2. निम्न बिंदुओं को विस्तारित करना है : -

   मानसिक रूप से अशक्त बच्चों के अभिभावकों को परामर्श देने से उन्हें अपने बच्चे की अशक्तता को स्वीकार करने तथा बच्चे के पोषण एवं प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त तरीकों को सीखने में सहायता मिलेगी।
3. एक मानसिक रूप से अशक्त बच्चे के द्वारा सामना किए जाने वाले विविध पर्यावरणीय खतरे वंचन, दाग, शारीरिक एवं लैंगिक दुर्व्यवहार उपेक्षा और विविध प्रकार के शारीरिक रोगों का खतरा हो सकता है।

आत्म-निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिंदु

1 - सही
2 - गलत
3 - गलत
4 - सही

आत्म-निरीक्षण अभ्यास -2

1 - ब
2 - द
3 - अ
4 - स

संदर्भ पुस्तकें

- American Psychiatric Association. 1994. Diagnostic and Statistical Manual of Mental Disorders (4th ed.). Jaypee Brothers, New Delhi.
- Bromley, B. E. and Blacher, J. 1991. Parental reasons for out-of-home placement of children with severe handicaps. Mental Retardation. 29, 275–290.
- Furey, E. M. 1994. Sexual abuse of adults with mental retardation: Who and where. Mental Retardation. 32, 173–180.
- Furey, E. M., Niesen. J. and Straunch, J. D. 1994. Abuse and neglect of adults with mental retardation in different residential settings. Behavioural Intervention. 9, 199–211.
- O'Brien, K. F., Tate, K. and Zaharia, E. S. 1991. Morality in a large southeastern facility for persons with mental retardation. American Journal on Mental Retardation. 95, 397–403.
- Tharinger, D., Horton, C. B. and Millea, S. 1990. Sexual abuse and exploitation of children and adults with mental retardation and other handicaps. Child Abuse and Neglect. 14. 301–312.
- Rousey, A. B., Blacher, J. B. and Hanneman, R. A. 1990. Predictors of out-of-home placement of children with severe handicaps: A crosssectional analysis. American Journal of Mental Retardation. 94, 522–531.

पठनीय पुस्तकें

Burack J. A., Hodapp, R. M. and Zigler, E. 1998. Handbook of Mental Retardation. Cambridge University Press, New York.

Editorial Board. 1996. Definition of Mental Retardation. In J. W. Jacobson and J. A. Mulick (Eds.), Manual of Diagnosis and Professional Practice in Mental Retardation (pp. 13–53). American Psychological Association, Washington, DC.

Luckasson, R., Borthwick-Duff, S., Buntinx, W. H. E., Coulter, D. L., Craig, E. M., Reeive, A., Schalock, R. L., Snell, M., Spitalnik, D. M., Spreat, S. and Tasse, M. J. 2002. Mental Retardation: Definition, Classification and Systems of Support. American Association on Mental Retardation. Washington, DC.

Mash, E. J. and Wolfe, D. A. 2002. Abnormal Child Psychology (2nd ed.). Thompson Learning Inc., California.

Madhavan, T., Kalyan, M., Narayan, J. and Peshwaria, R. 1988. Mental Retardation: A Manual for Guidance Counseling. National Institute of Mental Health. Secunderabad.

Rousey, A. B., Blacher, J. B. and Hanneman, R. A. 1990. Predictors of out-ofhome placement of children with severe handicaps: A cross-sectional analysis. American Journal of Mental Retardation. 94, 522–531.

******

3

भाग- II

अधिगम अशक्तता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

3.11 परिचय

3.12 उद्देश्य

3.13 अधिगम अशक्तता की अवधारणा

3.14 अन्य मानसिक विकारों से अधिगम अशक्तता की पहचान करना

3.14.1 बौद्धिक अशक्तता

3.14.2 वाचाघात

3.14.3 निम्न-निष्पादन (उपलब्धि प्राप्त करने वाले)

3.14.4 अवधान में कमी अतिसक्रियात्मक व्यक्तिक्रम (विकार)

3.15 अधिगम अशक्तता के कारण

3.16 अधिगम अशक्तता वाले बच्चों के लक्षण (विशेषताएँ)

3.16.1 अधिगम विशेषताएँ

3.16.2 व्यावहारिक विशेषताएँ

3.16.3 सामाजिक विशेषताएँ

3.16.4 शैक्षिक समस्याएँ

3.17 अधिगम अशक्तता वाले किशोरों की विशेषताएँ

31.8 अधिगम अशक्तता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

3.18.1 माता-पिता के लिए सुझाव

3.19 सारांश

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास

आत्म-मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु

आत्म–निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिंदु

संदर्भ पुस्तकें

3.11 परिचय

अब तक आप मानसिक रूप से अशक्त बच्चों के द्वारा दैनिक कार्यों को सम्पन्न करने हेतु आवश्यकताओं के विषय में परिचित हो चुके हैं। इस भाग में हम उन बच्चों के बारे में चर्चा करेंगे जो बुद्धिमान प्रतीत होते हैं (जिनका बुद्धि लब्धि (IQ) स्तर औसत या उससे उपर होता है) लेकिन ग्रेड स्तर पर पढ़ना, लिखना या विचारों को व्यक्त करना नहीं सीख पाते हैं। जिनकी उनसे अपेक्षा की जाती है, इस बात का कोई मायने नहीं रहता है कि आपने कौन-सी अनुदेशन विधि का प्रयोग किया है। इस प्रकार की परिस्थिति उलझन पैदा करती है यदि आप महसूस कर सकते हैं कि एक विद्यार्थी का खराब प्रदर्शन आवश्यक रूप से आलस्य के कारण नहीं है। वास्तव में, असफल होने वाले इन विद्यार्थियों में से बहुत-से कक्षा के सबसे परिश्रमी विद्यार्थियों में से हो सकते हैं। उनकी असफलता को त्रुटिपूर्ण बुद्धि पर नहीं आरोपित किया जा सकता है। विशेष रूप से ये ' न पढ़ने वाले ' प्राय: मौखिक अभिव्यक्ति में शानदार प्रदर्शन करते हैं। अपने सबसे अच्छे अधिगम प्रयास के बावजूद ये बच्चे पढ़ने, लिखने एवं अंक गणित में अपने ग्रेड स्तर की प्रवीणता तक पहुँचने में असफल रहते हैं।

इस प्रकार के बच्चे अधिगम-अशक्त के रूप में पहचाने जाते हैं। अनुसंधान से पता चलता है कि 10 से 16 प्रतिशत विद्यार्थी अच्छी मानसिक योग्यता, आरामदायक आर्थिक स्तर या कक्षा के अन्दर अनुदेशन प्रयासों के बावजूद भाषा के चिन्हों /प्रतीकों को समझने में असमर्थता अनुभव करते हैं। अधिगम में अशक्त बच्चे विश्व की लगभग सभी कक्षाओं में जिनमें हमारे सर्वाधिक लाभ प्राप्त कक्षाएँ हैं, में पाए जाते हैं। दो या तीन विद्यार्थी प्राय: सभी प्रारूपिक कक्षाओं में पाए जा सकते हैं जो अंकगणित, पढ़ना एवं लिखने के आधारभूत कौशलों को सीखने के लिए आवश्यक योजनाबद्ध अपेक्षित प्रयास को कायम रखने में समर्थ नहीं हो पाते हैं।

अधिकतर अधिगम में अशक्त बच्चों के लिए असफलता की घटना शीघ्रता से जीवन का एक तरीका बन जाता है और इस प्रकार इस तरह के बच्चों द्वारा विद्यालय छोड़ने की दर गंभीर खतरे का सूचक है। वह बच्चा जो निश्चित शैक्षिक कार्यों को पूरा करने में असमर्थ होता है वह शैक्षिक कार्य से शिक्षक के ध्यान को विचलित करने के लिए दुनुकूलक व्यवहार के प्रयोग का आश्रय लेगा। इस प्रकार समस्या की प्रारम्भिक स्तर पर खोज एवं उपचार बहुत आवश्यक हो जाता है।

3.12 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित पहलुओं को जानने में समर्थ होंगे –

- 'अधिगम में अशक्तता' के अर्थ का वर्णन करने में।
- अधिगम अशक्तता वाले बच्चों की विशेषताओं की व्याख्या करने में।
- कक्षा में अधिगम में अशक्तता वाले बच्चों को पहचानने में।
- अधिगम में अशक्तता के कारणों की सूची बनाने में।
- अधिगम में अशक्त बच्चों की सहायता हेतु परामर्शदाता की भूमिका की व्याख्या करने में।

3.13 अधिगम-अशक्तता की अवधारणा

अधिगम-अशक्तता के लिए राष्ट्रीय संयुक्त समिति (NJCLD) ने परिभाषित किया है – "अधिगम अशक्तता सामान्य शब्दावली में विकारों/व्यक्तियों के विजातीय समूहों के संदर्भ में होता है जो ग्रहण /प्रदर्शन करने में तथा सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने, तर्क या गणितीय योग्यता के प्रयोग में महत्वपूर्ण कठिनाइयों गलतियों/विलम्ब के द्वारा स्पष्ट होते हैं" (हैमिल, लेई, मैकनट एंड लासेन, 1981)। यह तंत्रिका विज्ञानीय कारण से होना अनुमानित किया जाता है जो भाषिक एवं गैर-भाषिक योग्यताओं के विकास, एकीकरण तथा प्रदर्शन में चयनात्मक रूप से हस्तक्षेप करता है। यद्यपि अधिगम-अशक्तता अन्य असक्षम स्थितियों या पर्यावरणीय प्रभावों के साथ सहगामी रूप में घटित हो सकती हैं लेकिन यह उन परिस्थितियों या प्रभावों का प्रत्यक्ष परिणाम नहीं है। ये बच्चे निम्नलिखित शैक्षिक क्षेत्रों में से एक या अधिक में कठिनाई का अनुभव करते हैं –

1. मौखिक अभिव्यक्ति
2. लिखित अभिव्यक्ति
3. सुनने की समझ
4. आधारभूत पठन कौशल
5. गणितीय योग्यता
6. गणितीय तर्क
7. वर्णविन्यास
8. भाषा

अधिगम-अशक्तता मस्तिष्क की केन्द्रीय संसाधन प्रणाली में दुष्क्रिया के परिणाम के रूप में उत्पन्न होती है जिसकी परिणति ग्रहण करने, विश्लेषण करने, जोड़ने तथा सूचना के प्रतीकात्मक प्रयोग में कमी या व्यतिक्रमों के रूप में होती है।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था में ये समस्याएँ विभिन्न रूपों जैसे – खराब समन्वयन, बोधात्मक व्यतिक्रम, अवधान में कमी, अवधारणाओं की प्रवीणता में कमी, भाषा के विकास में देरी या व्यवहारात्मक समस्याएँ जैसे अतिसक्रियता और अन्यमनस्कता के रूप में प्रतीत होती हैं। माता-पिता इस विषय को लेकर परेशान हो जाते हैं कि उनका बच्चा बेहतर प्रदर्शन क्यों नहीं कर रहा है। ये बच्चे प्राथमिक कक्षाओं में नहीं पहचाने जा पाते हैं। अन्य विद्यार्थी उन्हें अपरिपक्व पाते हैं या मानसिक रूप से धीमा या मंद के रूप में नाम दे सकते हैं।

3.14 अन्य मानसिक विकारों से अधिगम-अशक्तता की पहचान करना

अधिगम-अशक्तता एक तंत्रिकाजैविक व्यतिक्रम है। अधिगम-अशक्तता वाले व्यक्तियों में दिमाग होता है जो मस्तिष्क की संरचना और/या कार्य में अलग होने के कारण अलग प्रकार से सीखते हैं। यदि एक व्यक्ति श्रव्य या दृश्य विकारों, बौद्धिक अशक्तता, सांवेगिक व्यवधान या सांस्कृतिक अथवा आर्थिक कमी के कारण अलग प्रकार से सीखता है तब इसे अधिगम-अशक्तता नहीं कहा जाता है।

लेकिन बहुत-से विद्यार्थी जो विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन नहीं करते हैं उन्हें अधिगम-अशक्तता के रूप में लेबेल किया जा सकता है यद्यपि उनकी असफलता के कारण अलग होते हैं। अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों में से कुछ को मानसिक रूप से विकृत/बौद्धिक रूप से अशक्त या वाचाघात (नीचे व्याख्या की गई है) या निम्न -उपलब्धि प्राप्त करने वाले या अवधान में कमी अतिसक्रियात्मक व्यतिक्रम (ADHA) से पीड़ित के रूप में बताया जा सकता है। इस प्रकार ये शब्दावलियाँ यहाँ पर अलग-अलग रूप में प्रयोग की गई हैं।

3.14.1 बौद्धिक-अशक्तता

70 से कम बुद्धि लब्धि (IQ) प्राप्तांक वाले बच्चों को प्राय: बौद्धिक अशक्तता या मानसिक रूप से कमी के रूप में विशेषित किया जाता है और उन्हें अधिगम-अशक्तता की परिभाषा के अन्दर शामिल नहीं किया जाता है क्योंकि उनके अधिगम में कठिनाइयाँ प्रत्यक्ष रूप से उनके बुद्वि लब्धि (IQ) के क्रम प्राप्तांक से सम्बन्धित हैं न कि उनकी अधिगम-अशक्तता से जिसके विषय में भाग 1.2 में उल्लेख किया गया है। आप पहले ही मानसिक/ बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों की विशेषताओं के बारे में पहली इकाई में पढ़ चुके हैं।

3.14.2 वाचाघात

अधिगम में अशक्त एक बच्चा बोलने एवं सुनने के आधार पर अपनी मातृभाषा से अच्छी तरह से परिचित होता है लेकिन वह प्रतीकों को कार्य रूप में प्रयोग नहीं कर सकता है जो भाषा के विशिष्ट तत्व के रूप में होते हैं। इसकी तुलना में वाचाघात अपने आप भाषा की संरचना का सामना करने में समर्थ न होने की एक अवस्था है। इस प्रकार का व्यक्ति जिस भाषा को वह सुनता एवं बोलता है उसके व्याकरण को (वाक्य-विश्लेषण) नहीं समझ सकता है यद्यपि वह उसके प्रतीकों पर निपुणता हासिल कर सकता है। वह नहीं समझ सकता है किस प्रकार से भाषा का सम्पूर्ण रूप में उपयुक्त तरीके से प्रयोग किया जाता है और अपने विचारों को सार्थक वाक्यों के माध्यम से सम्प्रेषित करने में कठिनाई का अनुभव करता है।

3.14.3 निम्न-निष्पादन (उपलब्धि प्राप्त करने) वाले

एक बच्चा जिसके वास्तविक शैक्षिक प्रदर्शन की तुलना में उसकी बौद्धिक क्षमता सार्थक रूप से काफी ज्यादा होती है उसे निम्न निष्पादक/उपलब्धि प्राप्त करने वाला माना जाता है। निम्न उपलब्धि प्राप्त करने के मामले में बच्चे का खराब प्रदर्शन अनेक कारणों जैसे – साथियों द्वारा दबाव, घर पर सांवेगिक संवेदनशीलता या बच्चे की किसी और क्षेत्र में अभिरुचि के कारण जो विद्यालय पाठ्यचर्या का एक हिस्सा नहीं होता है, आदि के कारण हो सकता है। यदि सामर्थ्य एवं उपलब्धि के बीच यह विसंगति आन्तरिक कारणों जैसे – तांत्रिकीय प्रणाली में समस्या , सूचना को आगे बढ़ाने में कठिनाई के कारण है तब निम्न-उपलब्धि प्राप्त करने को अधिगम-अशक्तता के रूप में देखा जा सकता है।

3.14.4 अवधानात्मक कमी अतिसक्रियता व्यतिक्रम (ADHD)

अवधानात्मक कमी अतिसक्रियता व्यतिक्रम का प्राय: अधिगम-अशक्तता के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है लेकिन इसे वास्तविक रूप में अधिगम-अशक्तता की मानक परिभाषाओं में शामिल नहीं किया गया है। अवधानात्मक कमी अतिसक्रियता व्यतिक्रम से पीड़ित एक व्यक्ति को अधिगम में कठिनाई हो सकती है लेकिन

एक बार इसका उपचार हो जाने के पश्चात् वह प्राय: उपयुक्त तरीके से सीखता है। इस अन्तर को समझने के लिए कल्पना कीजिए कि अधिगम-अशक्तता से पीड़ित कोई व्यक्ति केवल एक या कुछ क्षेत्रों में प्रभावित होता है जबकि अवधानात्मक कमी अतिसक्रियता व्यतिक्रम से पीड़ित व्यक्ति अधिगम के सभी क्षेत्रों में प्रभावित होता है।

अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केवल अन्य प्रकार की अशक्तता से अधिगम-अशक्तता के अन्तर को पहचानना ही पर्याप्त नहीं है। प्रभावशाली मार्गदर्शन की सुविधा प्रदान करने के लिए अधिगम-अशक्तता के कारणों को पहचानना आवश्यक है।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास - 1

अ- बौद्धिक अशक्तता, ब- वाचाघात, स- अधिगम-अशक्तता

द –अवधानात्मक कमी अतिसक्रियता व्यतिक्रम, क- निम्न- उपलब्धि।

1. यदि एक बच्चे का शैक्षिक प्रदर्शन उसके बौद्धिक सामर्थ्य से कम होता तब इसे --------------- कहा जाता है।
2. -------- यह एक प्रकार का व्यतिक्रम है जिसके अन्तर्गत एक बच्चे को एक या कुछ क्षेत्रों में अधिगम में कठिनाई हो सकती है।
3. --------- एक तंत्रिकाजैविक व्यतिक्रम है।
4. यदि एक बच्चा भाषा की संरचना को समझने में कठिनाई का अनुभव करता है तो इसे ----- कहा जाता है।
5. जिन बच्चों की बुद्धि लब्धि (IQ) का प्राप्तांक 70 से कम होता है उन्हें -------------- के रूप में विशेषित किया जाता है।

3.15 अधिगम-अशक्तता के कारण

1980 के बाद के वर्षों में परिष्कृत तकनीकों के विकास के साथ मस्तिष्क की अतिविरूपता / अनियमितता की खोज अधिक आसान हो गई है। पेशेवर इस बात को स्वीकार करने लगे थे कि अधिगम-अशक्तता मस्तिष्क संरचना या कार्य में कुछ विभिन्नता के कारण होती है और अधिगम-अशक्तता का मुख्य कारण पर्यावरणीय के बजाय तंत्रिका विज्ञानीय है।

ज्यादातर लोगों में भाषा के प्रदर्शन एवं समझ के लिए बायाँ गोलार्द्ध दाएँ गोलार्द्ध की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होता है जबकि अधिगम में अशक्त लोग भाषा के लिए इस प्रारूपिक वाम –गोलार्ध के प्रभुत्व का प्रदर्शन नहीं करते हैं ।

विशेष रूप से पढ़ने एवं भाषा पर आधारित अधिगम व्यतिक्रम के लिए बहुत से (शव – परीक्षण) व्यक्ति निरीक्षण करने के बाद यह पाया गया है कि इस प्रकार के व्यक्ति का मस्तिष्क वाम-गोलार्द्ध में कोशिकीय अनियमितताओं से विशेषित था जिसमें महत्वपूर्ण भाषा केन्द्र होता है (गैलबुरड़ा, शरमन, रोजेन एंड गेचविंड, 1985)।

- कुछ अन्य महत्वपूर्ण कारक जो अधिगम-अशक्तता के लिए संभावित सहयोगी के रूप में हैं – वंशानुगत कारक, टिट्रैटोजेनिक कारक, चिकित्सीय कारक एवं पर्यावरणीय कारक।

- अधिगम-अशक्तता के बहुत-से मामलों में वंशानुगतता एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। अनुसंधानिकों ने खोज किया है कि प्रथम स्तर के अधिगम-अशक्तता वाले लगभग 35% से 45% बच्चों में पठन-अशक्तता है। बोलने एवं भाषा व्यतिक्रम के मामले में (बीचमैन, हूड एंड इन्गलिस,1992) तथा वर्णविन्यास-अशक्तता (श्यूल्ट-कोरने, डीमेल, मुलर, गुटेनब्रूनर एंड रेम्समिट,1996) में भी यही है।

- गर्भवती महिला के द्वारा शराब एवं कोकीन के रूप में टिट्रैटोजेनिक एजेंन्ट्स का प्रयोग गर्भ हेतु तंत्रिका विज्ञानीय क्षति का कारण हो सकता है जो बच्चों में अधिगम-अशक्तता उत्पन्न कर सकता है। बच्चों के जन्म से पूर्व एवं बाद में भी उसके सम्पर्क में आने से वे खतरे में होते हैं।

- चिकित्सीय कारक जैसे असामयिक जन्म, बच्चों में शुरुआत में ही डायबिटीज (मधुमेह), तानिका शोध (Menigitis) हृदयाघात एवं बाल चिकित्सा एड्स भी अधिगम-अशक्तता के साथ जुड़े हुए हैं।

- भोजन में आवश्यक विटामिन एवं खनिज तत्वों की कमी, उदाहरण के लिए विटामिन डी की कमी, आयोडीन की कमी मस्तिष्क के विकास को प्रभावित करती हैं और अधिगम-अशक्तता की तरफ ले जा सकती हैं। इसलिए दैनिक आहार कारकों जैसे कुपोषण एवं विटामिन की कमी कुछ बच्चों में अधिगम अशक्तता का कारण हो सकते हैं। कुपोषण बच्चों की अधिगम की योग्यता को प्रभावित करता है जो लोग कुपोषित बचपन से गुजरे होते हैं वे अधिगम-अशक्तता के अधिकतर शिकार हो सकते हैं।

- कई पर्यावरणीय कारक जैसे – गरीबी, माता-पिता की निरक्षरता, घर के पर्यावरण में साक्षरता कौशलों के प्रदर्शन में कमी और अनुदेशन के माध्यम पर प्रवीणता में कमी बच्चे की अधिगम योग्यता को प्रभावित कर सकते हैं। लेकिन यह स्मरण रखना चाहिए कि सांस्कृतिक विभिन्नता या खराब शिक्षण जैसे पर्यावरणीय कारक अधिगम-अशक्तता के लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

3.16 अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों के लक्षण (विशेषताएँ)

अधिगम-अशक्तता वाले बच्चे बहुत निराश हो जाते हैं और सीखने में उनकी असमर्थता उनके जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। वे अपने को समाज से अलग कर सकते हैं क्योंकि वे अपने विषय में महसूस कर सकते हैं :

- खराब साक्षरता कौशलों, अवधान या स्मरणशक्ति/ याद करने में कठिनाइयाँ जैसी समस्याओं का सामना करने के कारण शर्मिंदगी महसूस करना।

- असफलता, आलोचना, उपहास या अस्वीकरण का डर।

- भेदभाव का डर।

- इस बात का डर कि अन्य लोग उन्हें मूर्ख या अक्षम समझते हैं।
- समझ की कमी के कारण दैनिक परिचर्चा से अलग कर दिए जाने की भावना।
- अधिगम-अशक्तता वाले बच्चे एक बहु-विजातीय समूह बना लेते हैं। अधिगम-अशक्तता की पहचान करने के लिए प्रयोग किए गए लक्षणों में निम्नलिखित में से एक या अधिक शामिल हो सकते हैं।

3.16.1 अधिगम विशेषताएँ

- औसत या औसत से ऊपर बुद्धि
- एक या अधिक क्षेत्रों में निरन्तर शैक्षिक कठिनाइयाँ
- विद्यार्थी की क्षमता एवं वास्तविक प्रदर्शन के बीच विसंगति
- पढ़ने (बच्चे शब्दों को पहचानने या अर्थ को समझने में कठिनाई का अनुभव कर सकते हैं) या भाषा को लिखने (उन्हें लिखने के लिए वर्ण-विन्यास, लेखन या विचारों को संघटित करने में परेशानी हो सकती है) दोनों में कठिनाइयाँ।
- मौखिक अभिव्यक्ति, सुनने एवं समझने, गणितीय प्रदर्शन, गणना करने, तर्क, याददाश्त/स्मरणशक्ति एवं Meta-cognition एक व्यक्ति के ज्ञान से सम्बंधित उसके अपने तरह से सोचने का ढंग या कोई भी चीज जो उनसे सम्बन्धित है) में कठिनाइयाँ ।
- बोधात्मक व्यतिक्रम जिसमें भेदभाव, पहचान, सम्बंध, आनुक्रमिक क्रम, दृश्य-बोध एवं विश्लेषणात्मक विचारों की कठिनाइयाँ सम्बन्धित होती हैं जो सम्पूर्ण सम्बन्धों से एक भाग की पहचान करते हैं।

3.16.2 व्यावहारिक विशेषताएँ

- अधिक समय तक अपनी सीट पर बैठे रहने में असमर्थता की समस्या के साथ अतिसक्रियता।
- आक्रामक या निष्क्रिय व्यवहार।
- अल्पसक्रियता (गतिविधि को कम कर देना)।
- समन्वयन में कमी (दृश्य, वाक् एवं क्रियात्मक समन्वयन में कमी)।
- अध्यवसाय दिखाना जैसा कि हतोत्साहित किए जाने पर भी अध्ययन में लगे रहते हैं।
- अति-अवधान या अवधान-निर्धारण।

3.16.3 सामाजिक विशेषताएँ

- सामाजिक संकेतों की गलत व्याख्या करना।
- निश्चित परिस्थितियों में अनुपयुक्त, सामाजिक रूप से अस्वीकृत व्यवहारों का प्रदर्शन करना।

- व्यवहार के परिणामों के बारे में भविष्यवाणी करने या दूसरों के व्यवहार का पूर्वानमान लगाने में असमर्थ होना ।
- अपने व्यवहार को बदलने या अनुकूल बनाने में कठिनाई।
- खराब मौखिक एवं गैर-मौखिक कौशल।
- निम्नस्तरीय आत्मविश्वास।
- विकल्पों में से निर्णय लेने /चयन करने में कठिनाई।

3.16.4 शैक्षिक समस्याएँ

- गिनती में कठिनाई।
- एकाग्रता में कमी या घर पर या विद्यालय में वातावरण के द्वारा आसानी से ध्यान भंग हो जाना।
- कक्षा में शांतिपूर्वक बैठने में कठिनाई।
- बोले गए शब्दों को सही-सही लिखने में असमर्थता।
- बाएँ और दाएँ के बीच उलझन।
- मौखिक अनुदेशनों को याद करने में अतिशय कठिनाई।
- चीजों को याद करने में सामान्य कठिनाई।
- अत्यधिक बेचैनी जो विभिन्न कार्यों को समय से पूरा करने के लिए सार्थक रूप से हस्तक्षेप करती है।
- पढ़ते समय अक्षरों या प्रतीकों को बहुत जल्दी-जल्दी उल्टा करता है उदाहरण के लिए बी (b) को डी (d), saw को was, आदि।
- पढ़ते या लिखते समय संख्याओं को बार-बार उल्टा करता है, उदाहरणार्थ-31 को 13 के रूप में, 6 को 9 के रूप में, आदि।
- गणितीय गणना में कमजोर।
- देखने की क्षमता सामान्य होने पर भी सामान्य स्रोतों जैसे पुस्तक या श्यामपट्ट से विशुद्ध रूप में लिखने में समस्याएँ।
- अक्षरों या शब्दों को या तो बहुत नजदीक या बहुत दूर-दूर लिखता है (उपयुक्त स्थान छोड़ने की समस्या)।
- बच्चा संतोषजनक रूप में समझता हुआ प्रतीत होता है परन्तु प्रश्नों के उतर देने में सक्षम नहीं हो पाता है।

सूचना

1. यदि उपर्युक्त कथनों में से किन्हीं 3 से 5 के उत्तर सकारात्मक हैं तो बच्चे को शुरुआती जाँच एवं अग्रिम सुझाव के लिए एक शिक्षित मनोवैज्ञानिक / बालचिकित्सक या एक विशेष प्रशिक्षित शिक्षक के द्वारा ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया जाना चाहिए।
2. अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों की एक मुख्य विशेषता है कि उनका मौखिक कौशल उनके लिखित कौशल से प्राय: बहुत अच्छा होता है। इसलिए उनकी अशक्तता को व्यापक रूप में स्पष्ट करने के लिए औपचारिक रूप से परीक्षण किया जाना चाहिए ।

क्रियाकलाप -1

उपर्युक्त उल्लिखित समस्याओं में से कुछ समस्याओं का अनुभव करने वाले अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की पहचान कीजिए।

3.17 अधिगम-अशक्तता वाले किशोरों की विशेषताएँ

इस अवस्था में होने वाले मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप किशोरों द्वारा सामना की जाने वाली प्रमुख समस्याएँ हो सकती हैं : -

- **परिवार से अपवर्तन –** जैसा कि किशोर कार्यरूप में स्वतंत्र एवं आने-जाने में समर्थ हो जाते हैं, घर एवं विद्यालय से बाहर निकलते हैं, समकक्ष साथियों के समूह से प्रभावित होकर परिवार से दूर हो जाते हैं और सामाजिक दबाव के सामने बहुत जल्दी झुक जाते हैं। तथापि अधिगम-अशक्तता के मामले में परिवार में वयस्क सदस्यों के सहयोग के बिना रहने की योग्यता और भी कम हो जाती है।
- **पहचान का संकट** –किशोर अनवरत रूप से अपनी एक पहचान स्थापित करने की कोशिश करते हैं। लैंगिक विकास का प्रारम्भ समस्याओं को लेकर आता है एवं कार्यों को निर्धारित करता है जो लड़कियों एवं लड़कों के लिए अलग-अलग होते हैं। इसी के अनुसार उनसे लोगों की अपेक्षाओं में भी परिवर्तन होता है। स्वतंत्रताकी आवश्यकता एवं सत्ता के प्रति विद्रोह इसे प्राप्त करने हेतु उनके रास्ते में आते हैं। अधिगम-अशक्तता एक अन्य कारक है जो उनकी पहचान निर्धारण प्रक्रिया को कठिन बनाता है जो आगे चलकर विकास के विभिन्न क्षेत्रों में समस्याओं को उत्पन्न करता है।अपने परिवेश में उनकी प्रतिक्रिया के कारण उनके अननुमेय एवं अभयभावी होने के रूप में द्वन्द्व देखा जा सकता है।
- **आत्म –समप्रत्यय-** जैसा कि एक अधिगम-अशक्तता वाले विद्यार्थी का प्रदर्शन विभिन्न क्षेत्रों में अनियमित होता है इसलिए दूसरों के लिए यह समझना कठिन होता है कि वह बुद्धिमान है या नहीं है और वह किन क्षेत्रों में अच्छा है। यह दूसरों से अनियमित प्रशंसा एवं आलोचना को उत्पन्न करता है और किशोर आत्मसंशयी एवं उलझन में पड़ जाता है। इस प्रकार वह नकारात्मक आत्म-समप्रत्यय एवं निम्न स्तरीय स्वाभिमान विकसित कर सकता है।
- **सीमित सामान्यीकरण –** सामान्यीकरण पर्याप्त संख्या में नियमित अनुभवों पर आधारित होता है।

तथापि, अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों के मामले में सीमित मात्रा में नियमित अनुभवों के कारण इस प्रकार की बातें घटित नहीं हो पाती हैं। इस प्रकार नियमों के स्थापन में बहुत समय लगता है और सामान्यीकरण बनाना मुश्किल हो जाता है।

- **दिवास्वप्न देखना-** वय: संधि के प्रारम्भ के साथ अपने एवं दूसरों के वर्तमान एवं भविष्य के बारे में अपेक्षाएँ, इच्छाएँ, अभिलाषाएँ बढ़ती हैं। यदि उनकी अपेक्षाएँ नहीं पूरी होती हैं तो जीवन में विक्षिप्तता उन्हें जीवन के विभिन्न पहलुओं में काल्पनिक सफल अनुभवों की तरफ ले जाती है और यह दिवास्वप्न की तरह अग्रसर होता है।

- **गंभीर निम्न- उपलब्धि –** जैसा कि किशोरों का दृष्टिकोण तीव्र रूप से प्रभावित होता है , यह सभी क्षेत्रों में उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। इसके अलावा उनमें अवधान की कमी होती है जो परीक्षा में याद करते समय उन पर प्रभाव डालती है। उनके पास अच्छी बौद्धिक सामर्थ्यता होने के बावजूद भी सभी विषयों में उनकी उपलब्धि निम्न स्तरीय हो सकती है। यह अनवरत असफलता उनमें विक्षिप्तता का संचार करती है।

- **निम्न स्तरीय समप्रत्यय निर्माण** – सामान्य रूप से जैसे – जैसे बच्चा बौद्धिक रूप से विकास करता है उसकी अमूर्त चिन्तन क्षमताएँ बढ़ती हैं। वह एक परिस्थिति को अलग-अलग तरीके से समझ सकता है। वह अमूर्त नियमों एवं सामान्यीकरण के द्वारा समस्याओं को समझता है, युक्ति से काम लेता है, विचार करता है तथा सामना करता है। वहीं पर अधिगम-अशक्तता वाले किशोरों में अधिगम समस्याएँ उलझन का कारण बनती हैं। एक विद्यार्थी जो अच्छी तरह से पढ़ नहीं सकता है लेकिन एक औपचारिक स्तर पर सोच सकता है वह आधारभूत समस्याओं पर आवरण चढ़ा लेता है, जैसा कि पढ़ने की समस्या से बचने के लिए बहाना बनाना- वह थका हुआ है, तबियत ठीक नहीं है, बाद में पढ़ूँगा, आदि।

- **सांवेगिक समस्याएँ -** किशोर सामान्य रूप से समकक्ष समूहों के नियमों के अनुसार चलना पसंद करते हैं विशेष रूप से व्यवहार एवं परिधान में समकक्ष समूह के अनुसार चलने एवं फिर भी अपनी व्यक्तिगत पहचान स्थापित करने के प्रयास में उनका व्यवहार उत्तेजक एवं त्रुटिपूर्ण हो सकता है। वांछित दिशाओं में उनके अवधान को केन्द्रित करना कठिन हो जाता है। अधिगम-अशक्तों के मामले में शैक्षिक क्षेत्र में नियमित असफलता एवं प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा बार-बार फटकारा जाना किशोरों में चिन्ता एवं विक्षिप्तता उत्पन्न कर सकता है जो उन्हें आक्रामकता की तरफ ले जाता है। धैर्य की कमी, जिसके साथ स्वतंत्रता एवं समानुरूपता की आवश्यकता जुड़ी होती है , उसकी परिणति अस्वीकृत योग्य सामाजिक व्यवहार के रूप में होती है।

- **समायोजन समस्या -** तीव्रगामी शारीरिक एवं सहगामी मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों की आवश्यकता किसी भी विद्यार्थी के लिए समायोजन समस्या उत्पन्न करती है। यह समस्या तब अधिक गंभीर हो जाती है जब किशोर में अधिगम अशक्तता होती है। किसी अन्य किशोर के समान अधिगम-अशक्तता वाले किशोर भी उपर्युक्त उल्लिखित विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं क्योंकि उनके

अधिगम में अशक्त होने के परिणामस्वरूप उनकी किशोरावस्था की समस्याएँ अधिक बढ़ जाती हैं। वे अपने साथियों के द्वारा अत्यधिक प्रभावित होते हैं। परिवार से सहयोग में कमी के साथ विद्यालय में निरन्तर असफलता उनमें अकेलेपन की भावना उत्पन्न कर सकती है। इस प्रकार उनमें समायोजन समस्या की संभावना होती है क्योंकि वे शैक्षिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन की अपने माता-पिता की अपेक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ होते हैं। विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में अपने निम्न स्तरीय प्रदर्शन के कारण वे निम्न स्तरीय स्वाभिमान का अनुभव करते हैं।

क्रियाकलाप -2

अपनी कक्षा/पास-पड़ोस में अधिगम-अशक्तता वाले किशोर का प्रेक्षण एवं पहचान कीजिए। विद्यार्थी का साक्षात्कार लीजिए तथा इस प्रकार के विद्यार्थी की शैक्षिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक समस्याओं की प्रकृति का आकलन कीजिए।

31.8 अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

एक मार्गदर्शन परामर्शदाता/शिक्षक परामर्शदाता अधिगम-अशक्तता से सम्बंधित समस्याओं की पहचान करके उनका सामना कर सकता है –

- अपनी कठिनाइयों के विषय में बच्चे का दृष्टिकोण।
- अपने प्रति अभिवृत्ति का विकास तथा अपने आस-पास के अन्य महत्वपूर्ण लोगों के प्रति भी व्यवहार एवं अभिवृत्ति का विकास।
- अनियमित आत्म-समप्रत्यय, निम्न स्तरीय शैक्षिक उपलब्धि।
- निर्णय लेना, समस्या -समाधान आदि में असमर्थता।

अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों का सामना करने से पूर्व एक शिक्षक / परामर्शदाता को अधिगम-अशक्तता वाले बच्चे की ताकत एवं कमजोरी के क्षेत्रों के विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहिए। कुछ बच्चे शिक्षण के दृश्य माध्यमों के द्वारा बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं जबकि कुछ श्रवण-सम्बन्धी कौशलों में अच्छे हैं तथा अन्य लोग भी हैं जिन्हें यदि गतिबोधक माध्यम से शिक्षण प्रदान किया जाय तो बेहतर ढंग से सीख सकते हैं। निम्नलिखित सारिणी अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों की विभिन्न आवश्यकताओं का चित्र प्रस्तुत करती है (कटर, एंड बेनडिक्टिस, 2008)।

दृश्य प्रशिक्षु	श्रव्य प्रशिक्षु	गतिबोधक प्रशिक्षु
• संसार/ परिवेश को प्रतिमान या चित्र के रूप में देखते हैं	• वे एक अच्छे सुनने वाले होते हैं	• वे शरीर की गति एवं स्पर्श के द्वारा सूचनाओं को ग्रहण करते हैं

• परम्परागत कक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हैं क्योंकि अधिकतर सामग्री दृश्य रूप में प्रस्तुत की जाती है एवं परीक्षण लिया जाता है	• व्याख्यान शैली पर आधारित अधिगम पर्यावरण में अच्छा प्रदर्शन करते हैं और कक्षा परिचर्चा में सक्रिय रहते हैं।	• कक्षा में स्थिर होकर बैठने में कठिनाई होती है। सीखने के क्रम में उन्हें स्पर्श, खोज एवं निर्माण की जरूरत होती है।
• उन्हें सीखने के लिए देखने की आवश्यकता होती है	• पढ़ने में रुचि, चित्र देखना, लोगों को देखना तथा अन्योन्यक्रिया एवं मौखिक पुनरावृत्ति पर निर्भर होना	• स्मरण गति से सम्बंधित होती है
• वे चित्र बनाना, लिखना पसंद करते हैं एवं अच्छे संयोजक होते हैं		• खेलों, नाटकों एवं नृत्य में सफल होते हैं
• उपलब्ध किए जाने वाले उपकरण : पुस्तकें, वीडियो, कम्प्यूटर, पोस्टर्स	• उपकरण : वार्ता, परिचर्चा, वाद-विवाद	• उपकरण:- प्रहसन, Note taking (मुख्य बातों का अंकन), कला

अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों के सामर्थ्य को अधिकतम स्तर तक पहुँचाने के लिए परामर्शदाता/शिक्षक को इस प्रकार के बच्चों की ताकत के बारे मे जानना चाहिए। जब परामर्श प्रयासों को अधिगम अशक्तता वाले बच्चों की ताकतों पर केन्द्रित किया जाता है तब यह बच्चों में अपनी सामर्थ्य के विषय में सकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण कर सकता है।

कौशलों की पहचान एवं आकलन

शिक्षक/परामर्शदाता पहचान कर सकते हैं कि बच्चा किस प्रकार का कार्य कर सकता है और उसकी कौन-सी इंद्रियाँ सही प्रकार से कार्य करती हैं। अपनी सही इंद्रियों के प्रयोग के द्वारा बहुत-से बच्चे आवश्यक कौशलों का विकास कर सकते हैं। ये प्रबल पक्ष वैकल्पिक तरीकों को प्रदान करते हैं जिनसे बच्चा सीख सकता है। परामर्शदाता प्रारम्भिक अवस्था में विद्यार्थी की अधिगम-अशक्तता को पहचान कर उसकी सहायता कर सकता है। एक बच्चे की समस्याओं के उपयुक्त आकलन के द्वारा विशेष कमी वाले क्षेत्रों जैसे – निम्न स्तरीय स्वाभिमान या अनुपयुक्त शैक्षिक कौशलों या शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले व्यवहारों, आदि की पहचान के द्वारा बच्चे की सहायता की जा सकती है।

कौशलों का निर्माण

बच्चे की ताकत एवं कमजोरियों के आकलन के पश्चात् मार्गदर्शन शिक्षक/ परामर्शदाता एक व्यक्ति केन्द्रित शैक्षिक कार्यक्रम (IEP) का निर्माण कर सकता है (न्यूविर्थ, 1993)। व्यक्ति केन्द्रित शैक्षिक कार्यक्रम में बच्चे के विकास के लिए आवश्यक विशिष्ट कौशलों की योजना बनानी चाहिए साथ-ही-साथ उसके प्रबल पक्षों के

आधार पर उपयुक्त अधिगम गतिविधियों का निर्माण करना चाहिए। बहुत-सी प्रभावी अधिगम गतिविधियों में अनेकों कौशल एवं भाव निहित होते हैं। उदाहरणार्थ – शब्दों को पहचानने एवं उच्चारण करने के अधिगम में विद्यार्थी को देखने, कहने, लिखने एवं प्रत्येक नए शब्द को उच्चारण करने के लिए कहा जा सकता है। विद्यार्थी उन शब्दों को रेत पर लिख सकते हैं जो स्पर्श के भाव को उत्पन्न करता है। बहुत-से विशेषज्ञ विश्वास करते हैं कि एक कौशल के अधिगम में बच्चे जितना अधिक इन्द्रियों का इस्तेमाल करेगें उतना अधिक इन कौशलों के स्थायी रहने की संभावना होती है। इसे बहु-सांवेदिक अधिगम के रूप में भी जाना जाता है।

परामर्श (Referral)

कभी –कभी अधिगम अशक्तता वाले बच्चों के लिए आवश्यक सही प्रकार की शिक्षण-प्रणाली या देखभाल जिनकी उन्हें बहुत आवश्यकता होती है, वह उपलब्ध नहीं की जा सकती है। समय-समय पर अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों का व्यवहार तथा अवधान व्यतिक्रम अपने समकक्ष साथियों के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने में कठिनाइयों के कारण बहुत हिंसक हो सकता है। वाक् तथा भाषा या उच्चारण व्यतिक्रम से सम्बंधित बच्चे भी होते हैं जिनके लिए श्रव्य कौशलों या कुछ वाक् ध्वनियों के अभ्यास की आवश्यकता होती है। ऐसे उदाहरणों में पेशेवर की सहायता के बिना उत्तरोत्तर बढ़ती हुई परिस्थिति पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता है। इसलिए जब विद्यालय का मार्गदर्शन शिक्षक अधिगम-अशक्तता वाले बच्चे को सँभालने में समर्थ नहीं होता है, उस समय यदि बच्चे को एक पेशेवर परामर्शदाता या एक विशेष प्रशिक्षित शिक्षक के पास परामर्श हेतु भेजा जाता है तो इसके बेहतर परिणाम होंगें।

आप अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों की निम्नलिखित तरीके से सहायता कर सकते हैं –

- घर एवं विद्यालय दोनों जगह अच्छे कार्य हेतु तुरन्त पुरस्कार प्राप्त करने पर बच्चे अपने कार्यों पर नियंत्रण करना सीख लेते हैं। एक विद्यालय परामर्शदाता व्यवहार संशोधन एवं अन्य तकनीकों का प्रयोग कर सकता है (जैसा कि मॉड्यूल 11 की इकाई- 6 में 'परामर्श में व्यावहारिक अंत:क्षेप' में चर्चा की गई है) और बच्चों के लिए उपयुक्त पुरस्कारों के निर्धारण में अभिभावकों एवं शिक्षकों की सहायता करता है।
- शिक्षक/ परामर्शदाता इस बात का पता लगा सकता है कि किस प्रकार से बच्चा सबसे बेहतर ढंग से सीखता है और उसे उनके विशेष कौशलों, योग्यताओं एवं अभिरुचियों के विषय में जानकारी होनी चाहिए। यह बच्चे को सीखने के लिए प्रेरित करने एवं विकसित करने में परामर्शदाता की सहायता कर सकती है। शिक्षक/ परामर्शदाता को उपर्युक्त उल्लिखित बहु-सांवेदिक अधिगम का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- बच्चों को अपनी विशेष योग्यता के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना। जब वे किसी क्षेत्र में वास्तव में अच्छा प्रदर्शन करते हैं तब उन्हें सफलता का अनुभव होता है।
- बच्चे को अपनी समस्याओं को समझने में सहायता करना तथा उन पर बात करना/समस्या का सामना करने वाले कौशलों पर फोकस करना।

- प्रदर्शनविधि का प्रयोग करते हुए उदाहरणों के द्वारा उनकी गलतियों एवं दोषों को सही करने में सहायता प्रदान करना।
- कक्षा में शैक्षिक एवं व्यवहार के विषय में अभिभावकों से बात करना तथा गृहकार्य की योजनाओं पर परिचर्चा कर सकते हैं।

शिक्षक कक्षा में पढ़ाते समय इन बच्चों की सहायताके लिए निम्नलिखित तरीकों का प्रयोग कर सकते हैं।

- कक्षा अंत:क्षेप प्रारूपिक रूप से इस प्रकार के पर्यावरणात्मक संशोधनों पर केन्द्रित रहता है जैसे – बच्चे को विषयेतर व्यवधानों से हटाने के लिए उसे कक्षा में सामने की तरफ बैठाना, पढ़ने में कठिनाई का अनुभव करने वाले बच्चों को लिखित सूचना उपलब्ध कराना या प्रस्तुत की गई सूचना को श्रवण माध्यम से देना, अनुदेशन देने में सहायता हेतु कक्षा में सहायक सामग्री उपलब्ध कराना, जब सूचना देने के रूपात्मकता में एक में कमी हो जाय तब बच्चे को सूचना ग्रहण करने में सहायता के लिए बहु-सांवेदिक अधिगम प्रक्रियाओं का प्रयोग करना।
- अधिगम-अशक्तता के कारण निम्न-स्तरीय उपलब्धि प्राप्त करने वाले बच्चों के लिए लगभग हमेशा बार-बार दोहराने एवं अभ्यास की आवश्यकता होती है।
- दृश्य एवं पठन सम्बंधी समस्याओं के मामले में पुस्तकों, पेपर्स, वर्कशीट या अन्य सामग्रियों के बड़े-बड़े प्रिंट उपलब्ध कराना जो अधिगम-अशक्तता वाले बच्चे के लिए कार्य को अधिक सुगम बना देते हैं।
- बच्चे की अधिगम योग्यता का प्रत्येक बार आकलन ताकि बच्चे की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण के तरीकों में संशोधन किया जा सके।
- कक्षा में मौखिक अनुदेशनों को आसान बनाना (उदाहरण के लिए तीन के स्थान पर दो आदेश, बोलने की गति धीमी रखना एवं व्यवधानों को कम करना)।
- उनके साथ आनन्द प्रदान करने वाली कहानियों को पढ़ना। उन्हें प्रश्न पूछने, कहानी पर चर्चा करने, कहानी सुनाने एवं कहानी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना।
- उनके पर्यावरण के व्यवधान उत्पन्न करने वाले पहलुओं को जितना अधिक संभव हो सके उसे कम करके एकाग्रता के लिए उनकी योग्यता को बढ़ाना (उन्हें कार्य करने, अध्ययन करने एवं खेलने के लिए स्थान उपलब्ध कराना)।
- फिल्म, टेपरिकॉर्डर, फ्लैश कार्ड या छोटे समूह में कार्य के द्वारा पाठ की नवीनता को बढ़ाना ।
- समझाना, प्रदर्शन एवं प्रतिमान प्रस्तुत करना।
- सूचना को छोटे –छोटे भागों में विभाजित करना।

- समकक्ष साथियों द्वारा शिक्षण एवं सहयोगात्मक अधिगम का उपयोग करना।
- शिक्षक निर्देशित अधिगम का न्यूनतम प्रयोग तथा सहभागिता उपागम का प्रयोग करना।
- विकासात्मक रूप से उपयुक्त उपागम का प्रयोग करना जैसे – विद्यार्थियों की आयु एवं ग्रेड (कक्षा) के स्तर के अनुरूप शिक्षण विधियों एवं सामाग्रियों का प्रयोग करना।
- नए कौशलों के शिक्षण के समय नियमित शब्दकोश का प्रयोग करना।
- उन्हें अपनी गति के अनुसार सीखने के लिए प्रोत्साहित करना।
- विद्यार्थियों के तर्क में आत्मविश्वास दिखाना तथा विद्यार्थियों के बीच परिचर्चा एवं सहयोगात्मक प्रयासों के द्वारा बहुविघ समाधान योजनाओं को प्रोत्साहित करना।

इस प्रकार, परामर्शदाता/ शिक्षक विशेष समूह के बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं के विषय में अपनी समझ एवं अंतर्दृष्टि के कारण अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों के सामर्थ्य को विकसित करने में प्रमुख भूमिका अदा कर सकते हैं।

आत्म- निरीक्षण अभ्यास -2

अ – टिट्रैटोजेनिक ब- श्रव्य स- गतिबोधक द – दृश्य

1. .... प्रशिक्षु सूचना को शारीरिक गति एवं स्पर्श के द्वारा ग्रहण करते हैं।
2. .... प्रशिक्षु को अधिगम के लिए पुस्तकें, वीडियो, पोस्टर्स आदि उपकरण के रूप में प्रदान किया जाता है।
3. गर्भवती महिला द्वारा .... एजेन्ट के प्रयोग से गर्भ को तंत्रिकाविज्ञानी खतरा उत्पन्न हो सकता है।
4. --------- प्रशिक्षु व्याख्यान पर आधारित अधिगम पर्यावरण में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

3.18.1 माता-पिता के लिए सुझाव

प्रत्येक बच्चे को सुयोग्य एवं प्यार किए जाने की भावना के साथ बड़ा होना आवश्यक है। जब बच्चे में अधिगम-अशक्तता होती है तब माता-पिता को अपने बच्चों में स्वाभिमान एवं सम्बन्ध निर्माण कौशलों को विकसित करने के लिए अधिक परिश्रम की आवश्यकता होती है।

यदि अभिभावक सोचते हैं कि उनके बच्चे में अधिगम-अशक्तता हो सकती है तब उन्हें अपने बच्चे के लिए सहायता प्राप्त करने में विलम्ब नहीं करना चाहिए। अभिभावक का सर्वप्रथम कार्य बच्चे के विद्यालय में सम्पर्क करना है और विद्यालय के अधिकारियों से परीक्षण एवं मूल्यांकन की व्यवस्था करने के लिए अनुरोध करना है। वे इस विषय में विद्यालय के अध्यापक या परामर्शदाता से बात कर सकते हैं तथा उन तरीकों के बारे में विचार-विमर्श कर सकते हैं जो बच्चे की आवश्यकताओं के अनुकूल हो सकती हैं। परामर्शदाता/शिक्षक अभिभावकों को सहयोग प्रदान कर सकते हैं तथा अभिभावकों को निम्नलिखित रूप में अनुदेशन दे सकते हैं –

- बच्चे को बिना शर्त प्रेम एवं सहयोग देना।
- बच्चे को समझाना कि गलतियाँ असफलता की तरह नहीं होती हैं और उन्हें दिखाइए कि गलतियाँ उपयोगी हो सकती हैं और समाधान की तरफ ले जा सकती हैं।
- अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों के अभिभावकों के लिए सहयोग समूह में शामिल होना। एक सहयोगी समूह अभिभावकों के अकेलेपन की भावना को कम करने में सहायता कर सकता है, दूसरे अभिभावकों से सूचनाएँ प्राप्त होती हैं एवं योजनाएँ सीखने को मिलती हैं।
- बच्चे के शिक्षक/ परामर्शदाता के साथ नजदीकी बनाए रखना। आगे, अभिभावकों को निम्न जानकारी प्रदान करनी चाहिए।
- बच्चे में स्वाभिमान की भावना का विकास करने के लिए उनकी ताकतों को पहचानना एवं पोषित करना।
- अन्य भाई-बहनों के साथ बच्चों के प्रदर्शन की तुलना न करना।
- असहाय की भावना को विजित करने के लिए बच्चे की ताकत एवं सामर्थ्य को पहचानना।
- बच्चे के अनुरूप कर सकने वाले कार्य को देकर उनमें परिवार के प्रति उत्तरदायित्व एवं सहयोग की भावना का विकास करना।
- बच्चे को चयन एवं निर्णय लेने तथा आत्म –अनुशासन अर्जित करने के लिए अवसर उपलब्ध कराना।
- बच्चे को अपनी गलतियों एवं असफलताओं को विजित करने के लिए सहायता प्रदान करना।

3.19 सारांश

इस इकाई में अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों द्वारा सामना की जा रही समस्याओं, कारणों एवं विशेषताओं / लक्षणों की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है। एक विद्यार्थी की योग्यता तथा वास्तविक प्रदर्शन के बीच अन्तर अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों की विशेषताओं के बारे में चर्चा की गई है जिसमें बोधात्मक अशक्तता, भाषा या उच्चारण व्यतिक्रम तथा अल्पतम मस्तिष्क दुष्क्रिया के कारण पढ़ने एवं लिखने में अन्य अशक्तता जैसी परिस्थितियाँ शामिल हैं। अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों की आवश्यकताएँ बौद्धिक रूप से अशक्त, वाचाघात या निम्न स्तरीय उपलब्धि वाले बच्चों से अलग हैं। इस प्रकार अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों की विशेष आवश्यकताओं तथा अधिगम-अशक्तता में सहयोग देने वाले कारणों को पहचानना आवश्यक है। अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों की विशेषताओं का आकलन करना आवश्यक है एवं उनकी किशोरावस्था समस्याओं का भी ताकि अधिगम-अशक्तता के प्रभाव को विजित करने के लिए उनका मार्गदर्शन किया जा सके। अधिगम-अशक्तता वाले बच्चे की शैक्षिक आवश्यकताओं के पोषण के लिए शिक्षकों /परामर्शदाताओं को यह पहचानना बहुत आवश्यक है कि विद्यार्थी की विशेष अशक्तताएँ कौन-सी हैं। वे अधिगम-अशक्तता वाले बच्चे की समस्याओं को अभिभावकों को समझा सकते हैं। शिक्षक/परामर्शदाता अधिगम-अशक्तता वाले

बच्चों को उनकी सामर्थ्य को वास्तविक रूप में बताकर उनकी सहायता कर सकते हैं। शिक्षकों/परामर्शदाताओं एवं अभिभावकों की सहायता से अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों के प्रयासों को बढ़ाना संभव है।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास -

1. बच्चों में बौद्धिक अशक्तता तथा अधिगम-अशक्तता के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. अधिगम-अशक्तता के कारणों की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।
3. एक अधिगम अशक्तता वाले किशोर के द्वारा सामना की जा सकने वाली प्रमुख समस्याओं में से कुछ की संक्षिप्त रूप में व्याख्या कीजिए।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु –

1. बौद्धिक अशक्तता एक बच्चे की उप-औसतीय बौद्धिक कार्य क्षमता (18 वर्ष की उम्र से पहले बुद्धिलब्धि (IQ) 70 या उससे नीचे) के साथ-साथ सम्प्रेषण, सामाजिक, शैक्षिक एवं संवेदीचालक कौशलों, आत्म सहायक कौशलों तथा व्यावसायिक कौशलों से सम्बन्धित कमी के संदर्भ में होता है। अधिगम-अशक्तता वाले बच्चों का बुद्धिलब्धि (IQ) स्तर औसत या औसत से ऊपर होता है। वे सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने, तर्क और गणित में एक या एक से अधिक समस्याओं का अनुभव करते हैं।
2. निम्नलिखित को विस्तार से लिखिए –

   1- वंशानुगत कारक
   2- गर्भवती महिला के द्वारा टिट्रैटोजेनिक एजेन्ट जैसे शराब तथा कोकीन का प्रयोग करना।

 - चिकित्सीय कारकों जैसे – असामयिक जन्म, प्रारंभ में ही बच्चे को मधुमेह होना, तानिका-शोध, हृदयाघात एवं बाल एड्स।
 - पर्यावरणीय कारकों जैसे – निम्नस्तरीय सामाजिक-आर्थिक स्तर, अत्यन्त गरीबी अवस्था में पालन-पोषण एवं शिक्षण।

3. निम्नलिखित को विस्तार से लिखिए –

- समकक्ष साथियों तथा सामाजिक दबाव
- पहचान का संकट
- निम्न स्तरीय आत्म-समप्रत्यय
- सीमित रूप में नियमित अनुभवों के कारण सीमित सामान्यीकरण
- निम्न स्तरीय उपलब्धि
- निम्न स्तरीय सम्प्रत्यय निर्माण

- प्रेरणा की कमी एवं व्यवहार प्रबंधन की समस्या
- समायोजन समस्याएँ

आत्म- निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिंदु

आत्म- निरीक्षण अभ्यास -1

1-क 2-द 3-स 4-ब 5-अ

आत्म- निरीक्षण अभ्यास -2

1- स 2-द 3-अ 4-ब

संदर्भ पुस्तकें -

- Beichtman, J. H., Hood, J. and Inglis, A. 1992. Familial transmission of speech and language impairment: A preliminary investigation. Canadian Journal of Psychiatry. 37(3), 151–156.
- Cutter, D., Jaffe-Gill, E., Barston, S. and Benedictis, T. B. 2008. Learning disabilities: Types, Symptoms, and Interventions. Helpguide.
- Galaburda, A. M., Sherman, G. F., Rosen, G. D., Aboitiz, F. and Geschwind, N. 1985. Developmental dyslexia: Four consecutive patients with cortical anomalies. Annals of Neurology. 18, 222–233.
- Hammil, D. D., Leigh, J. E., McNutt, G. and Larsen, S. C. 1981. A new definition of learning disabilities. Learning Disability Quarterly. 4, 336–342.
- Lewis, B. A. 1992. Pedigree analysis of children with phonology disorders. Journal of Learning Disabilities. 25(9), 586–597.
- Neuwirth, S. 1993. Learning Disability. NIH Publication No. 93-3611, National Institute of Mental Health. Silver Spring, MD.
- Schulte-Korne, G., Deimel, W., Muller, K., Gutenbrunner, C. and Remschmidt, H. 1996. Familial aggregation of spelling disability. Journal of Child Psychology and Psychiatry. 37, 817–822.

पठनीय पुस्तकें –

Beschler, B. D., Elis, E. S. and Lenz, B. R. 1996. Teaching Adolescents with Learning Disabilities: Strategies and Methods. (2nd ed.). Love Publishing, Denver.

Bowley, A. H. and Gardner, L. 1980. The Handicapped Child: Educational and

Psychological Guidance for the Organically Handicapped. (4th ed.). Churchill Livingstone, New York.

Clark, D. B. and Uhry, J. K. 1995. Dyslexia: Theory and Practice of Remedial Instruction. York Press, Timonium, MD.

Cruickshank, W. M. 1975. Education of Exceptional Children. (3rd ed.). Prentice-Hall, Englewood Cliffs, NJ.

Hallahan, D. P., Kaufman, J. M. and Lloyd, J. W. 1999. Introduction to learning disabilities (2nd ed.). Allyn & Bacon, Boston.

Johnson, D. and Johnson, R. 1986. Mainstreaming and co-operative learning strategies. Exceptional Children, 52(6). 553–61.

Mash, E. J. and Wolfe, D. A. 2002. Abnormal child psychology (2nd ed.). Wadsworth, California.

McCathy, G. 1984. The Physically Handicapped Child. Fiber & Faber Ltd., London.

Sharma, K. 1987. Identifying and Validating Competencies Needed by Regular Educators and Special Educators to Integrate Children with Special Needs, University of London, U.K.

Volkmar, F. R. 2000. Medical Problems, Treatments, and Professionals. in Powers, M. D. (ed.). Children with Autism: A Parent's Guide. (2nd ed.) (pp. 73-74). Woodbine House, Bethesda, MD.

Lovaas, O. I. 1987. Behavioral treatment and normal educational and intellectual functioning in young autistic children. Journal of Consulting and Clinical Psychology, 55, 3–9.

Nielsen, L. B. 2002. Brief Reference of Student Disabilities: With Strategies for the Classroom, Corwin Press, Thousand Oaks, California

Websites

http://www.childdevelopmentinfo.com

http://www.helpguide.org/mental/learning_disabilities.htm

http://www.ldinfo.com/learning_disability.htm

http://www.med.umich.edu/1Libr/yourchild/ld.htm

http://www.medicinenet.com/learning_disability/article.htm

http://www.pediatricneurology.com

3

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

भाग – III

शारीरिक अशक्तता वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श

3.20 परिचय

3.21 उद्देश्य

3.22 शारीरिक रूप से अशक्त बच्चा

3.23 विकलांगीय क्षति

3.23.1 आक्षेपात्मक व्यतिक्रम

3.23.2 विकलांगीय क्षति वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन

3.24 वाक् व्यतिक्रम

3.24.1 वाक् से संबंधित व्यतिक्रम

3.24.2 वाक् व्यतिक्रम वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन

3.25 श्रव्य क्षति

3.25.1 श्रव्य क्षति का स्तर

3.25.2 श्रव्य क्षति वालों के लिए पहचान निरीक्षण सूची (Checklist)

3.25.3 श्रव्य क्षति वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन

3.26 दृश्य क्षति (दृष्टिहीनता)

3.26.1 दृश्य रूप से क्षतिग्रस्त दृष्टिहीन बच्चों की विशेषताएँ (लक्षण) एवं आवश्यकताएँ

3.26.2 दृश्य क्षति वाले दृष्टिहीन बच्चों के लिए मार्गदर्शन

3.27 शारीरिक रूप से अशक्त विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए कुछ सामान्य योजनाएँ

3.28 सारांश

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास

आत्म-मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु

आत्म-निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिंदु

संदर्भ पुस्तकें

पठनीय पुस्तकें

वेबसाइट्स

परिचय

आपने इस भाग के प्रारम्भ में ही विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की भिन्न-भिन्न प्रकार की आवश्यकताओं के बारे में पढ़ा है। आप इस तथ्य से भी परिचित हैं कि यदि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को प्रारम्भ में ही उपयुक्त मार्गदर्शन सहायता प्राप्त होती है तब ये बच्चे आत्म-निर्भर एवं समाज के स्वीकृत सदस्य बन सकते हैं। पहले की दो इकाइयों में आपने मानसिक रूप से विकृत एवं अधिगम-अशक्त के लिए मार्गदर्शन के विषय में पढ़ा है। इस इकाई में आप शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों के विषय में तथा विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर उपयुक्त चयन एवं सामंजस्य के लिए उनके लिए आवश्यक शैक्षिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा कॅरियर मार्गदर्शन एवं सहायता के महत्व के विषय में पढ़ेंगे।

3.21 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित पहलुओं को जानने में समर्थ होंगे –

- विविध प्रकार की शारीरिक अशक्तता का वर्णन करने में।
- शारीरिक अशक्तता वाले बच्चों को पहचानने एवं उनके अग्रिम आकलन तथा सहायता के लिए उन्हें विशेष सुविधा वाली एजेन्सियों में परामर्श हेतु प्रेषित करने में।
- शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों एवं उनके परिवारों को मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाओं को उपलब्ध कराने में।

3.22 शारीरिक रूप से अशक्त बच्चा

शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों की श्रेणी में वे बच्चे आते हैं जिनके शारीरिक व्यतिक्रम (क्षति) उनके चलने-फिरने, समन्वयन, सम्प्रेषण, अधिगम या वैयक्तिक समायोजन में हस्तक्षेप करते हैं।

बहुत-सी परिस्थितियाँ हो सकती हैं जिनकी परिणति शारीरिक अशक्तता के रूप में होती हैं जैसे –मस्तिष्क के क्षेत्र क्षति के कारण गति और मन: स्थिति का व्यतिक्रम। आपने 'प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात' के बारे में सुना होगा। यह बहुत-सी शारीरिक अशक्तताओं में से एक है जो 6 वर्ष की उम्र से पहले बच्चों में आती है। बहुत-से बच्चे किशोरावस्था गठिया संधिशोथ से पीड़ित हैं जिससे उनके अंगों में जकड़न एवं विकृति हो जाती है। एक ऐसा बच्चा भी हो सकता है जिसके अंग दुर्घटना में खो गए हैं। इसके अतिरिक्त भेंगा होना, रंगान्धी एवं अंधापन जैसी समस्याएँ भी हैं। कुछ बच्चे शिक्षक से जो कुछ कहा जा रहा है उसे दोहराने के लिए कह सकते हैं और कुछ बच्चे आवाज की दिशा का पीछा करते हुए अपने कानों को खुजला सकते हैं या बार-बार अपने सिर को उस तरफ घुमाते हैं। क्या आपने कभी सांकेतिक भाषा में लोगों को एक-दूसरे से बात करते हुए देखा है ? अशक्तता वाले बच्चों में दृश्य एवं श्रवण-संबंधी सांवेदिक क्षति हो सकती हैं। उपर्युक्त वर्णित शारीरिक क्षतियों में से कुछ आपके विद्यालय में स्पष्ट रूप से हो सकती हैं और इसलिए सांवेगिक एवं मानसिक विकास पर पड़ने वाले उनके प्रभावों पर ध्यान देना आवश्यक है।

शारीरिक क्षति एक व्यक्ति की सामान्य वृद्धि एवं विकास में बाद्या के रूप में कार्य करती है या उसको सीमित करती है चाहे यह मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांवेगिक या मानसिक हो।

अब हम शारीरिक रूप से अशक्त लोगों की श्रेणियों को देखेंगे।

शारीरिक रूप से अशक्त लोगों को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है –

- विकलांगीय क्षति
- आक्षेपात्मक व्यतिक्रम
- सांवेदिक क्षति (दृश्य एवं श्रवण-संबंधी)
- सम्प्रेषण व्यतिक्रम

3.23 विकलांगीय क्षति

विकलांगीय क्षति प्रमुख रूप से संचलन के व्यतिक्रम हैं जो एक हड्डी या मांसपेशी संधियों में कमी/खराबी के कारण उत्पन्न होते हैं। इसके परिणामस्वरूप अंगों की गति तथा कार्य क्षमता प्रतिबन्धित हो जाती है जो संचलन में कठिनाई का कारण बन सकती है। उदाहरणार्थ – मध्यम विकलांगीय क्षति वाला बच्चा हाथ-बरमा (छड़ी) और बैसाखी (सहारा) के साथ चलता है या एक walker के साथ चलता है। विकलांगीय क्षति को चलने की अशक्तता के संदर्भ में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है।

Ambulation (गतिशीलता, चलना) एक बच्चे की स्थान बदलते रहने की योग्यता से संबंधित होता है। चलने में अशक्तता बच्चे की तेजस्विता को प्रभावित करती है, इसका तात्पर्य बच्चे के स्वास्थ्य एवं अपने जीवन को संपोषित करने की योग्यता से है। शारीरिक चुनौतियाँ जो इसे बच्चे के लिए बहुत कठिन बना देती हैं – भवन में प्रवेश करना, एक कमरे से दूसरे कमरे में तथा एक मंजिल पर आसानी से आना-जाना, या भीड़भाड़ वाले स्थानों में यात्रा करना, या शौचालय सुविधाओं का इस्तेमाल करना, ये सभी गंभीर समस्या उत्पन्न करते हैं। यह इस प्रकार की क्षति है जो शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों को विशेष विद्यालयों एवं रूपान्तरित आत्म-नियंत्रित कक्षाओं तक सीमित कर देती है।

अब हम संक्षेप में दो प्रकार की गतिशीलता (Ambulation) अशक्तता के बारे में वर्णन करेंगे – मूल में प्रमस्तिष्कीय (Cerebral in origion), मूल में अप्रमस्तिष्कीय (Non-cerebral in origion)।

(अ) गतिशीलता अशक्तता (मूल रूप में प्रमस्तिष्कीय) -

गतिशीलता अशक्तता जो मूल रूप में प्रमस्तिष्कीय होती है जो मस्तिष्क में जन्म के पूर्व/समय या बाद में क्षति के कारण उत्पन्न होती है उसे प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात कहते हैं। यह क्षतिग्रस्त चालक समन्वयन के द्वारा विशेषित होती है। यह एक अविकासात्मक व्यतिक्रम है क्योंकि मस्तिष्क की खराबी उम्र के साथ बिगड़ती नहीं है और अशक्तता में वृद्धि नहीं होती है। यह शब्दावली सामान्य श्रेणी की चालक कमियों के लिए प्रयोग की जाती है (कठोरता, सस्तंभिता, कम्पन)। बच्चा प्राय: शिथिल एवं बेढ़ंगा होता है, अपने सिर को पकड़ने या घुमाने में धीमा होता है, खाने में कठिनाई होती है, चिड़चिड़ा होता है, बोलना शुरू करने में धीमा होता है, अशान्त व्यवहार का प्रदर्शन करता है तथा शरीर को नियंत्रित करने एवं संतुलन बनाने में कठिनाई होती है। इन बच्चों को शारीरिक एवं व्यावसायिक वाक्-चिकित्सा की आवश्यकता हो सकती है। कुछ बच्चों को अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य

के विकास के लिए अल्प मात्रा में अतिरिक्त अवधान की जबकि दूसरे बच्चों को अधिक मात्रा में सहायता की आवश्यकता होगी।

(ब) गतिशीलता अशक्तता (मूल रूप में अप्रमस्तिष्कीय) -

अन्य अशक्तताएँ जो मांसपेशी के नियंत्रण एवं विकास को प्रभावित करती हैं वे चलने – फिरने में अवरोध का कारण बनती हैं। निम्नलिखित अशक्तताओं को विद्यालयी बच्चों में प्राय: देखा जाता है –

- पेशीय दुर्विकास स्वैच्छिक पेशियों को उत्तरोत्तर कमजोर करता है एवं उत्पन्न होने से रोकता है। पेशीय दुर्विकास सामान्य रूप से जन्म से ही व्यतिक्रमों का एक समूह है जिसमें अस्थि-पंजर पेशियाँ क्रमिक रूप से घटती जाती हैं, इसमें कोई तंत्रिका-विज्ञानीय तथा सांवेदिक कमी नहीं होती है और यह मुख्य रूप से आनुवंशिक प्रवृत्ति के कारण होता है।
- मेरुदण्डीय पेशीय क्षीणता मेरुरज्जु को प्रभावित करती है और चालक तंत्रिका कोशिकाओं के क्रमिक विकार के रूप में होती है जो शारीरिक गतिविधियों के समन्वयन में समस्याओं की तरफ ले जाती है। जो मांसपेशियाँ बहुत कठिनाई से खींची जाती हैं या असमान रूप से संतुलित होती हैं वे मेरुदण्ड में झुकाव उत्पन्न कर सकती हैं जिसे पार्श्वकुब्जता कहते हैं।
- पोलियो (शिशु-पक्षाघात) एक वायरल (Viral) संक्रमण है जो मेरुरज्जु की कोशिकाओं को प्रभावित या खत्म करता है। जब इन तंत्रिका कोशिकाओं को नष्ट कर दिया जाता है तब वे मांसपेशियाँ जिनकी ये कोशिकाएँ सहायता करती हैं अन्ततोगत्वा निर्जीव या पक्षाघात से प्रभावित हो जाती हैं। पक्षाघात सम्पूर्ण शरीर या शरीर के कुछ हिस्सों को प्रभावित कर सकता है। पोलियो से ग्रसित बहुत-से लोग शय्याग्रस्त हो जाते हैं, व्हील चेयर पर सीमित हो जाते हैं या गतिशीलता के लिए छड़ी या बैसाखी पर निर्भर हो जाते हैं।
- पॉवफिर (Clubfoot) वह व्यतिक्रम है जिसमें बच्चे एक या दोनों पैरों की असमान्य स्थिति के साथ पैदा होते हैं।
- अंगच्छेद का अर्थ अंगों के न होने से है। यह या तो अंगों के प्रारम्भिक भ्रूणीय विकास में विघटन के परिणामस्वरूप या दुघर्टना के कारण तथा कभी-कभी जीवन के लिए खतरनाक शारीरिक व्यतिक्रमों एवं बीमारियों के कारण होता है। यह आंशिक या संपूर्ण रूप में हो सकता है।

3.23.1 आक्षेपात्मक व्यतिक्रम

मस्तिष्क में अनियंत्रित तंत्रिका विज्ञानिक (Electrical discharges) दौरा या शरीर अकड़ जाने के कारण हो सकते हैं जिनकी परिणति ऐंठन (Convulsions) के रूप में होती है। इसे मिरगी या अपस्मार कहा जाता है। मिरगी का एक विशेष स्वास्थ्य समस्या के रूप में उपचार किया जाता है क्योंकि यह बच्चे की स्फूर्ति, तेजस्विता एवं मानसिक स्वास्थ्य को इस ढंग से एवं इस स्तर तक प्रभावित करता है कि यह एक नियमित विद्यालय परिस्थिति में उसके कार्य करने की योग्यता को गंभीर रूप से कम कर सकता है। दौरे के तीन प्राथमिक प्रकार हैं – महामिर्गी (Grand Mal), पेटीमाल मिर्गी (Pelit Mal) तथा मनोचालक (साइकोमोटर) मिर्गी।

महामिर्गी (Grand Mal): इसमें सम्पूर्ण शरीर शामिल होता है जिसके अन्तर्गत पेशियों में सख्ती, पेशियों में तीव्र संकुचन एवं मूर्छित होना सम्मिलित है।

पेटीमाल मिर्गी (Pelit Mal): पूर्णतया सुध-बुध खो देना, शून्य में टकटकी लगाकर देखना तथा दिवास्वप्न देखते प्रतीत होना या स्तम्भित हो जाना। ये दौरे बच्चों में प्राय: आते हैं।

मनोचालक मिर्गी: ये दौरे मिश्रित चालक एवं सांवेदिक क्रिया के द्वारा पहचाने जाते हैं। व्यक्ति स्तम्भित एवं विक्षिप्त प्रतीत होता है – बीच-बीच में चलना, बुदबुदाना, सिर को घुमाना या कपड़ों को खींचना के द्वारा प्रेक्षित किया जा सकता है।

मिर्गी से ग्रसित एक बच्चा निम्नलिखित लक्षणों का प्रदर्शन कर सकता है –

- तीव्र गति से हिलाता है ।
- मूर्छित हो जाता है।
- हाथों एवं पैरों को तीव्रगति से गिराता एवं घुमाता है।
- पलकों में सांवेदिक अनुभूति।
- दौरे की अनवरत आवृत्ति के कारण पीला पड़ जाता है।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास – 1

निम्नलिखित विकल्पों से खाली स्थान को भरिए –

अ -		गतिशीलता व्यतिक्रम,	ब	-	पोलियो,
स	-	ऐंठन	द	-	संचलन

1. प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात वाले बच्चे ---------- सामना करते हैं।
2. विकलांगीय क्षति ------------ का व्यतिक्रम है।
3. ----------- एक वायरल संक्रमण है जो मेरुरज्जा की कोशिकाओं को प्रभावित और नष्ट करता है।
4. मस्तिष्क में अंनियंत्रित तंत्रिका –विज्ञानिक की परिणति --------- रूप में होती है।

3.23.2 विकलांगीय क्षति वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन

अब, जबकि आप विकलांगीय क्षति वाले बच्चों की विशेषताओं के बारे में जानते हैं, हमें देखना है कि ये बच्चे विद्यालय में किस प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं और उनकी सहायता के लिए क्या किया जा सकता है।

निम्नलिखित क्षेत्रों में मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी –

- विद्यालय में उपस्थिति
- दर्द एवं पुरानी बीमारियाँ
- ध्यानपूर्वक बैठने में कठिनाइयाँ
- शैक्षिक समस्याएँ
- सामाजिक एवं सांवेगिक समस्याएँ

शारीरिक रूप से अशक्त कुछ विद्यार्थियों के लिए विद्यालय में जाना एक प्रमुख समस्या है। उदाहरणार्थ - शारीरिक एवं व्यावसायिक चिकित्सा सत्रों में जाने के कारण उनके विद्यालय जाने में व्यवधान हो सकता है। दर्द, बैठने में कठिनाई एवं अन्य स्वास्थ्य-संबंधी परेशानियों के कारण एक विद्यार्थी पूरे समय के लिए विद्यालय में उपस्थित रहने में समर्थ नहीं हो पाता है तथा विद्यालय के समय के अनुसार व्यवधान हो जाता है। कभी-कभी उपचार के कारण वे दीर्घ अवधि के लिए विद्यालय नहीं जाते हैं। इस प्रकार के विद्यार्थियों को सीखने के बहुत कम अवसर मिलते हैं तथा शैक्षिक विषय-वस्तु छूट जाती है जो शैक्षिक समस्याओं एवं निम्न स्तरीय उपलब्धि की तरफ ले जाती है। सामाजिक-सांवेगिक समस्याओं को विजित करने में सहायता प्रदान करने के लिए मार्गदर्शन शिक्षक को इस प्रकार के बच्चों के गृह कार्य, अन्य लोगों के साथ गतिविधि एवं सम्प्रेषण को सुसाध्य बनाने में सहायता की आवश्यकता होती है।

वे इन विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त सहायता उपलब्ध कराने हेतु ट्यूशन या समकक्ष साथियों से सहायता आदि के प्रबंध के द्वारा प्रयास कर सकते हैं। वे एक सहयोगात्मक अधिगम वातावरण भी तैयार कर सकते हैं जहाँ पर बच्चे छोटे- छोटे समूहों में सीखते हैं। प्रत्येक सदस्य उत्तरदायी होता है और सहयोगात्मक कौशलों का प्रयोग करते हुए एक दूसरे की सहायता करता है। मार्गदर्शन शिक्षक नेतृत्व के लिए अवसरों को उपलब्ध कराता है तथा सभी से ऊँची अपेक्षाएँ रखता है। वह परिचर्चा, रोल प्ले, फिल्मों, आदि के माध्यम से इन बच्चों की कठिनाइयों के बारे में सामान्य श्रेणी के बच्चों में जागरूकता उत्पन्न करता है। अपनी शारीरिक अशक्तता, लापरवाह माता-पिता या अपने पास-पड़ोस के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के प्रति क्रोध के कारण विक्षिप्तता को व्यक्त करने के लिए आवश्यकता हो सकती है। इन अशक्तताओं वाले बच्चे किसी खेल गतिविधि या शारीरिक गतिविधि में शामिल न किए जाने के कारण प्राय: विक्षिप्त महसूस करते हैं। माता-पिता एवं अन्य देखभाल करने के साथ-ही-साथ शिक्षक तथा विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ विद्यालय में उनके द्वारा प्रदर्शित सामाजिक एवं सांवेगिक व्यवहारों को भी प्रभावित करती हैं। सीमित चालक कौशलों, स्वयं सहायता तथा स्वयं की देखभाल करने की क्षमता हेतु कौशल विद्यार्थियों की सामाजिक अन्योन्यक्रिया के दायरे को सीमित कर सकते हैं। तथापि वे उच्च स्तरीय सामर्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं यदि उनकी मानसिक योग्यताएँ क्षतिग्रस्त नहीं हुई हैं। इन बच्चों के द्वारा सामना की जा रही प्रमुख समस्या शारीरिक अशक्तता के प्रति अन्य लोगों की अभिवृत्ति है। इसलिए एक प्रसन्न अभिवृत्ति को विकसित करने में उनकी सहायता करना आवश्यक है। उन्हें अन्य लोगों के साथ अन्योन्यक्रिया का अवसर उपलब्ध कराने, सामान्य कार्यों में शामिल करना जिन्हें वे कर सकते हैं, यह सब उनके स्वाभिमान का निर्माण करने एवं वैयक्तिक एवं शैक्षिक स्वतंत्रता में सहायता करता है (जुल्का, 2007)।

इन बच्चों को सामान्य विद्यालयों में शामिल करने के लिए वास्तु-शिल्पीय बाधाओं को हटाने की आवश्यकता होगी क्योंकि कभी-कभी भवन का अभिविन्यास बहुत-सी समस्याओं, प्रतिबंधों एवं विक्षिप्तताओं का कारण हो सकता है। साधारण रैम्प (ढलान वाला रास्ता), हाथ के सहारे के लिए रेलिंग, चौड़े दरवाजे, शौचालय की उपयुक्त व्यवस्था एवं बैठने की व्यवस्था का प्रबंध करना आवश्यक है। सहयोगात्मक प्रौद्योगिकी का प्रयोग, आकलन प्रक्रियाओं में संशोधन, पुस्तकें, विद्यालयी सामग्रियों को संभालने में सहायता प्रदान करने के लिए समकक्ष साथियों का सहयोग समूह निर्माण करना, आदि को उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

अनगिनत अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि शारीरिक अशक्तता वाले व्यक्ति सामान्य व्यक्तियों की तुलना में प्रायः कम अनुकूल होते हैं। इस प्रकार की अभिवृत्ति को परिवर्तित करने की आवश्यकता है क्योंकि वे केवल सीमित रूप में अशक्त होते हैं और वे अन्य क्षेत्रों या अभिरुचियों में आश्चर्यजनक प्रदर्शन कर सकते हैं। परामर्शदाता के प्राथमिक उद्देश्यों में से एक शारीरिक अशक्तता वाले बच्चों को निर्भरता से आत्मनिर्भरता/स्वतंत्रता की तरफ ले जाना है। शारीरिक रूप से अशक्त लोगों में कुछ निश्चित कौशल एवं क्षमताएँ होती हैं जिन्हें अवशिष्ट कार्यप्रणाली के रूप में संबोधित किया जाता है जिसका प्रयोग उन्हें अधिक आत्मनिर्भर बनने में सहायता प्रदान करने के लिए करना चाहिए। अवशिष्ट कार्यप्रणाली के प्रयोग करने का अर्थ है कि शारीरिक रूप से अशक्त बच्चे उस कार्य पर केन्द्रित करें जिसे वे कर सकते हैं न कि उस कार्य पर जिसे वे नहीं कर सकते हैं उदाहरणार्थ – शरीर के निचले हिस्से में पक्षाघात से ग्रसित व्यक्ति व्हील चेयर में बैठने के लिए अपने हाथों का प्रयोग करता है।

परामर्शदाता इन बच्चों के अन्दर संभवतः उत्पन्न होने वाली विक्षिप्तता को कम करने के लिए उन्हें अपनी अशक्तता को स्वीकार करने एवं सहनशीलता को बढ़ाने में सहायता प्रदान करके कर सकते हैं। परामर्शदाता को कक्षा में शारीरिक रूप से अशक्त विद्यार्थियों की स्वीकृत के लिए एक वातावरण का निर्माण करना होगा और बच्चे को अधिगम गतिविधियों में अपने साथियों के साथ एक समान सहभागी के रूप में शामिल करना होगा। आपसी सम्मान, खुले दिल से सहारा देने एवं आपसी सहयोग के आधार पर साथियों में अन्योन्यक्रिया को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। इसे अन्य बच्चों को शारीरिक अशक्तता के अर्थ के विषय में सूचित जानकारी प्रदान करके सुसाध्य किया जा सकता है । परामर्शदाता को उनके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले सहयोगात्मक /निश्चयात्मक उपकरणों एवं गैजेट के सामंजस्य में उनकी सहायता करनी चाहिए।

क्रियाकलाप - 1

एक शारीरिक रूप से अशक्त व्यक्ति से उनके दैनिक जीवन में 'शारीरिक रूप से अशक्त व्यक्तियों के प्रति अभिवृत्ति' विषय पर बातचीत कीजिए। इस अभिवृत्ति को परिवर्तित करने के लिए क्या किया जा सकता है, इस पर करीब 200 शब्दों में संक्षिप्त में एक लेख तैयार कीजिए।

3.24 वाक् व्यतिक्रम

अब हम सम्प्रेषण व्यतिक्रम वाले बच्चों के विषय में परिचर्चा करेंगे। संप्रेषण व्यतिक्रम शब्दावली का प्रयोग भाषा के व्यवहारों का वर्णन करने के लिए किया गया है जो एक बच्चे की कालक्रमिक उम्र के सम्बंध में अपेक्षित अन्य बच्चों से अलग है।

3.24.1 वाक् से सम्बन्धित व्यतिक्रम

- उच्चारण व्यतिक्रम को वाक् ध्वनियों की असामान्य उत्पत्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। उदाहरण के लिए silly (सिली) के लिए thilly (थिली) या wed (वेड) का Red (रेड) के स्थान पर उच्चारण करना।
- आवाज व्यतिक्रम को वाचिक गुण, तारत्व स्वरमान, प्रबलता, अनुवाद तथा अवधि की अनुपस्थिति या असामान्य उत्पत्ति' आवाज व्यतिक्रम वाले व्यक्ति कभी -कभी बहुत कर्कश आवाज निकालते हैं या बहुत जोर से बोलते हैं या बहुत ऊँचे या बहुत नीचे तारत्व में बोलते हैं।
- प्रवाह व्यतिक्रम को मौखिक अभिव्यक्ति के असामान्य प्रवाह के रूप में परिभाषित किया गया है जो क्षतियुक्त दर एवं लय से विशेषित होती है जो द्वन्द्वात्मक व्यवहार के साथ हो सकती है और जो अनुपयुक्त हिचकिचाहट, विराम एवं दोहराना, ध्वनियों अक्षरों, शब्दों या वाक्यांशों के दीर्घीकरण अनिच्छा से शांतिपूर्ण विराम या रूकावटें तथा ध्वनियों को उत्पन्न करने में व्यक्ति की असमर्थता के कारण वाक् के प्राकृतिक निर्बाध बहाव में व्यवधानों से सम्बन्धित है।

वाक् व्यतिक्रम वाले बच्चों की विशेषताएँ या व्यवहारों को निम्नलिखित रूप में संक्षेपित किया गया है।

- वाक् अवयवों की प्रेक्षणीय विकृति।
- वाक् अवयवों के वाक्यांशों को बोलते समय प्राकृतिक (स्वाभाविक) रूप से रुकावट होती है।
- शिक्षक के द्वारा सुधारात्मक प्रयासों के बावजूद बार –बार गलत उच्चारण करना।

3.24.2 वाक् व्यतिक्रम वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन

जिन लोगों को बोलने में परेशानी होती है अन्य लोग उनके प्रति अलग प्रकार का व्यवहार करते हैं। इस वजह से सांवेगिक समस्याएँ जैसे- सामाजिक परिस्थितियों से दूरी बनाना, अस्वीकरण की भावना तथा स्वाभिमान में कमी उत्पन्न हो सकती हैं।

तुतलाने एवं हकलाने जैसी वाक् समस्याओं वाला बच्चा शर्मिन्दगी तथा सांवेगिक रूप से असुरक्षित महसूस कर सकता है। वह एकान्तिक हो सकता है , बोलने से मना कर सकता है तथा विशेष रूप से उत्तेजना के समय अपने विचारों को नहीं व्यक्त कर सकता/ती है।

शिक्षक/ परामर्शदाता द्वन्द्व उत्पन्न करने वाली परिस्थिति के तनाव को हटाने के लिए परामर्श कौशलों एवं तकनीकों का प्रयोग करते हुए बच्चे से बातचीत के द्वारा सांवेगिक असुरक्षा के कारणों का पता लगाने में उसकी सहायता कर सकता है और वांछित परिवर्तनों को लाने में मदद करता है।

परामर्शदाता निम्नलिखित रूप से सहायता कर सकता है-

- इन बच्चों के अधिगम को संसाध्य बनाने के लिए इस प्रकार की विशेष सामग्रियों जैसे – हस्तलिखित वर्णमाला, सांकेतिक भाषा-प्रणाली तथा मौखिक / हस्तलिखित संप्रेषण गतिविधियों ' काटना ',

'खींचना ', ' रंग ', रंगना ', ' फाड़ना ' मोड़ना, ' बनाना ' को एकल शब्द के उच्चारण के अभ्यास हेतु प्रयोग किया जा सकता है। यह बच्चे को विशेष शब्दों को बार-बार दोहराने के द्वारा सीखने में मदद करेगी तथा बाद में अन्योन्यक्रिया में सहभागिता के समय इन शब्दों के प्रयोग की आवश्यकता होगी।

- उपयुक्त भाषण के लिए अच्छे रोल मॉडल्स (वक्ताओं) को उपलब्ध कराना, जैसे धीरे-धीरे एवं स्पष्ट तरीके से बोलना, अच्छा उच्चारण अर्जित करना, आदि।
- बच्चे को लगातार बोलने में समर्थ बनाने के लिए बोलने का अभ्यास देना न कि अच्छा बोलने पर बल देना।
- सकारात्मक गुणों की तरफ इशारा करना और उनके सशक्त पक्ष को बाहर निकालने के लिए विद्यार्थियों को उनके सशक्त पक्ष से सम्बन्धित गतिविधियों में शामिल करना।
- बच्चे के पर्यावरण के अन्य सदस्यों को बोलने के द्वारा प्रामाणिक कार्यो की प्रशंसा करने के लिए न कि उपलब्धि के लिए प्रशंसा करने के सम्बन्ध में दिशा- निर्देश देना।
- वाक् व्यतिक्रम वाले एक व्यक्ति की कठिनाइयों एवं सफलता को प्रदर्शित करने के लिए अभिनय या रोल प्ले करना।

क्रियाकलाप -2

अपनी कक्षा के बच्चों के सहयोग से वाक् समस्याओं वाले बच्चों द्वारा अनुभव की जा रही समस्याओं को प्रदर्शित करने के लिए एक रोल प्ले या एक नाटक तैयार कीजिए।

3.25 श्रव्य – क्षति

श्रव्य वह मुख्य सांवेदिक रास्ता है जिसके द्वारा वाक् एवं मौखिक सम्प्रेषण विकसित होते हैं। जैसा कि श्रव्य अधिगम एवं परिपक्वन के अन्य पहलुओं को प्रभावित करता है इसलिए भाषा के सामान्य विकास में श्रव्य क्षति एक बड़ी बाधा बन सकती है।

श्रव्य - क्षति एक एकात्मक समूह नहीं है क्योंकि इसमें अलग-अलग स्तरों की श्रव्य-क्षति होती है (नम्र, मध्यम, तीव्र, प्रचंड या गंभीर)। श्रव्य हानि या क्षति को सुनने की क्षमता के संदर्भ में श्रव्य हानि का स्तर , वह अवस्था जिसमें क्षति उत्पन्न होती है तथा क्षति के प्रकार को समझने की आवश्यकता होती है।

3.25.1 श्रव्य क्षति के स्तर

वेबस्टर (1986) ने श्रव्य क्षति के चार स्तरों को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है।

श्रेणी	क्षति – डेसिबल में	प्रशिक्षु
सामान्य	25 डेसिबल तक	वयस्कों में अल्प मात्रा में

नम्र	20-40 डेसिबल तक	शोर की स्थिति में सुनने में कठिनाइयाँ जैसे कक्षा में
मध्यम	41-55 डेसिबल तक	शांत पर्यावरण में सामान्य रूप से सुनने में कठिनाई
तीव्र	59-90 डेसिबल तक	सुनने के लिए अवर्धन की आवश्यकता
गंभीर	90 डेसिबल से ऊपर	सुनने के सहायक यंत्रों के साथ भी सीमित एवं विकृत रूप में सुनना

तथापि कुछ सामान्य विशेषताएँ इसमें शामिल हैं –

- सम्प्रेषण विशेषताएँ – भाषा के प्रयोग एवं दूसरों द्वारा प्रयोग की गई भाषा को समझने में बाधाएँ।
- सामाजिक विशेषताएँ –जैसा कि ये बच्चे दुनिया को देखने के लिए अपने कानों से अधिक अपनी आँखों का प्रयोग करते हैं, उन्हें दूसरे लोगों को उनके द्वारा बोले गए शब्द को समझने के लिए उन्हें बहुत ध्यान से देखना होता है, सम्प्रेषण के लिए हाथ एवं शरीर का प्रयोग करते हैं , इस प्रकार उनका व्यवहार कभी-2 लोगों को आश्चर्यजनक एवं सख्त प्रतीत होता है।

शैक्षिक विशेषताएँ

भाषा की कठिनाई के कारण ठीक प्रकार से न सुन पाने वाले विद्यार्थी पढ़ने एवं गणित दोनों में निम्न स्तरीय उपलब्धि प्राप्त करने वाले होते हैं। पढ़ने में समस्याएँ तीन सामान्य क्षेत्रों में हो सकती हैं – शब्द-संग्रह, वाक्य-रचना तथा प्रतीकात्मक भाषा जिसमें मुहावरे शामिल हैं।

शब्द - संग्रह – शब्दों के अर्थ का ज्ञान।

वाक्य – रचना – वह तरीका जिसमें अर्थ की इकाइयाँ एक-दूसरे के साथ संयोजित की जाती हैं।

प्रतीकात्मक भाषा – जब अक्षरों को एक भौतिक संरचना दी जाती है। जब आप पदार्थों को देखते हैं तब उनके शारीरिक उपस्थिति के विषय में सूचना प्राप्त करते हैं तथा एक मानसिक छवि या आरेख बनाते हैं जो आपको उन पदार्थों को पहचानने में सहायक होते हैं जब आप उन्हें पुन: देखते हैं।

3.25.2 श्रव्य –क्षति वालों के लिए पहचान निरीक्षण सूची

प्रारम्भिक अंत:क्षेपों से इस प्रकार के बच्चे भाषा को ही समझने, पढ़ने और आस-पड़ोस के विषय में सूचना प्राप्त करने में समर्थ हो जाते हैं।

एक मार्गदर्शन शिक्षक के रूप में आप विद्यार्थी को श्रवण विज्ञान के विशेषज्ञ के पास परामर्श हेतु भेज सकते हैं। आपको श्रव्य क्षति वाले विद्यार्थी के कुछ सामान्य प्रतीकों/लक्षणों को देखना चाहिए और सुधार के लिए जितना शीघ्र हो सके उसे परामर्श भेजना चाहिए। निम्नलिखित सामान्य लक्षण श्रव्य क्षति के संकेत हो सकते हैं –

- विद्यालय में ध्यान देने में कठिनाई।
- सुनने के उद्देश्य के लिए एक कान की सहायता लेना।
- पीछे की तरफ से बोली जाने वाली बातों को सुनने में कठिनाई।
- बहुत जोर से या बहुत कोमल आवाज में बोलना।
- गलत उच्चारण के कारण आवाज की समस्याओं का प्रदर्शन करना।
- रेडियो / टेलीविजन बहुत ऊँची आवाज में चलाना।
- असम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देना।
- अपने हमउम्र साथियों से दूर रहना।
- कई बार दोहराने के बाद ही बात को समझना।
- वक्ता के सुनने एवं समझने के लिए बोलने वाले के चेहरे पर ध्यान केन्द्रित करना।
- शिक्षक के द्वारा दी जा रही सूचनाओं को लिखने के लिए अन्य विद्यार्थियों से सहायता लेना।
- बार-बार कान में दर्द या कान बहने की शिकायत करना।
- बार-बार कान को खुजलाना।
- कान का विकार द्रष्टव्य होता है।

आत्म- निरीक्षण अभ्यास -2

निम्नलिखित स्तम्भों का मिलान कीजिए –

1. भाषा – प्रवाह व्यतिक्रम	अ मानसिक आरेख
2. श्रव्य – क्षति की मध्यम श्रेणी	ब सीमित एवं विकारयुक्त वाक् ध्वनियाँ
3. प्रतीकात्मक भाषा	स द्वंद्वात्मक व्यवहार
4. श्रव्य – क्षति की गंभीर श्रेणी	द अर्थ की मिश्रित / संयोजित इकाइयाँ
5. वाक्य –रचना	क 41-55 डेसिबल

3.25.3 श्रव्य-क्षति वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन

जिन बच्चों में तीव्र श्रव्यक्षति है उन्हें विशेष विद्यालयों में पढ़ने तथा अलग प्रकार की पाठ्यचर्या का अनुपालन करने की आवश्यकता होती है क्योंकि वे सामान्य विद्यालय की पाठ्यचर्या के साथ चलने में समर्थ नहीं हो सकते हैं। इसी प्रकार से नम्र या मध्यम रूप से श्रव्य-क्षति वाला एक बच्चा एक नियमित विद्यालय में तभी

मिलेगा जब विद्यालय में विशेष विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की देखभाल के लिए दिशा-निर्देश देने एवं सुविधा प्रदान करने का प्रावधान हो। उदाहरणार्थ– विद्यालय में एक मार्गदर्शन अध्यापक या संसाधन शिक्षक तथा अन्य सुविधाएँ होनी चाहिए जिनकी नीचे परिचर्चा की गई है। श्रव्य क्षति की तीव्रता के आधार पर एक मार्गदर्शक शिक्षक के द्वारा पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों की अनुकूलता के लिए सुझाव दिया जाना चाहिए। बधिर विद्यार्थियों के लिए प्रतीक भाषा का शिक्षण महत्वपूर्ण है। भाषा प्रतीकों में सम्पूर्ण शब्दों या वाक्यों को बनाने के लिए हाथों, अँगुलियों एवं भुजाओं का प्रयोग करना शामिल है।

सुनने में कठिनाई का अनुभव करने वाले बच्चे के लिए अन्य प्रावधान उसे सामने की तरफ बैठाना है विशेष रूप से बीच से थोड़ा खिड़की की तरफ जहाँ से वह बेहतर तरीके से सुनने एवं बोलने वाले के होठों को पढ़ने में समर्थ हो सके। प्रकाश शिक्षक के चेहरे की तरफ होना चाहिए तथा बच्चे की आँखों से अलग होना चाहिए। यदि श्रव्य-क्षति केवल एक कान में है या क्षति दूसरे कान की तुलना में एक में बहुत अधिक है तो बच्चे को सामने की तरफ कोने वाली सीट पर बैठाना चाहिए ताकि उसका सुनने वाले बेहतर कान शिक्षक की तरफ हो। बच्चे को शिक्षक के चेहरे को देखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जब शिक्षक बच्चे से बात कर रहा हो। शिक्षक के लिए जितना भी संभव हो सके बच्चे से आँख मिलाकर बात करना चाहिए। शिक्षक को श्रव्य क्षति वाले बच्चे के सिर की मुद्रा पर भी ध्यान देना चाहिए क्योंकि बेहतर ढंग से सुनने के लिए सिर को आगे की तरफ बढ़ाना या गर्दन को घुमाना यह दृढ़तापूर्वक स्थिर हो सकता है। सुनने में कठिनाई का अनुभव करने वाले बच्चे से बोलते समय शिक्षक को जोर से बोलना नहीं चाहिए या होठों की गतिशीलता को बढ़ा-चढ़ाकर प्रयोग नहीं करना चाहिए।

श्रव्य-क्षति वाले बच्चों को श्रव्य सम्बंधी प्रशिक्षण के लिए श्रव्य विज्ञानी के पास भेजना चाहिए। शिक्षक श्रव्य क्षति वाले बच्चे को कविता पाठ करने वाले बच्चों के चेहरों को ध्यानपूर्वक देखने के लिए प्रोसाहित करके उनकी सहायता कर सकता है। संगीत में अभिरुचि तथा कंठ संगीत में सहभागिता के लिए इन बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए। बच्चों को खेलों एवं अन्य सभी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिसमें बोलना आवश्यक होता है।

शिक्षक को श्रव्य-क्षति वाले बच्चे की किसी भी बीमारी के विषय में सावधानी पूर्वक देखभाल करनी चाहिए। सर्दी, इन्फल्युएन्जा (प्रतिश्याय), गले एवं नाक का संक्रमण, तुण्डिका-शोध (Tonsillitis) और अन्य बीमारियों का जितना जल्दी संभव हो उपचार कराना चाहिए क्योंकि इनसे कान में संक्रमण हो सकता है और सुनने में और भी हानि हो सकती है।

क्रियाकलाप -3

अपने शहर में श्रव्य– क्षति वाले विद्यार्थियों का ध्यान रखने वाले किसी विद्यालय या गैर-सरकारी संस्था (NGO) में जाइए। इन बच्चों की सहायता के लिए किए जा रहे किन्हीं दस गतिविधियों की सूची बनाइए एवं वर्णन कीजिए।

3.26 दृश्य- क्षति / दृष्टिहीनता

आँख का दृश्य कार्य पर्यावरण से दृश्य सूचना को एकत्रित करना एवं मस्तिष्क में सम्प्रेषित करना है। बाहर की दुनिया के विषय में करीब 80-90 % तक सूचनाएँ हमारी आँखों के द्वारा एकत्रित की जाती हैं। दृश्य रूप से क्षतिग्रस्त लोग इस निवेश से वंचित हैं।

दृष्टिहीनता/दृश्य - क्षति को देखने की योग्यता में कमी के रूप में परिभाषित किया गया है (निल्सेन, 2002)। दृश्य-क्षति का वर्णन करने के लिए आंशिक रूप से देखने, वैध रूप से अन्धा, निम्न-स्तरीय दृश्य क्षमता, तथा पूर्णतया अंधा शब्दावली का सामान्य रूप से प्रयोग किया जाता है।

दृश्य रूप से क्षतिग्रस्त बच्चे वे हैं जो दृश्य तीक्ष्णता, दृश्य के क्षेत्र तथा दृश्य में प्रवीणता के संदर्भ में कठिनाई का सामना कर रहे हैं। दृश्य- क्षति एक अवस्था है जिसमें एक विद्यार्थी की दृश्य क्षमता इस सीमा तक कम होती है कि यह सामान्य कार्य-प्रणाली को प्रभावित करती है। दृश्य- क्षति का सबसे तीव्र प्रभाव पूर्णतया अंधापन है।

तथापि, अधिक मात्रा में दृश्य रूप में क्षतिग्रस्त बच्चे अंधे नहीं होते हैं क्योंकि अनुमानत: सभी दृश्य रूप से क्षतिग्रस्त बच्चों में करीब दो-तिहाई बच्चों में दृश्य-सम्बंधी कुछ क्षमता होती है। विभिन्न देशों में अलग-अलग तरीकों से अंधा, निम्न स्तरीय दृश्य क्षमता तथा आंशिक रूप से देखने की वैधता जैसे शब्दों को पारिभाषित किया गया है। इन दो शब्दावलियों को समझने के लिए आपको अपने देश की वैध परिभाषाओं को अवश्य देखना चाहिए। यहाँ पर दी गई परिभाषा भारतीय परिप्रेक्ष्य में है। अंधेपन के अधिकतर मामले या तो रोके जा सकते हैं या उपचार योग्य हैं। दृश्य- क्षति के कारण कक्षा में पुस्तक पढ़ने या श्यामपट्ट पर लिखे हुए को देखने में कठिनाई होती है जिससे अधिगम में कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

दृश्य – सम्बन्धी प्रमुख समस्याओं को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है –

अ- अंधापन ब- निम्न स्तरीय दृश्य क्षमता

भारत में अंधेपन के नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम में 6 मीटर या 20 फीट की दूरी से अँगुलियाँ को गिनने में एक व्यक्ति की अयोग्यता के वर्णन के रूप में अंधेपन की एक सामान्य परिभाषा दी गई है। धारा, 1995 (समान अवसरों, समान अधिकारों तथा पूर्ण सहभागिता) में अशक्तता वाले व्यक्यिों के सम्बन्ध में देखने में असमर्थता को दो भागों में विभक्त किया गया है –

अंधापन उस अवस्था से सम्बन्धित है जिसमें व्यक्ति निम्नलिखित अवस्थाओं में से किसी एक से पीड़ित होता है –

i. दृश्य की पूर्णतया अनुपस्थिति या

ii. दृश्य तीक्ष्णता जिसमें दृश्य दृष्टि की स्पष्टता सही लेंस के साथ बेहतर आँख में 6160 या 201200 स्नेलेन (मानक दृष्टि) से अधिक नहीं होती है या

iii. दृष्टि के क्षेत्र की सीमा 20 डिग्री के कोण या उससे खराब अंतरित होती है।

'अंधा' शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से उन विद्यार्थियों के लिए किया जाता है जिन्हें बिल्कुल दिखाई नहीं देता है या बहुत सीमित रूप में प्रकाश का बोध होता है। दृश्य रूप से क्षतिग्रस्त कुछ बच्चे ब्रेल लिपि से पढ़ सकते हैं जो अंधे लोगों के लिए प्रिंट के रूप में बनाई गई है।

निम्नस्तरीय दृष्टि वाले व्यक्तियों से तात्पर्य उपचार के पश्चात् या मानक अपवर्तक सुधार के बावजूद भी एक व्यक्ति की दृष्टि कार्य-प्रणाली की क्षतिग्रस्तता से है जो उपयुक्त सहयोगात्मक उपकरणों के साथ एक कार्य की योजना बनाने या क्रियान्वित करने हेतु दृष्टि का प्रयोग करता है या दृष्टि का प्रयोग करने में संभाव्य रूप में सक्षम है।

निम्न स्तरीय दृष्टि उन व्यक्तियों का वर्णन करती है जो सामान्य रूप से प्रिंट को पढ़ सकते हैं ग्रद्यपि वे इस प्रकार की दृष्टि सहायकों जैसे – आवर्धक लेंसों या प्रिंट के आकार को बढ़ाने वाले अन्य साधनों पर निर्भर रहते हैं।

3.26.1 दृश्य रूप से क्षतिग्रस्त दृष्टिहीन लोगों की विशेषताएँ एवं आवश्यकताएँ

दृश्य क्षतिग्रस्त सामान्य रूप से (1) तीक्ष्णता तथा (2) क्षेत्रीय कमी (एक बच्चे द्वारा दिखाई दे सकने वाला क्षेत्र जब वह अपने सामने सीधा देख रहा है) के द्वारा मापा जाता है जो बच्चे के विविध अनुभवों के अनावरण को प्रभावित करते हैं। दृष्टि-अशक्तता वाले विद्यार्थियों की जनसंख्या बहुत विषम है। तथापि ये कुछ सामान्य विशेषताएँ एवं आवश्यकताएँ है जिनमें शामिल हैं –

- आकस्मिक अधिगम हेतु सीमित अवसर।
- अनुभवों के क्षेत्र एवं विविधता में सीमाएँ।
- बाहर घूमने एवं पर्यावरण के साथ अन्योन्यक्रिया की योग्यता में सीमितताएँ।
- शिक्षा एवं सम्प्रेषण में सीमितताएँ।
- आत्मविश्वास के अर्जन में सीमितताएँ।

विभिन्न परिस्थितियों में एक बच्चे के कार्य करने के स्तर के क्रियात्मक आकलन एवं आँख से सम्बन्धित किसी समस्या के लिए जरूरी इन आवश्यकताओं की पहचान के लिए बच्चे का गहन प्रेक्षण आवश्यक हो सकता है। बच्चा लम्बी अवधि के लिए आँख बन्द करके कार्य करने में सक्षम नहीं हो सकता है और विद्यालय के वातावरण में उसे घूमने के विषय में सीखने की आवश्यकता हो सकती है। उसे चिकित्सीय सहायता की भी जरूरत हो सकती है। कभी – कभी इनके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले दृष्टि सहायकों के कारण दूसरों के द्वारा इन बच्चों का मजाक उड़ाया जा सकता है। इस प्रकार वे निम्न स्तरीय स्वाभिमान या नकारात्मक आत्म –सम्प्रत्यय विकसित कर सकते हैं। नीचे की गई पहचान निरीक्षण सूची उनके द्वारा सामना की जा रही कई अन्य कठिनाइयों का संकेत करती है –

- आँखों में द्रष्टव्य कमी।
- आँखों का बार-बार लाल होना।
- आँखों को अत्यधिक रगड़ना।

- आँखों के बहुत नजदीक पुस्तक या पदार्थों को पकड़ना।
- एक आँख को ढंकना तथा सिर को आगे की तरफ झुकाना।
- आँखों को बार-बार झपकाना।
- कक्षा में काले / सफेद बोर्ड से लिखते समय अन्य बच्चों से सहायता माँगना।
- आँखों से बहुत ध्यानपूर्वक कार्य करने में सिरदर्द की शिकायत करना।
- आँखों में पानी आना।
- पुतलियों के आकार में विभिन्नता।
- प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता।
- अन्यमनस्कता।
- दूर की चीजों / पदार्थों की पहचान करने की कोशिश करते समय तनाव महसूस करना।
- चलते समय गलत तरीके से चलना।

यदि एक बच्चा इन व्यवहारों में से कुछ का प्रदर्शन करता है तब शिक्षक उसे आँखों के निरीक्षण के लिए या चिकित्सीय उपचार के लिए जन स्वास्थ्य केन्द्र या हॉस्पिटल में परामर्श हेतु भेज सकते हैं।

3.26.2 दृश्य क्षति वाले (दृष्टिहीन) बच्चों के लिए मार्गदर्शन

दृष्टिहीनता का सामना प्रत्यक्षात्मक, व्यवहारात्मक, विचारात्मक एवं सांवेगिक स्तरों पर करना पड़ता है क्योंकि ये सब आपस में अन्योन्याश्रित हैं। उदाहरणार्थ-दृष्टिहीनता के कारण बच्चा अपने को किस प्रकार से देखता है? किस प्रकार का व्यवहार प्रदर्शित करता है? क्या वह आक्रामक है या रक्षात्मक? सामान्य रूप से किस प्रकार के विचार एवं भावानाएँ व्यक्त की जाती हैं, आदि आवश्यकताओं को देखना चाहिए। उन लोगों में चिन्ता एवं निराशा जैसी सांवेगिक आवश्यकताएँ सामान्य हैं जिन्होंने अभी हाल ही में दृष्टिहीनता को अनुभव किया है। इस प्रकार दृश्य क्षति वाले बहुत-से विद्यार्थी निराशावादी होते हैं , अपने भविष्य के विषय में निराशाजनक भविष्यवाणी करते हैं और इस प्रकार स्वाभिमान की कमी से पीड़ित होते हैं।

दृष्टिहीन/ दृश्य क्षति वाले बच्चे अपने उन साथियों से जिनकी दृश्य क्षमता बिल्कुल सही है विद्यालयी उपलब्धि में काफी पीछे रहते हैं। शिक्षक/परामर्शदाता से जितना भी संभव हो सके इन बच्चों को सर्वाधिक उपयुक्त शैक्षिक पर्यावरण में रखना चाहिए जो उनके अधिगम को सरल बनाएगा। अगला बिंदु पाठ्यचर्या पर विचार करना है जो उनकी आवश्यकताओं के सर्वाधिक अनुकूल हो।

- अभिभावकों को उनके दृश्य क्षति वाले बच्चे के प्रबल पक्षों एवं योग्यताओं के विषय में परिचित कराने की आवश्यकता होती है। उन्हें यह सूचना देना बहुत आवश्यक है कि थोड़े-से प्रयास एवं प्रशिक्षण से बच्चे को अपने दैनिक जीवन के कार्यों को करने में आत्म निर्भर बनाया जा सकता है।

दृश्य-क्षति वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हेतु परामर्शदाता निम्नलिखित कुछ दिशा-निर्देशों को देख सकते हैं -

- दृष्टिहीन बच्चों को सामने बैठाना ताकि वे बिना अधिक कठिनाई के काले/ सफेद बोर्ड से पढ़ने में समर्थ हो सकें।
- सफेद बोर्ड पर मोटे एवं स्पष्ट अक्षरों में लिखिए और जो कुछ आप लिखें उसे जोर से पढ़िए।
- दृष्टिहीनों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बड़े अक्षरों वाले प्रिंट की पुस्तकें उपलब्ध कराइए (18 नम्बर से अधिक में मुद्रित)।
- शारीरिक शैक्षिक खेलों में सहभागिता के लिए अवसर उपलब्ध कराना।
- अपने क्षेत्र के पुनर्वास केन्द्रों / अस्पतालों से उन बच्चों के लिए हाथ द्वारा देखा जाने वाला लेंस, आवर्धक लेंस मँगाइए जिनकी दृष्टिहीनता चश्मे के लेंस से परे होती है।
- अनुपूरक सहायक सामग्रियों जैसे घूमने के लिए छड़ी, संख्या की अवधारणा को सीखने के लिए ब्रेल गिनतारा (abacus), पढ़ने एवं लिखने के लिए ब्रेल स्लेट एवं शलाका तथा कक्षा में श्रुतलेख लेने की गति का सामना करने के लिए ब्रेलमेट (Braillemate)
- श्रव्य-कौशलों में प्रशिक्षण देना।

मार्गदर्शन का चरम लक्ष्य इन बच्चों को अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं को समझने के योग्य बनाना है ताकि उनका समाज में एक सम्मानित स्थान प्रतिष्ठापित हो सके और जितना भी संभव हो एक खुशहाल एवं समृद्ध जीवन बिता सकें।

क्रियाकलाप – 4

अपनी आँखों पर पट्टी बांधकर एक दिन के लिए आप दृष्टिहीन होने का अभ्यास कीजिए और अपने द्वारा सामना की गई कठिनाइयों एवं समस्याओं को लिखिए।

3.27 शारीरिक रूप से अशक्त विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए कुछ सामान्य योजनाएँ

एक शारीरिक रूप से अशक्त बच्चे के लिए मार्गदर्शन अशक्तता की शुरुआत एवं पहचान के समय उसकी उम्र के आधार पर सुनिश्चित किया जाएगा। परामर्शदाता निम्नलिखित कुछ अंत:क्षेपों को देख सकते हैं जो एक सीमा तक सामंजस्य स्थापित करने में बच्चे की सहायता कर सकते हैं।

परामर्शदाता को निम्नलिखित महत्वपूर्ण मामलों को देखने की आवश्यकता है।

आत्म निर्भरता विकसित करना

जैसा कि पहले ही विचार विमर्श किया जा चुका है कि किसी भी प्रकार की शारीरिक अशक्तता वाले विद्यार्थियों को विस्तृत रूप में वैयक्तिक एवं सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसके लिए उन्हें अन्य लोगों पर निर्भर रहना होता है। इस प्रकार निर्भरता की भावना उनमें हीनता या अपराध का भाव उत्पन्न कर सकती

हैं एवं एक निम्न स्तरीय आत्म-सम्प्रत्यय विकसित करती हैं। परामर्शदाता को इन विद्यार्थियों के लिए ऐसी गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए जो उन्हें समाजीकरण एवं सम्प्रेषण कौशलों को सीखने में समर्थ बना सकें जिसकी आत्मनिर्भरता तथा निर्भरता या अति निर्भरता के बीच यथार्थात्मक संतुलन को विकसित करने हेतु आवश्यकता है। विद्यालय में नियमित तथा विशेष विद्यार्थियों के बीच समाजीकरण को प्रोत्साहन देने के लिए समूह गतिविधियों को आयोजित किया जा सकता है। विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार सेवाएँ उपलब्ध कराके भी आत्मनिर्भरता विकसित करने में सहायता की जा सकती है। उदाहरणार्थ शिक्षक एक बच्चे को व्हील चेयर का प्रयोग करना सिखाता है। शारीरिक रूप से अशक्त बच्चे को अनुदेशनात्मक सामग्रियों एवं कक्षा के उपकरणों/ साज-सामान का प्रयोग करने में भी कठिनाइयाँ हो सकती हैं जैसे एक विद्यार्थी पुस्तक को पकड़ने या पृष्ठों को पलटने में, कक्षा के टेप-रिकॉर्डर के प्रयोग में सक्षम नहीं हो सकता है। इस प्रकार के मामले में किताबों को रखने के लिए पुस्तक स्टैंड, पृष्ठों को सुरक्षित रखने के लिए खुली हुई पुस्तक के लिए दोनों तरफ लचीला फीता या रबर बैंड या बड़ा पेपर क्लिप प्रयोग किया जा सकता है।

अभिवृत्तिक (मनोवृत्तिक) बाधाओं को हटाना

किसी भी पर्यावरण में शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों की सफलता में सबसे बड़ा अवरोध उनके प्रति शिक्षकों एवं समुदाय के अन्य लोगों की नकारात्मक अभिवृत्ति रही है। इस अवरोध को मास मीडिया के द्वारा लोगों को संवेदनशील बनाकर, दिशा-निर्देश कार्यक्रमों, शारीरिक रूप से अशक्त व्यक्तियों की सफलता की कहानियों तथा मुद्रित साहित्य वितरित करके और परामर्श के द्वारा हटाया या कम किया जा सकता है। वे अशक्त व्यक्ति जो बहुत सफल हैं उन्हें एक रोल मॉडल के रूप में सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम में शामिल किया जा सकता है। इस प्रकार की गतिविधियों जैसे – विद्यालय में अशक्तता दिवस का आयोजन करना, समुदाय से लोगों को भाषण के लिए आमंत्रित करना, सभी बच्चों के लिए प्रतियोगिता रखना जिसमें शारीरिक रूप से अशक्त बच्चे शामिल हों, अन्य रणनीतियाँ / योजनाएँ हो सकती हैं।

सशक्तीकरण

शारीरिक रूप से अशक्त व्यक्तियों के सशक्तीकरण हेतु कुछ अन्य सुझाव निम्नलिखित हैं –

- उनकी चिन्ताओं को व्यक्त करने के लिए माध्यम उपलब्ध कराना तथा क्षति/असमानता को स्वीकार करने में सहायता करना।
- अन्य बच्चों को योजना बनाने एवं निर्णय लेने में शामिल करके शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति उन्हें संवेदनशील बनाना।
- शारीरिक अशक्तता के विषय में माता-पिता को शिक्षित कराना ताकि वे जन्म से ही अपने बच्चे को पूरा सहयोग उपलब्ध करा सकें।
- शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों को उपयुक्त नियोजन प्राप्त करने में समर्थ बनाने के लिए उन्हें शैक्षिक कार्यक्रमों, नियोजन एवं प्रशिक्षण अवसरों के विषय में पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराना।

- प्रख्यात व्यक्तियों की सफल कहानियों, जीवनियों/आत्मकथाओं की सहायता से उनके अन्दर आत्मविश्वास पैदा करने की शिक्षा प्रदान करना।

अभिभावकीय आवेष्टन

अभिभावकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों में उन्हें दिशानिर्देश देना चाहिए ताकि वे बच्चों में आत्म-निर्भरता एवं आत्मविश्वास की भावना का विकास करने के लिए उन्हें प्रत्येक कार्य को स्वयं करने की अनुमति प्रदान करें। अभिभावकों को संवेदनशील बनाना चाहिए ताकि वे अपने बच्चों के शैक्षिक, सामाजिक एवं अन्य गतिविधियों के लिए पर्याप्त मात्रा में समय एवं सहयोग उपलब्ध कराएँ। उन्हें पेशेवरों एवं विद्यालय स्टाफ से सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए यदि उन्हें अपने बच्चे के लाभ के लिए किसी भी समय किसी भी प्रकार की सहायता आवश्यक हो। अभिभावकों को अपने बच्चे के विषय में शर्मिंदा न होने के लिए भी संवेदनशील बनाना चाहिए। पड़ोसियों, मित्रों एवं रिश्तेदारों की बातों पर ध्यान देने की जरूरत नहीं है जब वे आपके बच्चे के विषय में अपमानजनक एवं लज्जायुक्त बातें कह रहे हों। अभिभावकों को सभी परिस्थितियों में बच्चे को अन्य लोगों के साथ घुलने-मिलने की अनुमति देनी चाहिए। उन्हें किसी चमत्कार के न घटने की अपेक्षा करने के विषय में जागरूक करने की आवश्यकता है। जैसा कि इस बीमारी के उपचार की कोई संभावना नहीं भी हो सकती है तथा उन्हें इस वास्तविकता को स्वीकार करने और अपने बच्चे जैसे भी हैं उनके प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करने में सहायता की जा सकती है ।

3.28 सारांश

इस इकाई में हमने शारीरिक अशक्तता के कारण उत्पन्न होने वाली विशेष आवश्यकताओं के बारे में विचार-विमर्श किया है। शारीरिक अशक्तता बच्चों की सामान्य वृद्धि एवं विकास चाहे यह शारीरिक, सामाजिक, सांवेगिक या मानसिक हो, एक बाधा के रूप में कार्य करती है।

विविधि प्रकार की शारीरिक अशक्तता जैसे विकलांगीय क्षति, आक्षेपात्मक व्यतिक्रमों, वाक्, श्रव्य एवं दृश्य व्यतिक्रमों के विषय में चर्चा की गई है। और भी, शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं के लिए विविध शारीरिक अशक्तताओं के लिए पहचान निरीक्षण सूची उपलब्ध कराई गई है जो शारीरिक रूप से अशक्त बच्चे को समय से पहचानने के लिए एवं कार्यक्रमों तथा गतिविधियों की योजना बनाने के लिए प्रदान की गई है ।

शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों के लिए प्रारम्भिक अंत:क्षेप विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वास्तविक अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अधिगम के समय जितना भी संभव हो उन्हें आत्मनिर्भरता को पूरा विकसित करने की आवश्यकता है तथा आवश्यकता पड़ने पर ही सहायता स्वीकार करना है।

परामर्शदाताओं को अभिभावकों एवं जन सामान्य द्वारा शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों को स्वीकार करने के लिए तथा इस संदर्भ में जागरूकता उत्पन्न करने तथा इन विद्यार्थियों को जितना संभव हो सके आत्म निर्भर एवं सामाजिक रूप से स्वीकृत योग्य बनने में सहायता प्रदान करने के लिए अथक प्रयास करने की आवश्यकता है।

परामर्श का मूल तत्व शारीरिक रूप से अशक्त बच्चों के परिवारों के साथ सहयोग प्रणाली का निर्माण करना है। समस्याओं का सामना करने के लिए तथा हर संभव तरीके से बच्चे के कल्याण को प्रोत्साहित करने के लिए अभिभावकों की सहायता हेतु आत्मीय सम्बन्धों के निर्माण की आवश्यकता है।

आत्म– मूल्यांकन अभ्यास

1. विकलांगीय क्षति वाले बच्चे विद्यालय में किस प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं और उनकी सहायता के लिए क्या किया जा सका है, इसका संक्षेप में वर्णन कीजिए।
2. वाक् –क्षति वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन में एक परामर्शदाता की भूमिका का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
3. श्रव्य क्षति वाले बच्चों की विशेषताओं /लक्षणों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु

– विद्यालय में उपस्थिति

– दर्द, कालक्रमिक बीमारियाँ

– सही ढ़ंग से बैठने में कठिनाइयाँ

– शैक्षिक समस्याएँ

– सामाजिक एवं सांवेगिक समस्याएँ

सहायता हेतु योजनाओं में अतिरिक्त सहयोग जैसे – अतिरिक्त शिक्षण या साथियों द्वारा शिक्षण का प्रबंध करना, सहयोगात्मक अधिगम पर्यावरण का निर्माण करना, सभी से उच्च अपेक्षाएँ रखना, नेतृत्व कौशल के अवसरों को उपलब्ध कराना, परिचर्चाओं, रोल प्ले, फिल्में, आदि के द्वारा जागरूकता उत्पन्न करना, वास्तुशिल्पीय बाधाओं को दूर करना, सहयोगात्मक प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना, आकलन प्रक्रियाओं का प्रयोग करना, समकक्ष साथियों के द्वारा सहयोग समूह का निर्माण करना, उन्हें कार्यो में शामिल करना, आदि उपलब्ध कराने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जिससे वे अपने स्वाभिमान का निर्माण कर सकें।

2- परामर्शदाता इस प्रकार की विशेष सामग्रियों का प्रयोग कर सकता है जैसे- हस्त-लिखित वर्णमाला, सांकेतिक भाषा-प्रणाली, आदि और उपयुक्त भाषण, वाक् अभ्यास प्रदान करने, सकारात्मक गुणों पर ध्यान देते हुए नाटक या रोल प्ले का प्रयोग, वाक् व्यतिक्रम वाले बच्चों की सहायता के लिए पास-पड़ोस के अन्य सदस्यों को जानकारी प्रदान करने के लिए अच्छे रोल मॉडल्स उपलब्ध करा सकता है।

3- निम्नलिखित बिंदुओं को विस्तार से लिखना है -

आत्म-निरीक्षण अभ्यास -1

1– अ 2- द 3-ब 4-स

आत्म - निरीक्षण अभ्यास -2

1– स 2- क 3-अ 4-ब 5-द

संदर्भ पुस्तकें

- Julka, A. 2007. Meeting Special Needs in Schools: A Manual. NCERT, New Delhi.
- McCormick, L. and Schiefelbusch, R. L. 1990. Early Language Intervention: An Introduction (2nd ed.). Merrill Publishing Company, Columbus.
- Nielsen, L. B. 2002. Brief Reference of Student Disabilities: With Strategies for the Classroom. Corwin Press, California.

पठनीय पुस्तकें :

- BPA and NIVH. 2002. Learning Through Doing. Blind People's Association, Ahmedabad.
- Gerealis, E. (Ed.). 1991. Children with Cerebral Palsy: A Parent's Guide. Woodbine House, Rockville, MD.
- Goel, S. K. 1985. Blindness and Visual Impairment. Socio-Psychic Scientific Information Bureau, Delhi.
- Goel, S. K. 2000. Improving Quality of Life in India: Challenges and Emerging Concerns. in Kenneth D. Keith and Robert L. Schalock (Eds) Cross-cultural Perspectives on Quality of Life. American Association on Mental Retardation (Chapter 20, pp 231–239), Washington, DC.
- Keller, H. 1933. Helen Keller in Scottland. Methuen & Co. Ltd, London.
- Luetke-Stahlman, B. and Luckner, J. 1991. Effectively Education Students with Hearing Impairments. Longman, White Plains, New York.
- Lynch, E. W., Lewis, R. B. and Murphy, D. S. 1993. Educational services for children with chronic illnesses: Perspectives for educators and families. Exceptional Children, 59, 210–220.
- Reisner, H. (Ed.). 1993. Children with Epilepsy: A Parent's Guide. Woodbine House, Rockeville, MD.
- Rezen, S. V. and Hausman, C. 1985. Coping with Hearing Loss: A Guide for Adults and their Families. Dembner Books, New York.

- Rezen, S.V. and Hausman, C. 2000. Coping with Hearing Loss: A Guide for Adults and their Families (3rd ed.). Dembner Books, New York.
- Singleton, P. 1992. We can! Empowerment of people who are deaf: An empowerment agenda for the 1990s and beyond. OSERS News in Print, 5(2), 12–15.
- Umbreit, J. (Ed.). 1983. Physical Disabilities and Health Impairments. An introduction. Merrill, Columbus, OH.
- Warren, D. 1984. Blindness and Early Childhood Development. American Foundation for the Blind, New York.
- Bloom, L. and Lahey, M. 1978. Language Development and Language Disorders. John Wiley & Sons, New York.
- Sahu, S. M. 2005. Education of Children with Special Needs. Anmol Publications, New Delhi.
- Webster, A. 1986. Deafness, Development and Literacy. Methuen, London.

Websites

http://atschool.eduweb.co.uk/peterheadcentral.pr/lang%20unit%20
Images/cartoon%206.GIF
http://www.ucl.ac.uk/news/images/voicehallucination/
www.co.sanmateo.ca.us/smc/department/printable
www.eric.ed.gov/ERICDocs/data/ericdocs2sql/content_storage_01/0000019b/80/28/03/
db.pdf
www.honeybeeits.com
www.theindian.com/newsportal/lifestyle/people-must-sensitizethemselves-to-the-needs-of-the-physically-challenged-soni_10029132.html.
www.therightresort.com/images/accessibility

4

मार्गदर्शन एवं परामर्श में मूल्यांकन

4.0 परिचय

4.1 उद्देश्य

4.2 मूल्यांकन क्या है ?

4.2.1 मूल्यांकन का अर्थ

4.2.2 मूल्यांकन का उद्देश्य

4.2.3 मूल्यांकन के सिद्वान्त

4.3 मूल्यांकन के लिए मापदण्ड

4.4 मूल्यांकन के प्रकार

4.5 मूल्यांकन के चरण

4.5.1 मूल्यांकन की प्रक्रिया

4.5.2 मूल्यांकन के प्रतिमान

4.6 मूल्यांकन की विधियाँ

4.6.1 सर्वेक्षण विधि

4.6.2 व्यक्ति अध्ययन विधि

4.6.3 प्रायोगिक विधि

4.7 सारांश

आत्म- मूल्यांकन अभ्यास

आत्म-मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिन्दु

आत्म-निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिन्दु

संदर्भ पुस्तकें

पठनीय पुस्तकें

4.0 परिचय

इस मॉड्यूल में आपने व़िद्यालय में एक परामर्शदाता या शिक्षक परामर्शदाता के रूप में आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के विषय में सीखा है। लेकिन आपको यह भी देखने की आवश्यकता है कि आपके द्वारा आयोजित कार्यक्रम कितना प्रभावी रहा है। आयोजित की गई गतिविधियों की प्रभाविकता को सुनिश्चित करने के लिए या उसके महत्व का पता लगाने के लिए अथवा यह देखने के लिए कि क्या इन गतिविधियों का वांछित परिणाम हासिल हुआ है, इन सबके मूल्यांकन के लिए वैज्ञानिक विधि की आवश्यकता होती है। यह इकाई मूल्यांकन की विधि एवं आवश्यकता की व्याख्या करती है। मूल्यांकन किसी क्रियाकलाप या वस्तु की योग्यता, गुण या महत्व के विषय में निर्णय लेने की एक प्रक्रिया है। मार्गदर्शन एवं परामर्श में मूल्यांकन एक मार्गदर्शन या परामर्श कार्यक्रम की प्रभाविकता का पता लगाने के लिए किए गए मापदण्डों से संबंधित है। विद्यालयी परामर्श सेवाओं की प्रभाविकता का आकलन करने में विद्यालयी परामर्शदाता की सहायता के अलावा मूल्यांकन का विद्यालय के परामर्श कार्यक्रमों को प्रभावशाली बनाने तथा विद्यालयी परामर्शदाताओं के पेशेवर विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस इकाई में आप पढ़ेंगे कि मूल्यांकन क्या है, मूल्यांकन के विविध प्रकार एवं विधियाँ क्या हैं, मूल्यांकन के लिए किस प्रकार का मापदण्ड सुनिश्चत करना है और वे कठिनाइयाँ क्या हो सकती हैं जिनका मूल्यांकन के समय सामना करना पड़ सकता है।

4.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप निम्नलिखित पहलुओं को समझने में सक्षम होंगे –

- मार्गदर्शन एवं परामर्श में मूल्यांकन के महत्व का वर्णन करने में।
- मूल्यांकन के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों की गणना करने में।
- एक मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन करने के मापदण्ड सुनिश्चित करने में।
- मूल्यांकन के एक उपयुक्त प्रतिमान तथा मूल्यांकन करते समय उसमें शामिल चरणबद्ध क्रियाओं को पहचानने में।
- मूल्यांकन में शामिल विधियों, उपकरणों एवं तकनीकों के अन्वेषण में।

4.2 मूल्यांकन क्या है ?

4.2.1 अर्थ –

मूल्यांकन का अर्थ एक कार्यक्रम की सफलता या असफलता को इसके पूर्व-निर्धारित ल्क्ष्यों या उद्देश्यों के संदर्भ में मापना है। परामर्श कार्यक्रम मूल्यांकन परामर्शदाताओं द्वारा मूल्यांकन सिद्वांतों के सतत् प्रयोग के आधार पर उनके कार्यक्रमों एवं सेवाओं की प्रभाविकता एवं स्थायित्व में सुधार करने एवं निर्धारण करने से संबंधित है (एस्ट्रमोविच, कॉकर एंड हॉस्किंस, 2005)।

मूल्यांकन विद्यार्थियों पर परामर्श कार्यक्रम के पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव की सीमा को सुनिश्चित करने में ही केवल विद्यालयी परामर्शदाताओं की सहायता नहीं करता है बल्कि यह उन बाधाओं को पहचानने में भी उनकी सहायता करता है जो विद्यार्थियों की सफलता को कम करते हैं और इस प्रकार उन विद्यार्थियों के लिए प्रभावशाली कार्यक्रमों को बनाने में उन्हें दिशा-निर्देश देते हैं। इस प्रकार मूल्यांकन कार्यक्रम के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करता है।

4.2.1 मूल्यांकन का उद्देश्य –

अब हमें आगे मूल्यांकन करने की आवश्यकता पर विचार-विमर्श करना चाहिए। मूल्यांकन निम्नलिखित कारणों के लिए किया जा सकता है :

- एक कार्यक्रम की उपयुक्तता, आवश्यकता एवं सार्थकता का पता लगाने के लिए।
- एक कार्यक्रम की सीमाएँ या प्रबल पक्षों को जानने के लिए।
- विद्यार्थियों को दी जा रही सेवाओं के संदर्भ में उनकी संतुष्टि का पता लगाने के लिए।
- अन्त:क्षेपों के प्रकार का विश्लेषण करने के लिए जो विद्यार्थियों के लिए सहायक हैं।
- मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम की मदद से विद्यार्थियों के विकास का निरीक्षण करना।
- उपचारात्मक कार्यों के लिए आधार योजना बनाना तथा परवर्ती प्रयासों में सुधार करना।
- संसाधनों के उचित प्रयोग के निर्धारण में प्रशासक/शिक्षक/परामर्शदाता की सहायता करना।

संक्षेप में, मूल्यांकन का उद्देश्य यह जानकारी प्राप्त करना है कि किस प्रकार से तात्कालिक सेवाओं का उपयोग किया जा रहा है और उन क्षेत्रों को सुनिश्चित करना है जिनमें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है (वैस, राइन एंड पोइडिवैंट, 1993)। मूल्यांकन कार्यक्रम की प्रकृति के विषय में निर्णय लेने या भविष्य के लिए इसमें संशोधन करने के क्रम में विविध गतिविधियों एवं उपयोग किए जा रहे संसाधनों के महत्व को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया हो सकती है जो एक मार्गदर्शन कार्यक्रम में सतत् सुधार को सुनिश्चित करने के लिए सूचना उपलब्ध कराती है। इस प्रकार यह एक विशेष कार्यक्रम में आवश्यक परिवर्तनों के लिए निर्देशन उपलब्ध कराता है तथा निम्नलिखित पहलुओं में सहायता करता है –

- निरर्थक नवीनता की अनदेखी करना तथा उन अभ्यासों को जारी रखना जो विद्यार्थियों के अनुकूल हैं।
- अन्तर्दृष्टि बढ़ाना जिसके द्वारा एक परामर्शदाता के ज्ञान में अधिक वृद्धि हो सकती है और विद्यार्थियों के बारे में एवं उनको प्रभावित करने वाले कारकों तथा उनके सामने उपस्थित हो सकने वाले संभावित परिणामों के विषय में बेहतर जानकारी हो सकती है।
- निर्णय लेने की क्षमता को सुधारने के लिए सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप उसे कार्यक्रम में शामिल करना चाहिए।
- प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक निश्चित जिम्मेदारी देना और सफलता के लिए सभी के द्वारा अपना हक जमाने और असफलता की जिम्मेदारी किसी के भी द्वारा न लेने की संभावना को कम करना।

4.2.3 मूल्यांकन के सिद्धांत

मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाओं को सामान्यत: सम्पूर्ण कार्यक्रम का अवलोकन करने के पश्चात् सहायता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या, विद्यार्थियों को प्रदान की जा रही सेवाओं के प्रकार तथा विद्यार्थियों की संतुष्टि के स्तर के आधार पर मूल्यांकित किया जाता है। विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को अधिक प्रभावी बनाने तथा परामर्श कार्यक्रम की सफलता का अधिक वैज्ञानिक ढंग से मूल्यांकन करने के क्रम में उन सिद्धांतों को समझना जरूरी है जो मूल्यांकन प्रक्रिया का मार्गदर्शन करेंगे।

एक प्रभावशाली मूल्यांकन में आवश्यक तत्व हैं –

- पूर्व निर्धारित लक्ष्यों या उद्देश्यों की स्थापना जिसके लिए कार्यक्रम का मूल्यांकन किया जा सकता है।
- वैध मापदण्डों को निर्धारित करना जो मूल्यांकन को अधिक सार्थक बना सकता है।
- मूल्यांकन मापदण्ड की प्रासंगिकता जो उपयुक्त उपकरणों एवं तकनीकों के प्रयोग को आवश्यक मानता है।
- परामर्श कार्यक्रम से जुड़े हुए सभी लोगों की सहभागिता जैसे, विद्यार्थियों, समकक्ष साथियों, अभिभावकों, विद्यालय के अन्य विभागों के सदस्यगण, विद्यालय प्रशासक, आदि।
- उपयुक्त फीडबैक एवं फॉलो थ्रू जो कार्यक्रम के सुधार एवं विकास में सहायता करता है।
- सतत् मूल्यांकन जैसा कि मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया होनी चाहिए जो कार्यक्रम की कमियों को सुधारने में सहायक होगा।
- वैधता एवं विश्वसनीयता की स्थापना ताकि विद्यार्थी, अभिभावक एवं समकक्षी साथी सूचना को बताने के लिए इच्छुक हों।

....

क्रियाकलाप - 1

मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन पर लेख पढ़ने के लिए वेबसाइट्स/पुस्तकालय में जाइए। एक लेख का चयन कीजिए और इसमें पालन किए गए मूल्यांकन के सिद्धांतों की वैधता का निरीक्षण कीजिए।

संकेत – आप www.schoolcounselor.org को देख सकते हैं; यदि आप पुस्तकालय जा रहे हैं तो आप कॉउन्सलर/प्रोफेशनल स्कूल कॉउन्सलिंग/जर्नल ऑफ कॉउन्सलिंग एंड डेवलपमेन्ट लेख के लिए देख सकते हैं।

....

4.3 मूल्यांकन के लिए मापदण्ड :

मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम की प्रभाविकता को सुनिश्चित किया जा सकता है यदि मूल्यांकन के लिए मापदण्ड

को सही प्रकार से स्थापित किया गया है। मापदण्ड सिद्धान्तों, मानकों या माप का एक समूह है जो किसी वस्तु का आकलन करने में सहायक होता है। मार्गदर्शन एवं परामर्श के संदर्भ में मापदण्ड यह आकलन करने में सहायता करता है कि जिन उद्देश्यों के आधार पर परामर्श सेवाएं दी जा रही हैं वे उन उद्देश्यों का अनुपालन कर रही हैं या नहीं। उदाहरणार्थ – यदि मार्गदर्शन कार्यक्रम का उद्देश्य कक्षा में विद्यार्थियों की उपलब्धि को बढ़ाना है तब मूल्यांकन मापदण्ड में ग्रेड एवं कक्षा गतिविधियों में सुधार, साथियों एवं शिक्षकों के साथ संबंध, विद्यालयी उपस्थिति तथा अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति, आदि शामिल होंगे। व्यक्तिगत परामर्श के मामले में यदि परामर्श का उद्देश्य विद्यार्थी को नशीले पदार्थों से बचाना है तब इस संबंध में निम्नलिखित मापदण्ड हो सकता है –

- विद्यार्थियों की समस्याओं का सामना करने वाले कौशलों में सुधार (कठिनाई के बावजूद अधिक दृढ़ता, कठिन परिश्रम, सकारात्मक अभिवृत्ति के द्वारा सुस्पष्ट होता है)।
- संबंधों में सुधार (दूसरों के साथ अधिक समय बिताने, दूसरे लोगों की सहायता करने में इच्छुक इसके संकेतक हो सकते हैं)

    - परिवार के सदस्यों के साथ
    - विद्यालय में साथियों के साथ
    - आस-पड़ोस में अन्य सदस्यों के साथ

- ड्रग (नशीले पदार्थों) के सेवन, आदि के विषय में अधिक सूचना एवं जागरूकता।

निर्धारित मापदण्ड पारिवारिक सदस्यों, शिक्षकों, मित्रों तथा अन्य लोगों के लिए एक निरीक्षण सूची/साक्षात्कार/निर्धारित पैमाना या प्रश्नावली का प्रयोग करते हुए मूल्यांकित किया जा सकता है। एकत्रित किए गए आंकड़ों का मार्गदर्शन एवं परामर्श गतिविधियों के उद्देश्य के कार्यान्वयन के आधार पर विश्लेषण एवं व्याख्या किया जा सकता है। कभी-कभी उद्देश्य के लिए निर्धारित मापदण्ड प्रत्यक्ष रूप से प्रेक्षणीय तथा मापने योग्य होते हैं। उदाहरणार्थ – शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार को दिखाने के लिए बेहतर अंक या ग्रेड प्राप्त करना। शैक्षिक उपलब्धि में सुधार मानकीकृत परीक्षणों या शिक्षक द्वारा बनाए गए परीक्षणों के द्वारा भी आकलित किया जा सकता है। मूल्यांकन की यह प्रणाली अधिक सरल तथा आसान भी है क्योंकि परीक्षण के प्रदर्शन का आसानी से आकलन किया जा सकता है।

समस्याएं उस समय उत्पन्न होती हैं जब प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य का आकलन करना आसान नहीं होता है। उदाहरणार्थ – यदि परामर्श के परिणाम के रूप में विद्यार्थी द्वारा अनुभव की जा रही सकारात्मक भावना के स्तर को सुनिश्चित करना है। इस प्रकार के मामले में मूल्यांकन का मापदण्ड विद्यार्थी द्वारा अनुभव की गई सकारात्मक भावना में वृद्धि होगी तथा विद्यार्थी के समीप रहने वाले अन्य लोगों के अनुभव भी होंगे। इस प्रकार के मामलों में प्रयोग किए जाने वाले उपकरणों एवं तकनीकों के संदर्भ में रिकार्ड एकत्रित करना कठिन हो जाता है।

इस प्रकार उन स्थापित मापदण्डों के आधार पर मार्गदर्शन एवं परामर्श के स्पष्ट उद्देश्यों को मूल्यांकित किया जा सकता है। मापदण्ड को स्थापित करते समय ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि परिवर्तनों का प्रेक्षण हो सके या

इसे आसानी से मापा जा सके। अलग-अलग निर्धारित लक्ष्यों के लिए अलग-अलग मापदण्ड स्थापित किया जाना चाहिए क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक मार्गदर्शन गतिविधि में वही मापदण्ड उपयोगी होगा। परामर्शदाता को एक ऐसा मापदण्ड बनाना चाहिए जो सामान्यत: परामर्श कार्यक्रम सेवाओं को प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए प्रायोगिक हो लेकिन वह यह स्पष्ट करने में सक्षम हो कि इस विशेष कार्यक्रम से क्या हासिल करने का प्रयास किया जा रहा है (लेविस, 1993)।

4.4 मूल्यांकन के प्रकार –

मूल्यांकन एक अवस्था है जो सफलता को सुनिश्चित करने के लिए भविष्य हेतु परिवर्तनों की अनुशंसा करने में आपको समर्थ बनाता है। मूल्यांकन के द्वारा आप क्या प्राप्त करना चाहते हैं इसे व्यापक रूप में तीन प्रकारों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है जैसे –

- रचनात्मक मूल्यांकन
- संकलनात्मक मूल्यांकन
- उपचारात्मक मूल्यांकन

तीनों प्रकार के मूल्यांकन की नीचे चर्चा की गई है। तालिका 4.1 रचनात्मक, उपचारात्मक तथा संकलनात्मक मूल्यांकन का एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करती है।

....

तालिका 4.1 मूल्यांकन के प्रकारों की तुलना

रचनात्मक मूल्यांकन	संकलनात्मक मूल्यांकन	उपचारात्मक मूल्यांकन
• रचनात्मक मूल्यांकन बीच-बीच में किया जाता है, जैसे – कार्यक्रम के बीच में, अंत:क्षेप के समापन से पहले और इसको प्रारम्भ करने के बाद कभी भी। • रचनात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम के विकास या सुधार के समय प्रारूपिक रूप में किया जाता है और जैसे-जैसे कार्यक्रम आगे बढ़ता है उसमें सुधार को ध्यान में रखते हुए यह बार-बार किया जाता है।	• संकलनात्मक मूल्यांकन कार्य की समाप्ति पर किया जाता है। यह मूल्यांकन करता है कि क्या प्रारंभिक उद्देश्यों को पूरा किया गया है। यह सम्पूर्ण कार्यक्रम की प्रभावोत्पादकता का मूल्यांकन कर सकता है। • इसी प्रकार के उदाहरण में संकलनात्मक मूल्यांकन तब घटित होता है जब विद्यार्थियों के साथ समूह परामर्श सत्र के बाद मूल्यांकन किया जाता है।	• उपचारात्मक मूल्यांकन किसी भी समय किया जा सकता है यदि कार्यक्रम में कोई कमी है तो यह उस तरफ इशारा करता है। उपचारात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने हेतु इसकी अवधि में परिवर्तन के लिए उपयोगी है।

• उदाहरणार्थ – यदि समूह परामर्श के लिए कार्यक्रम चार्ट तैयार किया गया था, उसकी विषय-वस्तु एवं प्रयोग के माध्यम का निरीक्षण रचनात्मक मूल्यांकन के द्वारा किया जा सकता है। • यह कार्यक्रम में अग्रिम संशोधन के लिए तुरन्त फीडबैक देगा। • रचनात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम के विकास की प्रारम्भिक अवस्था में सहायक होता है।	• यह कार्यक्रम के पश्चात् कार्यक्रम की उपयोगिता के विषय में जानकारी प्रदान करता है। • संकलनात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम की समाप्ति पर उसकी योग्यता को जाँचने के लिए लाभदायक है।	• इसी उदाहरण में उपचारात्मक मूल्यांकन उस समय किया जा सकता है यदि समूह परामर्श सत्र के दौरान यह प्रतीत हो कि कुछ गलत हो रहा है। • यह परामर्श में उपस्थित समस्या को दूर करने में सहायता करेगा जिससे उस सत्र की कमियों को सुधारने में मदद मिलेगी। • उपचारात्मक मूल्यांकन संकटकालीन अवस्था में आवश्यक होता है जब कार्यक्रम को स्थायित्व देना होता है।

इस प्रकार ये तीन प्रकार के मूल्यांकन एक कार्यक्रम के निर्माण के समय से लेकर क्रियान्वयन की अवस्था तक और उसके बाद भी कार्यक्रम की उपयोगिता का पता लगाने के रूप में आवश्यक हैं। एक परामर्शदाता इन तीनों मूल्यांकनों का जब, जहाँ और जिस रूप में आवश्यक हो, प्रयोग कर सकता है।

....

आत्म- निरीक्षण अभ्यास -1

निम्नलिखित विकल्पों से खाली स्थान भरिए –

अ. रचनात्मक   ब. मूल्यांकन   स. मापदण्ड   द. संकलनात्मक

क. उपचारात्मक

1. .... पूर्वनिर्धारित लक्ष्यों या उद्देश्यों के आधार पर एक कार्यक्रम की सफलता या असफलता मापने का वैज्ञानिक तरीका है।
2. उस समय किया जाने वाला मूल्यांकन जब कार्यक्रम में गलती हो रही है उसे ....मूल्यांकन कहते हैं।
3. एक परामर्श कार्यक्रम के उद्देश्यों को एक प्रभावी ढंग से मूल्यांकित किया जा सकता है यदि मूल्यांकन के ....को पहले से निर्धारित किया गया है।
4. ....मूल्यांकन कार्यक्रम की समाप्ति के बाद उसकी उपयोगिता को जानने के लिए किया जाता है।
5. ....मूल्यांकन कार्यक्रम के अग्रिम संशोधन के विषय में तात्कालिक फीडबैक प्रदान करता है।

....

क्रियाकलाप –

प्रत्येक में दो परिस्थितियाँ दीजिए जहाँ आप अलग- अलग प्रकार के मूल्यांकन का प्रयोग करेंगे।

	रचनात्मक मूल्यांकन	संकलनात्मक मूल्यांकन	उपचारात्मक मूल्यांकन
1.	....	....	....
2.	....	....	....

....

5. फॉलो अप

1. लक्ष्य/उद्देश्य की पहचान

2. योजना बनाना

4. प्रतिबिंबन करना

3. विश्लेषण करना

....

चित्र 4.1 – मूल्यांकन प्रक्रिया

4.5 मूल्यांकन के चरण –

4.5.1 प्रक्रिया –

मूल्यांकन एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है जिसमें दिखाए गए पाँच चरणों को शामिल किया गया है।

उद्देश्य की पहचान :

यह प्रथम चरण है जिसमें व्यक्ति मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम के उद्देश्यों को पहचानता है और इसका भी आकलन करता है कि क्या मूल्यांकित किया जाना है। इसका केन्द्र सम्पूर्ण परामर्श कार्यक्रम या इसका एक विशेष भाग भी हो सकता है। कार्यक्रम के उद्देश्यों को स्पष्ट, संक्षिप्त एवं मापने योग्य शब्दों में लिखना चाहिए। उदाहरणार्थ – विद्यार्थियों के प्रेरणा स्तर में वृद्धि तथा कॅरियर योजना में सामंजस्य जैसे उद्देश्यों की स्थापना कठिन है। सामान्य उद्देश्य जैसे एक महीने में विद्यार्थियों के लिए कॅरियर योजना की संख्या को आसानी से मापा जा सकता है।

योजना बनाना

एक बार जब कार्यक्रम के मूल्यांकन की योजना बना ली जाती है तब अगले चरण में मूल्यांकन हेतु समग्र योजना बनानी होती है। प्रयोग किए जाने वाले मूल्यांकन के प्रकार (रचनात्मक, संकलनात्मक एवं उपचारात्मक) को सुनिश्चित करना चाहिए और निर्णय लेने के लिए मापदण्ड तथा विद्यार्थियों की उन्नति के बारे में सूचना एकत्रित करने के लिए एक उपयुक्त आकलन की रणनीति की योजना भी इस स्तर पर बनानी चाहिए। मूल्यांकन रणनीति/ तकनीकों एवं उपकरणों का चयन मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों पर निर्भर होता है। इस अवस्था में शिक्षकों/ परामर्शदाताओं को रणनीतियों/तकनीकों (सर्वेक्षण/व्यक्ति अध्ययन/ प्रायोगिक) को पहचानना चाहिए एवं उपकरणों (परीक्षण/तालिका) का निर्माण करना चाहिए तथा एकत्रित किए जाने वाले आँकड़ों के स्वरूप एवं इन्हें एकत्रित करने के तरीकों का भी उल्लेख करना चाहिए। इस प्रकार मूल्यांकन की समग्र योजना को इस स्तर पर सही तरीके से विकसित करना है।

विश्लेषण

यह एक कार्यक्रम की वह अवस्था है जिसमें सफलता को निर्धारित करने, कमजोरी या ताकत का परीक्षण करने के लिए एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण किया जाता है और यह परामर्शदाता को भविष्य के लिए परिवर्तनों की संस्तुति देने में समर्थ बनाता है। विश्लेषण एक समग्र मार्गदर्शन कार्यक्रम का एक आवश्यक पहलू है। प्रभावशाली कार्यक्रम केवल परामर्शदाताओं एवं शिक्षकों के अन्तर्ज्ञान, वरीयताओं तथा इच्छा द्वारा ही मार्गदर्शित नहीं होते हैं बल्कि वे विद्यार्थियों की आकलित आवश्यकताओं, मूल्यांकन के लिए निर्धारित मापदण्डों और उपलब्ध कराई गई सेवाओं के मापे गए परिणामों के आधार पर होते हैं।

प्रतिबिंबन

मूल्यांकन अवस्था का कोई भी महत्व नहीं होता यदि विश्लेषण के परिणाम पर आत्म-चिन्तन नहीं किया जाता है। इस अवस्था में, विश्लेषण के परिणाम पर विचार करने की आवश्यकता होती है और इसे परामर्श एवं मार्गदर्शन कार्यक्रम की दिशा के साथ सह-संबंधित करना होता है। यह अनुवर्ती फॉलोअप के लिए रास्ता तैयार करेगा तथा भविष्य में कार्यक्रम में सुधार करने में सहायता करेगा।

फॉलोअप

यह अवस्था कार्यक्रम के नए चरण के वास्तविक क्रियान्वयन से संबंधित है जिसे विश्लेषण एवं चिन्तन के आधार पर संशोधित किया गया है। मूल्यांकन की प्रक्रिया का महत्व बहुत कम होगा यदि फॉलोअप नहीं किया गया है। फॉलोअप एक परामर्शदाता की कार्यक्रम में की गई त्रुटियों को सुधारने में तथा कार्यक्रम के निर्माण में सहायता करता है जो विद्यार्थियों के लिए प्रभावशाली एवं लाभदायक होता है।

4.5.2 मूल्यांकन के प्रतिमान

परामर्श कार्यक्रमों के मूल्यांकन के लिए विविध प्रतिमानों जैसे – उद्देश्य प्राप्ति मापक प्रतिमान (ग्लीकेन, 1978), विसंगति मूल्यांकन प्रतिमान (पाइन, 1975), उत्तरदायित्व ब्रिज प्रतिमान (एस्ट्रामोविच, कॉकर एंड हॉस्किंस, 2007) आदि का प्रयोग किया गया है। इस इकाई में इस प्रकार के एक प्रतिमान उत्तरदायित्व ब्रिज प्रतिमान मूल्यांकन की उदाहरण के रूप में व्याख्या की गई है।

इस प्रतिमान के अन्तर्गत जैसा कि चित्र 4.2 में वर्णित किया गया है, मूल्यांकन के दो आवर्तक चक्र हैं- कार्यक्रम मूल्यांकन चक्र तथा प्रसंग मूल्यांकन चक्र। कार्यक्रम मूल्यांकन चक्र में चार चरण- योजना, क्रियान्वयन, निरीक्षण एवं आकलन शामिल हैं।

योजना चरण में, परामर्श कार्यक्रमों एवं सेवाओं की योजना बनाई जाती है तथा आवश्यक अंत:क्षेपों के प्रकार एवं क्रियान्वयन हेतु आवश्यक संसाधनों की भी योजना बनाई जाती है। क्रियान्वयन चरण में, परामर्श कार्यक्रमों को निर्धारित योजना के आधार पर वास्तव में क्रियान्वित किया जाता है। कार्यक्रमों में किसी भी तरह की कमी को रचनात्मक मूल्यांकन के द्वारा सुधारा जाता है जो प्रासंगिक मूल्यांकन चक्र से प्राप्त फीडबैक की सहायता से किया जाता है। निरीक्षण एवं शुद्धिकरण चरण में कार्यक्रमों का अच्छी तरह से निरीक्षण किया जाता है यह पता लगाने के लिए कि क्या उन्हें किसी प्रकार के समायोजन की आवश्यकता है। परिणाम आकलन चरण में परामर्शदाता कार्यक्रम के परिणाम या विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए गए अंत:क्षेपों का निर्णायक आकलन करते हैं।

ऊपर उल्लिखित सभी पहलू मूल्यांकन की प्रक्रिया के एक भाग के रूप में लम्बे समय से चले आ रहे हैं। इस प्रतिमान में नया पहलू उत्तरदायित्व का निर्वहन है जो मार्गदर्शन एवं परामर्श की प्रक्रिया में शामिल विभिन्न दावेदारों को कार्यक्रम मूल्यांकन के परिणाम को सम्प्रेषित करता है। दावेदारों में विद्यालय के अन्य परामर्शदाता, विद्यार्थी, अभिभावक, विद्यालय के अधिकारी, शिक्षक आदि शामिल हो सकते हैं जिन्हें परामर्श कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने में प्रमुख भूमिका अदा करनी होती है। परिणाम का सम्प्रेषण कई रूपों रिपोर्ट्स, सारांश, प्रस्तुतीकरण एवं परिचर्चा के रूप में हो सकता है।

द्वितीय चक्र, प्रासंगिक मूल्यांकन चक्र है, जिसमें चार चरण शामिल हैं –

दावेदारों से फीडबैक लेना, रणनीतिक योजना, आवश्यकताओं का आकलन और सेवा का उद्देश्य। दावेदारों से फीडबैक चरण में परिणामों को दावेदारों के पास सम्प्रेषित किया जाता है और उनसे फीडबैक के लिए निवेदन किया जाता है। अगला चरण रणनीतिक योजना अवस्था है जिसमें विद्यालयी परामर्शदाता रणनीतिक योजना में

लगे रहते हैं तथा जिसमें सम्पूर्ण विद्यालयी परामर्श कार्यक्रम के संभावित संशोधन का अच्छी तरह से परीक्षण तथा परिदृश्य लक्ष्य एवं उद्देश्य शामिल हो सकता है। आवश्यकताओं के आकलन की अवस्था विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के अलावा विभिन्न स्रोतों से आवश्यकताओं को इकट्ठा करना है जो सम्पूर्ण परामर्श कार्यक्रम के पुनर्निमाण एवं पुन: प्रतिपादन में सहायता करेंगे। सेवा का उद्देश्य चरण पहले के सभी चरणों के परिणामों को समाहित करता है और परिणामों के आधार पर फीडबैक तथा आवश्यकताओं का आकलन, अंत:क्षेपों के लिए रणनीतियाँ निर्मित की जाती हैं। सेवा के उद्देश्यों की स्थापना के पश्चात् कार्यक्रम मूल्यांकन चक्र के योजना चरण में पहुँचकर प्रासंगिक मूल्यांकन चक्र से प्राप्त फीडबैक के द्वारा मूल्यांकन चक्र पुन: प्रारम्भ हो जाता है।

इस प्रकार उत्तरदायित्व ब्रिज प्रतिमान विभिन्न दावेदारों के विचारों के महत्व का संकेत करते हुए मूल्यांकन का एक प्रभावशाली प्रतिमान हो सकता है। यह कार्यक्रम के परिणाम के प्रभाव का विश्लेषण करने के महत्व को भी प्रदर्शित करता है।

....

आत्म-निरीक्षण अभ्यास-2

निम्नलिखित कथनों में सही या गलत बताइए। <u>सही</u> <u>गलत</u>

1. मूल्यांकन की प्रक्रिया में विश्लेषण अवस्था योजना अवस्था से पहले आती है।
2. यदि परिणाम का फॉलोअप नहीं किया जाता है तो मूल्यांकन की प्रक्रिया का कोई भी महत्व नहीं होगा।
3. मूल्यांकन के उत्तरदायित्व ब्रिज प्रतिमान में मूल्यांकन के तीन चक्र शामिल हैं।
4. मूल्यांकन के उत्तरदायित्व ब्रिज प्रतिमान का मुख्य पहलू यह है कि कार्यक्रम के परिणाम को दावेदारों के पास सम्प्रेषित किया जाता है।

....

4.6 मूल्यांकन की विधियाँ –

एक प्रभावशाली मूल्यांकन हेतु प्रमुख आवश्यकताएं हैं –

- मार्गदर्शन कार्यक्रम के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को अच्छी तरह से परिभाषित करना चाहिए। उद्देश्य प्रेक्षण योग्य एवं मापने योग्य होने चाहिए।
- मूल्यांकन की विधि वैध होनी चाहिए।
- मूल्यांकन के लिए प्रयोग की गई प्रक्रिया विश्वसनीय होनी चाहिए।
- मूल्यांकन करने वाले व्यक्ति के पास आवश्यक विशेषज्ञता होनी चाहिए।

एक कार्यक्रम की प्रभाविकता का निर्णय करने में आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जाता है।

4.6.1 सर्वेक्षण विधि – इसमें एक मार्गदर्शन कार्यक्रम में प्रतिभागियों के नमूने की पहचान शामिल होती है। ये प्रतिभागी अभिभावकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं प्रशासकों में से लिए जाते हैं। प्रतिभागियों से एक साक्षात्कार सत्र या लिखित प्रश्नावली के माध्यम से उनकी राय या फीडबैक को देने के लिए कहा जाता है। उसके पश्चात् कार्यक्रम की प्रभाविकता का निर्णय करने के लिए फीडबैक का संकलन एवं विश्लेषण किया जाता है। यह एक महत्वपूर्ण विधि है जिसमें मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम के विषय में शिक्षकों/अभिभावकों / प्रशासकों के अवबोधन को प्रश्नावली/पैमाना मापक/ साक्षात्कार, आदि के द्वारा लिया जा सकता है।

इस प्रक्रिया में शामिल चरण हैं –

1. न्यादर्श के आकार एवं व्यक्तियों की पहचान करना।
2. न्यादर्श का सर्वेक्षण करना।
3. आंकड़ों को संकलित तथा विश्लेषित करना (गुणात्मक/संख्यात्मक जैसा कि सांख्यिकी इकाई में चर्चा की गई है)।
4. परिणाम का सामान्यीकरण करना।
5. संस्तुतियों को प्रतिपादित करना।

इस विधि की एक प्रमुख कमी यह है कि एक सही न्यादर्श उपलब्ध नहीं होता है। यह विशेष रूप से उन मामलों में होता है जहाँ विद्यार्थियों ने विद्यालय छोड़ दिया है। आप उन्हें भरने के लिए एक प्रश्नावली दे सकते हैं लेकिन प्रायः वे इसे वापस नहीं करते हैं और कभी- कभी जब वापस करते हैं तब यह अपूर्ण हो सकती है। एक प्रमुख चिन्ता का विषय सहभागियों की प्रतिक्रियाओं की विश्वसनीयता भी है। इसे दूर किया जा सकता है यदि प्रश्नावली को बनाते समय यह ध्यान दिया जाय कि यह बहुत बड़ी न हो तथा सूचना प्राप्त करने के विशेष उद्देश्य के लिए इसमें प्रयुक्त भाषा बहुत स्पष्ट हो।

व्यक्ति अध्ययन विधि-

जैसा कि नाम से ही विदित होता है यह कार्यक्रम में सहभागिता के पश्चात् वांछित परिवर्तन प्राप्त करने में एक व्यक्ति के द्वारा की गई उन्नति का अध्ययन है। यद्यपि यह व्यक्तिवादी है और इसमें बहुत समय लगता है लेकिन इसमें गहन अध्ययन किया जाता है तथा यह विश्वसनीय है। तथापि सामान्य रूप से अधिक लोगों पर (Nomothetics) न होकर एक व्यक्ति पर आधारित (Idiographic) होने के कारण इसे वैज्ञानिक दृष्टि से कम समझा जाता है। अधिक संख्या में आंकड़ों/परिणाम का सामान्यीकरण सम्भव नहीं है लेकिन इसका प्रयोग विशेष समूहों एवं विशेष श्रेणियों के लिए किया जा सकता है। एक व्यक्ति अध्ययन में निम्नलिखित प्रकार की सूचनाएँ एकत्रित की जाती हैं।

- प्राथमिक सूचना
- नाम, आयु, लिंग, व्यवसाय, आय, अभिभावकों की शिक्षा
- जीवन से संबंधित कुछ पहलू जिनमें शामिल हैं –

जन्म-संबंधी जानकारी, बच्चे का जन्म-क्रम, शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक एवं सामाजिक विकास आदि के संदर्भ में जन्म के पश्चात् उसका विकास। सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, माता-पिता, भाई-बहन, मित्रों या अन्य लोगों के साथ संबंध, पूर्व अर्जित विद्यालयी उपलब्धि (पाठ्यगामी/ सहपाठ्यगामी) का रिकार्ड भी एकत्रित किया जाता है ताकि वास्तविक परामर्श प्रक्रिया के दौरान किए गए उपायों की तुलना की जा सके। यह परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन को सुसाध्य बनाता है तथा अतीत के संदर्भ में विद्यार्थियों को समझने में सहायता करता है।

- वर्तमान अवस्था

  घर का वातावरण, विद्यालय का वातावरण, उपलब्धि स्तर, योग्यताएँ, विशेष अभिक्षमताएँ, अभिरुचियाँ, साथियों, अधिकारियों, सहायकों के साथ अन्योन्यक्रिया, अभिवृत्तियाँ, व्यवहारिक विशेषताएँ, प्रेरणा का स्तर, व्यक्तित्व की विशेषताएँ।

  एक व्यक्ति अध्ययन विधि में उपर्युक्त उल्लिखित विवरणों का एकत्रीकरण सेवार्थी की पृष्ठभूमि के विषय में जानकारी तथा वर्तमान अवस्था के तुलनात्मक मूल्यांकन में परामर्शदाता की सहायता करता है।

4.6.3 प्रायोगिक प्रतिमान -

यह मूल्यांकन का सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक तरीका है। यह समाविष्ट कर सकता है –

- एक समूह योजना (पूर्व-परीक्षण/उत्तर-परीक्षण योजना)
- दो समूह योजना (प्रायोगिक/नियंत्रित योजना)

एकल (एक-समूह) योजना –

इसमें केवल एक समूह होता है जिस पर मार्गदर्शन अंत:क्षेप संचालित किया जाता है। एक पूर्ण-परीक्षण का (प्रश्नावली,अभिवृत्ति पैमाना, मापक पैमाना) कुछ निश्चित अवधारणाओं या व्यवहार के बारे में समूह की प्रारम्भिक स्तर की उपलब्धि, अभिवृत्ति एवं समझ(जानकारी) का पता लगाने के लिए प्रबन्ध किया जाता है। अगले चरण में अंत:क्षेप (मार्गदर्शन कार्यक्रम) आयोजित किया जाता है। तीसरे चरण में उपलब्धि के स्तर का पता लगाने के लिए उत्तर परीक्षण शमिल होता है। यदि उपलब्धि के स्तर में वृद्धि पाई जाती है तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मार्गदर्शन अंत:क्षेप सफल रहा है।

संक्षिप्त रूप में इसका इस रूप में वर्णन किया जा सकता है –

पूर्व-परीक्षण "अंत:क्षेप" उत्तर-परीक्षण

(परीक्षण 1) (मार्गदर्शन कार्यक्रम) (परीक्षण 2)

परीक्षण 2 > परीक्षण 1 (कार्यक्रम की सफलता का संकेत करता है)

परीक्षण 2 < परीक्षण 1 (कार्यक्रम सफल नहीं हुआ है, कार्यक्रम को सशक्त बनाने के लिए कार्यवाही करना चाहिए)

युग्म (दो-समूह) योजना –

जैसा कि नाम से ही विदित होता है इसमें दो समूह चयनित किए जाते हैं। इस विषय पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि चयनित समूह विशेष मापदण्ड के अन्तर्गत मूल्यांकन के साथ-ही-साथ वैयक्तिक – सामाजिक विशेषताओं जैसे आयु, शैक्षिक उपलब्धि, आदि में (प्रारम्भिक स्तर पर) अर्जित उनके प्राप्तांक तुलनीय हों । एक समूह नियंत्रित समूह होता है तथा दूसरा समूह प्रायोगिक समूह होता है। नियंत्रित समूह को अंत:क्षेप में सहभागिता नहीं करना होता है (उनके लिए कोई भी मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम आयोजित नहीं किया जाता है)। प्रायोगिक समूह में अंत:क्षेप किया जाता है । अंत:क्षेप के पश्चात् दोनों समूहों पर निर्धारित मापदण्ड के आधार पर यह पता लगाने के लिए उत्तर-परीक्षण किया जाता है कि क्या दोनों समूहों के द्वारा प्राप्त किए गए प्राप्तांकों में कोई भिन्नता है । यदि प्रायोगिक समूह के द्वारा प्राप्त प्राप्तांक अपेक्षाकृत रूप से अधिक होते हैं तब कार्यक्रम को सफल माना जाता है।

संक्षिप्त रूप में इसको निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है –

....

प्रायोगिक समूह परीक्षण नियंत्रित समूह परीक्षण

प्रयोग 1 नियंत्रण 1 परीक्षण प्रयोग 1

अंत:क्षेप कोई अंत:क्षेप नहीं परीक्षण नियंत्रण 1

परीक्षण प्रयोग 2 परीक्षण नियंत्रण 2

....

यदि परीक्षण > परीक्षण है तब अंत:क्षेप सफल माना जाता है।

प्रयोग 2 नियंत्रण 2

उदाहरण के रूप में समझिए कि कक्षा 7 में दो खण्ड 7 अ और 7 ब हैं। हम कार्य के संसार के विषय में उनकी प्रारम्भिक जानकारी का पता लगाने के लिए एक प्रश्नावली तैयार करते हैं। कक्षा 7 अ और 7 ब द्वारा प्राप्त किया गया औसत प्राप्तांक क्रमश: परीक्षण प्रयोग 1 और परीक्षण नियंत्रण 1 द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाता है। ये दोनों प्राप्तांक तुलनीय हैं क्योंकि वे एक-दूसरे से सार्थक रूप में अलग नहीं हैं। हम अपने प्रायोगिक समूह 7 अ के साथ कॅरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित करते हैं। नियंत्रित समूह 7 ब को मार्गदर्शन कार्यक्रम के बारे में कुछ भी नहीं बताया जाता है। अंत:क्षेप के पश्चात् हम कार्य के संसार के विषय में दोनों कक्षाओं के जागरूकता के स्तर का पता लगाने के लिए प्रश्नावली का प्रबन्ध करते हैं। दूसरी प्रश्नावली में कक्षा 7 अ के द्वारा प्राप्त किए गए औसत प्राप्तांक को परीक्षण प्रयोग 2 तथा कक्षा 7 ब के द्वारा प्राप्त औसत प्राप्तांक को परीक्षण नियंत्रण

2 समझिए। अब, यदि कक्षा 7 अ (जो कि परीक्षण प्रयोग 2 है) के द्वारा प्राप्त औसत प्राप्तांक कक्षा 7 ब (जो परीक्षण नियंत्रण 2 है) के द्वारा प्राप्त औसत प्राप्तांक की तुलना में अधिक है तब यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मार्गदर्शन कार्यक्रम सफल रहा है। यदि परीक्षण प्रयोग 2 परीक्षण नियंत्रण 2 की तुलना में अधिक नहीं है तब यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के लिए आयोजित किया गया मार्गदर्शन कार्यक्रम प्रभावशाली नहीं है और कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए गंभीर फॉलोअप एवं संशोधन की आवश्यकता है।

इन विधियों के अलावा अन्य विधियाँ भी हैं जिनका मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन करने के लिए उपयोग किया जा सकता है तथा जिनका आगे वर्णन किया गया है (फेयरचाइल्ड एंड सीले, 1995)।

आवश्यकता का आकलन

इस विधि के अन्तर्गत विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का आकलन किया जाता है। इस प्रकार की आवश्यकताओं को पहचानने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों, आदि से मापक पैमाने के द्वारा निवेश/सूचनाओं का संग्रह किया जाता है। उदाहरणार्थ, इस प्रकार के सभी समूहों से विद्यार्थियों के लिए आवश्यक सेवाएं या मार्गदर्शन का प्रकार या आवश्यक सहयोग से संबंधित सूची एकत्रित की जा सकती है जिसके विषय में वे अधिक ध्यान देना आवश्यक समझते हैं (जैसे अकेलापन, आत्म-प्रतिमान/स्वरूप, साथियों द्वारा दबाव, अध्ययन कौशलों, तनाव का सामना करना, किशोरावस्था के सांवेगिक पहलुओं का सामना करना आदि मुद्दों को उठाना पड़ता है)। इस प्रकार के आकलन के द्वारा परामर्शदाता मूल्यांकन कर सकता है कि उनके द्वारा आयोजित किया गया कार्यक्रम विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप है कि नहीं है।

सारणीयन :

यह मूल्यांकन का सबसे ज्यादा प्रयोग किया जाने वाला तरीका है जो सहज ढंग से लागू एवं आसानी से मूल्यांकित किया जा सकता है। इस विधि के अन्तर्गत उपलब्ध कराई जाने वाली हर प्रकार की परामर्श सेवाओं/कार्यक्रमों तथा आयोजित किए जाने वाले सत्रों की संख्या का सारणीयन किया जाता है। उदाहरणार्थ आयोजित किए गए परामर्श सत्रों की संख्या, अभिभावकीय शिक्षा की कक्षाओं, कक्षा मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध कराई गई गतिविधियाँ, आयोजित किए गए अभिभावक सम्मेलन, आदि की नियमित आधार पर सारणी बनाई जाती है। यह विधि परामर्शदाता को विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत किए गए परामर्श सेवाओं का एक त्वरित पुनरावलोकन उपलब्ध कराती है। उदाहरणार्थ — यदि एक परामर्श कार्यक्रम का उद्देश्य कॅरियर संबंधित मामलों में मार्गदर्शन वृद्धि करना है और मासिक सारणीयन सारांश फॉर्म के पुनरावलोकन से पता चलता है कि इस क्षेत्र में बहुत कम या बिलकुल ही गतिविधि नहीं हुई है तब परामर्शदाता इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्रेरित होता है। इस प्रकार यह विधि त्वरित मूल्यांकन एवं फॉलो-अप उपलब्ध कराती है।

एक परामर्शदाता किसी कार्यक्रम का मूल्यांकन करने के लिए जिस भी विधि का प्रयोग करता है उसे संग्रह किए जाने वाले आंकड़ों के विषय में आंकड़ों का संग्रह करने वाले उपकरणों के विषय में पूर्ण रूप से जानकारी होनी चाहिए जो उपलब्ध हैं ताकि मूल्यांकन को जितना भी संभव हो अधिक-से-अधिक प्रभावी बनाया जा सके। संग्रह किए गए आंकड़ों को तीन प्रकार- गणनात्मक, प्रक्रिया तथा परिणाम के रूप में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। गणनात्मक आंकड़े में विविध सेवाओं के प्रावधान हेतु दी गई समय-सीमा का अभिलेखन या जिस प्रकार से

विविध गतिविधियाँ घटित होती हैं उनकी आवृत्ति का ध्यान रखना (जैसे परामर्श सत्रों की संख्या, समूह मार्गदर्शन में दिया गया समय या पैरेन्टिंग (parenting) कक्षाओं की संख्या) शामिल हैं। प्रक्रिया आंकड़े में परामर्शदाता की व्यक्तिगत विशेषताओं तथा पेशेवर कौशलों (जैसे – सम्प्रेषण कौशल, कार्य-आदतें, समय प्रबंधन तथा फॉलो-थ्रू) के विषय में सूचनाएँ शामिल होती हैं। परिणाम आँकड़े व्यावहारिक परिवर्तनों के संदर्भ में सूचना उपलब्ध कराते हैं जो परामर्शदाता के सहयोग जैसे – विद्यार्थी का विकास, तनाव प्रबंधन के बेहतर कौशलों, विद्यार्थियों के संशोधित ग्रेड, विद्यार्थियों के स्वाभिमान में वृद्धि एवं परामर्श कार्यक्रम के परिणाम के रूप में घटित होते हैं। इसी प्रकार आंकड़ों के संग्रह के लिए सारणीयन, मानक पैमाना, प्रश्नावली, समय-विश्लेषण, साक्षात्कार, व्यक्ति अध्ययन, निरीक्षण, साथियों द्वारा पुनरावलोकन, आदि जैसी अनेकों प्रकार की विधियाँ हैं। तथापि, परामर्शदाता को उपकरणों के प्रयोग में बहुत सावधानी रखनी पड़ती है क्योंकि प्राप्त की जाने वाली सूचनाओं के आधार पर इनमें से प्रत्येक का अपना स्वयं का सही प्रयोग है तथा प्रत्येक के अपने लाभ और हानि हैं।

परामर्शदाता उपर्युक्त विधियों में से किसी एक विधि का या कई विधियों के संयोजन का प्रयोग विद्यालय में किए जाने वाले कार्यक्रम एवं गतिविधियों की सफलता के मूल्यांकन के संदर्भ में कर सकता है।

....

क्रियाकलाप-3

कुछ मूल्यांकन विधियों एवं उपकरणों का प्रयोग करते हुए जिनसे आप परिचित हो चुके हैं, एक कॅरियर परामर्श कार्यक्रम के लिए एक मूल्यांकन प्रतिमान बनाइए। मूल्यांकन की विधियों एवं उपकरणों तथा उनके प्रयोग के विषय में अधिक स्पष्टीकरण के लिए आप या तो इन्टरनेट स्रोतों का प्रयोग कर सकते हैं या पुस्तकालय में जा सकते हैं।

....

सारांश

मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन बहुत आवश्यक है जो कि परामर्शदाता तथा विद्यार्थियों की सफलता के साथ आंतरिक रूप से जुड़ा हुआ है। मूल्यांकन के सिद्धान्तों के बारे में अद्यतन समझ तथा मूल्यांकन के प्रकारों के बारे में ज्ञान एक परामर्शदाता को कार्यक्रम के मूल्यांकन की रणनीतियों को प्रभावी ढंग से बनाने में समर्थ बनाएगा। मूल्यांकन को विद्यालयी मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम का दैनिक अभ्यास एवं एक आन्तरिक भाग बनाने के क्रम में एक विद्यालयी परामर्शदाता को मूल्यांकन के लिए उपलब्ध विधियों एवं उपकरणों को समझने की आवश्यकता होती है। इस इकाई में इस प्रकार की कई विधियों विशेष रूप से एक विधि जिसे मूल्यांकन की उत्तरदायित्व ब्रिज प्रतिमान के नाम से जाना जाता है, उसकी चर्चा की गई है। परामर्शदाताओं को मार्गदर्शन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अपने में सुधार तथा बेहतर योजनाओं के अन्वेषण हेतु अपने कार्य के मूल्यांकन के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। उन्हें उपयुक्त मापदण्ड को पहचानने की आवश्यकता है जो प्रेक्षणीय एवं मापनीय हों ताकि वे प्राप्त किए गए परिणाम के विषय में अधिक विश्वस्त हो सकें।

....

आत्म- मूल्यांकन अभ्यास

1. एक मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन करने का क्या उद्देश्य है ?
2. मूल्यांकन को प्रभावी बनाने के लिए किन सिद्धान्तों का पालन किया जा सकता है ?
3. तीनों प्रकार के मूल्यांकन पर संक्षिप्त में लिखिए।
4. मूल्यांकन के उत्तरदायित्व ब्रिज प्रतिमान की संक्षिप्त में व्याख्या कीजिए।
5. मूल्यांकन की कुछ उपलब्ध विधियों का उल्लेख कीजिए।

....

आत्म- मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिन्दु –

1. मूल्यांकन के निम्नलिखित उद्देश्यों को विस्तार से लिखिए –
   - निरर्थक नवीनता से बचने में उपयोगी
   - विद्यार्थियों में सुधार को मापने में उपयोगी
   - उन कारकों के विषय में जानकारी प्राप्त करने में परामर्शदाता की सहायता करता है जो विद्यार्थियों के विकास एवं परिणाम के महत्व को प्रभावित करते हैं
   - निर्णय लेने, आदि में सहायता करता है, आदि
2. निम्नलिखित सिद्धान्त प्रभावी मूल्यांकन में सहायता करते हैं -
   - उद्देश्यों की स्थापना एवं मापदण्ड का निर्धारण
   - मूल्यांकन मापदण्ड का सही प्रयोग
   - परामर्श कार्यक्रम में विभिन्न दावेदारों को शामिल करना
   - उपयुक्त उपकरणों एवं विधियों का प्रयोग
   - वैधता एवं विश्वसनीयता कायम रखना
3. तीन प्रकार के मूल्यांकन हैं– रचनात्मक, संकलनात्मक एवं उपचारात्मक। रचनात्मक मूल्यांकन वह है जो कार्यक्रम के बीच में किया जाता है और जो तात्कालिक फीडबैक प्रदान करता है। संकलनात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम के अंत में सम्पूर्ण कार्यक्रम की उपयोगिता का पता लगाने के लिए किया जाता है। उपचारात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम की किसी भी अवस्था में उस समय किया जाता है जब कार्यक्रम के क्रियान्वयन में कमी देखी जाती है। यह कार्यक्रम की प्रभावोत्पादकता में वृद्धि करता है। प्रत्येक प्रकार के मूल्यांकन के लिए उदाहरणों का भी उल्लेख करना चाहिए।

4. निम्नलिखित बिन्दुओं को एक आरेख के साथ प्रतिमान के बारे में संक्षिप्त रूप से बताते हुए लिखिए –

- मूल्यांकन के दो चक्र – कार्यक्रम मूल्यांकन चक्र एवं प्रासंगिक मूल्यांकन चक्र शामिल होते हैं, इनमें प्रत्येक में चार अवस्थाएँ होती हैं।
- कार्यक्रम मूल्यांकन चक्र की चार अवस्थाएँ हैं – योजना बनाना, क्रियान्वयन, निरीक्षण तथा परिणाम का आकलन। प्रासंगिक मूल्यांकन चक्र की चार अवस्थाएँ हैं : दावेदारों से फीडबैक, आवश्यकताओं का आकलन, रणनीतिक योजना बनाना तथा सेवाओं का उद्देश्य।
- कार्यक्रम मूल्यांकन चक्र के परिणाम को प्रासंगिक मूल्यांकन चक्र के पास सम्प्रेषित किया जाता है। विभिन्न दावेदारों के फीडबैक पर कार्यवाही की जाती है। यह विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है और कार्यक्रम मूल्यांकन चक्र पर पुन: प्रकट होता है।
- यह प्रतिमान मार्गदर्शन एवं परामर्श कार्यक्रम का प्रभावी ढंग से मूल्यांकन कर सकता है और परामर्शदाता के पेशेगत विकास एवं कार्यक्रम के सुधारीकरण में भी सहायता करता है।

6. मूल्यांकन की कुछ उपलब्ध विधियाँ हैं – सर्वेक्षण विधि, व्यक्ति अध्ययन विधि, प्रायोगिक विधि एवं अन्य विधियाँ जैसे – सारणीयन, आवश्यकताओं का आकलन, आदि।

....

आत्म- निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिन्दु –

आत्म- निरीक्षण अभ्यास – 1

1. ब 2. क 3. स 4. द 5. अ

आत्म- निरीक्षण अभ्यास – 2

1. गलत 2. सही 3. गलत 4. सही

....

संदर्भ पुस्तकें -

- Astramovich, R. L. Coker, J.K. and Hoskins W. J. 2005. Training school counselors in program evaluation. Professional School Counseling. 9(1), 49-53.
- Astramovoch, R.L., Coker, J.K and Hoskins,W.J. 2007. Program evaluation: The accountability bridge model for counselors. Journal of Counseling and Development. 85(2), 162-172.

- Fairchild, T.N and Seeley, T. J. 1995. Accountability strategies for school counselors: A baker's dozen. The School Counselor. 42 (5), 377-392.
- Glicken, M. D. 1978. Counseling effectiveness assessment: A practical solution. The School Counselor. 25, 196-198.
- Lewis, J. D. 1983. Guidance program evaluation: How to do it. The School Counselor. 31, 111-119.
- Pine, G.J. 1975. Evaluating school counseling programs: Retrospect and prospect. Measurement and Evaluation in Guidance. 8, 136-139.
- Vacc, N. A., Rhyne-Winkler, M. C. and Poidevant, J. M. 1993. Evaluation and accountability of counselling services: Possible implications for a mid size school district. The School Counselor. 40 (4), 260-266.

....

पठनीय पुस्तकें –

- Boarders, L. D. 1991. Supervision evaluation. The School Counselor. 38 (4), 253-255.
- Curcio, C.C. Mathai, C. and Roberts, J. 2003. Evaluation of a school district's secondary counseling program. Professional School Counseling. 6(3), 296-303.
- Fairchild, T. N. 1993. Accountability practice of school counselors: 1990 national survey. The School Counselor. 40 (5), 363-374.Geysbers, N. and Moore, E.J. 1981. Improving guidance programmes. Prentice-Hall, Englewood Cliffs. NJ.
- Gupta, M. 2003. Effective Guidance and Counselling: Modern Methods and Technologies. Mangal Deep Publishers. Jaipur.
- Hartman, R. A. H. 1998. A counselor role: Curriculum development and evaluation. The School Counselor. 35 (4), 377-382.
- Johnson. S. and Johnson. C. D. 2003. Results-based guidance: A systems approach to student support programs. Professional School Counseling. 6(3), pp.180-184.
- Lombana, J.H. 1985. Guidance accountability: A new look at an old problem. The School Counselor. 32, 340-346.

- Matthay, E. R. 1998. A study of school counsellor evaluation procedures. The School Counselor. 35 (4), 383-393.
- McLeod, J. 2001. Quantitative Research in Counselling and Psychotherapy. Sage Publishers. New Delhi.
- Morrel, J.1979. Follow-up Research as an Evaluation Strategy: Theory and Methodologies. in T. Abramson, C.K Title ,and L. Cohen (Eds), Handbook of Vocational Educational Evaluation (pp.217-248). Sage, Beverely Hills, CA.
- Muro, J.J. and Kottman T. 1995. Guidance and Counselling in the Elementary and Middle Schools. Brown Communication. Wn.C U.S.A.
- Myrick, R. D. 2003. Accountability: Counselors count. Professional School Counseling. 6(3), 174-179
- Olives, L.W. 1979. Outcome measurements in career counselling. Journal of Counseling Psychology. 26, 217-226.
- Schmidt, J. J. 1990. Critical issues for school counselor: Performance appraisal and supervision. The School Counselor. 38 (2), 86-94
- Schmidt. J.J. 1995. Assessing school counselling programs through external reviews, The School Counselor. 43(2), 114-123.
- Sharma T.C. 2002. Modern Methods of Guidance and Counselling. Sarup and Sons. New Delhi.
- Wiggins, J. D. and Moody, A. H. 1987. Student evaluation of counselling programs: An added dimension. The School Counselor. 34 (5), 533-361.